

॥ ॐ नमो नम ॥

* धी जिनदत्त सूरि गुरुभ्यो नम *

श्री नवपदादि तप विधि संग्रह

संपाहक—

परम पूज्य विद्वद् रत्न शांत मूर्ति आचार्य
महाराज साहेब श्री १००८ श्री जिन रत्न
सूरिभरजी महाराज साहेब

प्रकाशक—

आचार्य महाराज साहेब के सदोपदेश में श्री जैन रत्न
प्रकाश मठलै के सत्यापक साहित्य भूषण
फूलचन्दजी चौरडिया जैन "पुष्प"
रत्नलाम (मालवा)

पीर संवत्
२४७०
कार्तिक पूर्णिमा

मूल्य ०-८-०

त्रिमस स्वयत्
२००१



स्वापिता-पूज्य उपाध्यायजी महाराज श्री लब्धी
मुनिजी महाराज माह्व

“ जिन रत्न सूरि ”

सविज्ञैर्जिनदत्त शिष्टि वृषगैर्ज्ञान क्रिया सतमैः ।
षट् त्रिगुण रत्न रोहण नगैर्वान्वि मे सेवितैः ॥
स्वाप्यन्ते भवि जंतवो, विधि पथे यैः राग मोक्त्या वरः ।
स्तेमी र्थी जिन रत्न धरि गुरुवो भानत्यत्र धरीश्वराः ॥ १ ॥

श्री जैन रत्न प्रकाश मंडल कोष्ट

१ १० १९१

॥ १ १० १९१ ॥

श्री जिन रत्न सूर्याख्या-

सस्था-पिता मुपासकोः ।

जयाला दत्र श्री जैन-

रत्न प्रकाश मंडल ॥ १ ॥

उपधान प्रशस्ति (अनुष्टुपं)



वर्षा यास स्थितः पूज्यै, रत्नलाम पुरे घरे ।
उपधान क्रिया कारि, धी जिन रत्न सूरिभि ॥ १ ॥
पद्मालालजी दामोद, पत्नीकृत महोत्सवे ।
महर्षि धेनसा सवत् ग्व स्व ग्व युग्म षट्मरे ॥ २ ॥
सा समाप्तिं गता मार्ग, घण्टकादशी तिथौ ।
माला रोपण शांत्यादि, कश् छांति स्नात्रपूर्वक ॥ ३ ॥
दुर्गरसी नाथुलालो, मूरामलध प्रेम सी ।
निर्मल कुमारसिंजो, जुहारमल हरिसिं ॥ ४ ॥
फुलचन्द्रादय आददा, परोपकार कमठा ।
साहाय कारिणो ग्रामन, तेपि नन्दन्तु भूतले ॥ ५ ॥

“दोशब्द”

पाठको ।

“नव पदादि तप विधि सग्रह” की प्रथम आवृत्ति परम पूज्य शांत मूर्ति आचार्य महाराज साहेब श्री १००८ भी जिन रत्न सागरजी महागुरु साहेब के सदोपदेश से जिनदत्त सरि ज्ञान महार सुबई के मैनेजर जवेरी मूलचन्द हीराचन्द भगत ने वीर मन्वत् २४६० में प्रकाशित करवाई थी प्रथम आवृत्ति की स्टॉक में एक भी पुस्तक न रहने पर व तप आरधकों की मांग होने पर उक्त आचार्य महाराज साहेब के सदोपदेश से ही इस दूसरी आवृत्ति का प्रकाशन हुआ है ।

यद्यपि तपावली में तपस्याओं की विधि का अच्छा सग्रह है फिर भी नव पदजी के तथा वीम स्थानक जी के सबही चैत्य बटनादि उपयों नहीं हैं वे सब रत्न सागर में अवश्य हैं किंतु रत्न सागर जैसी बड़ी पुस्तक प्रत्येक गृहस्थ के यहाँ मिलना असंभव सा है अतएव पूज्य आचार्य महाराज साहेब इस छोटी पुस्तक में आवश्यक

नर पद तप वीस स्थानक तर्ग अक्षय निधि तप आदि २ तर्गों की विधि चैत्य घटनादि का पूरा २ सप्रद कर तप तप आरधकों प्रति महान् उपकार किया है । मडल ने इसका मूल्य भी लागत मात्र सिर्फ ०-८-० रखे हैं ताकि आवक से फिर भी कोई उपयोगी जैन साहित्य प्रकाशित करवाया जा सके । आशा है कि विद्वद जन इस पुस्तक का सब् उपयोग करते हुए प्रसदीय अथवा दृष्टिदोष रही हुई छुटियों को शुद्धता पूर्वक पढ़ने की कृपा करेंगे ।

भवदीय—

“ पुष्प ”

धन्यवाद !

निम्न सज्जनों ने इस हम पुस्तक के प्रकाशन में सहायता प्रदान कर अपनी लक्ष्मी का मद्दु उपयोग व ज्ञान का प्रचार किया है अतएव उनको तथा इस पुस्तक के प्रूफ आदि देखने में सहायक श्रीयुग वम्भेदमलजी साहेब नाईटी कोटा निवासी को हार्दिक धन्यवाद दिया जाता है ।

१०१) श्रीमान् मगनीरामजी अभूतसिंह जी
साहेब रतलाम

२०१) स २००६ के रतलाम में उपाध्यक्ष प्रवेशक
धनु वं बहिनो के ज्ञान स्वाते से ।

१५१) महेदपुर श्री सघकी तरफ से ।

मयदीय—

“ पुष्प ”

मुक्ति का मार्ग

स्वर्ग के मिलने का दग यह ।

और कुछ युक्ति नहीं ॥

देव गुरु की सेवा करो ।

सेवा बिना मुक्ति नहीं ॥१॥

पुस्तक प्राप्ति स्थान—

- (१) जिनदत्तसूरि ज्ञान भंडार, दु० मुंबई
- (२) श्री जैन रत्न प्रकाश मंडल,
ठि० कोटा वाला सेठ साहिब की दूकान
रतलाम (मालवा)

गुरु पोस्ट से पुस्तक मगवाने वाले सज्जन मूल्य से, छः पैसे के अधिक पोस्टेज टिकिट भेजें ।

विषय सूची

न०	विषय	पृष्ठ	न०	विषय	पृष्ठ
१	अथ अरिहतपद चैत्यवदनम्	१	२२	अथ अरिप्रपद चैत्यवदनम्	१२
२	" " स्तवनम्	२	२३	" " स्तवनम्	"
३	" " धुइ	"	२४	" " धुइ	१३
४	सिद्धपद चैत्यवदनम्	३	२५	तपपद चैत्यवदनम्	"
५	" " स्तवनम्	"	२६	" " स्तवनम्	"
६	" " धुइ	४	२७	" " धुइ	१४
७	शाचार्यपद चैत्यवदनम्	"	२८	अरिहतना १२ गुण	१५
८	" " स्तवनम्	५	२९	सिद्धना ८ गुण	"
९	" " धुइ	६	३०	शाचार्यवदना ३६ गुण	१६
१०	उपाध्यायपद चैत्यवदनम्	"	३१	उपाध्यायना २५ गुणो	१८
११	उपाध्यायपद स्तवनम्	"	३२	साधुपदना ३७ गुण	१६
१२	" " स्तुति	७	३३	दर्शनपदना ६७ गुण	२०
१३	साधुपद चैत्यवदनम्	"	३४	ज्ञानपदना ५१ गुण	२४
१४	" " स्तवनम्	८	३५	अरिप्रपदना ७० गुण	२६
१५	" " धुइ	९	३६	तपपदना १० गुण	३०
१६	दर्शनपद चैत्यवदनम्	"	३७	चैत्यवदन नवपदना	३३
१७	" " स्तवनम्	"	३८	सिद्धचक्रस्तवनम्	३४
१८	" " धुइ	१०	३९	नवपदनी धुइ	"
१९	ज्ञानपद चैत्यवदनम्	११	४०	नवपद चैत्यवदनम्	३५
२०	" " स्तवनम्	"	४१	" " स्तवनम्	३६
२१	" " धुइ	"	४२	" " धुइ	"

न०	विषय	पृष्ठ
४३	अथ नवपदश्लोकी करण विधि	३८
४४	विश्रुत्याक उपकरण विधि	४०
४५	प्रथम अविद्वानां २ भेद ४१	
४६	तीना सिद्ध पदा ३१	४२
४७	प्रीजा पद्य २७	४४
४८	स्तीया आचार्य ३६	४५
४९	पानमास्य चि १०	४७
५०	दुहा उपा ५	५
५१	स्नानमासाधु ७	४७
५२	गठमाज्ञान ५१	५०
५३	नवमा दर्शन ६०	५२
५४	दशमा विनय ५२	५६
५५	इन्दारमाचारि ७०	५९
५६	घारमा ब्रह्मचर्य १८	६३
५७	तेरमा क्रिया २५	६४
५८	चउदमा मपसी १	६५
५९	पेनरमा गौसम १	६६
६०	सोलमा जिशाण २०	६७
६१	सतरमा मजम १७	६७
६२	अठारमा ज्ञान ५१	६८
६३	योगणीसमाश्रुत २०	७१
६४	वीसमा तीथ ३८	७२
६५	वीसस्थान चैत्यवदन ७४	

न०	विषय	पृष्ठ
६६	अथ वीसस्थानक शुद्ध	७५
६७	वीसस्थानकनु स्तयन ७६	
६८	दीवालीपर्यन्त गुणणो ७८	
६९	ज्ञानपत्रमीपर्यन्त अधिकार ६६	
७०	चैत्यवदन	८०
७१	शुद्ध (यसततिलका)	८१
७२	यथा पांच नमस्कार ८२	
७३	अथथा ११ ज्ञानना नमस्कार	
७४	अथ प्र आचारागनी	
	सज्जाप ८५	
७५	वीजी सुगगडागनी	८६
७६	प्रीजी ठाणागनी	८७
७७	चौधी समधारागनी	८८
७८	(५) मगध तीमूत्रनी	८९
७९	(६) घातासूत्रनी	९०
८०	(७) उपासकदशासू	९२
८१	(८) भतगडदशांगनी	९३
८२	(९) अनुत्त १० पाह अग	९४
८३	(१०) अन्न व्याकरणाग	९५
८४	(११) विशाकसूत्रनी	९६
८५	कलश	९७
८६	अथ मौनएकादशी पर्यन्त अधिकार	९८
८७	अथ मौनएकादशीनो १५० गुण १९ से १०९ पृष्ठ तक	

न०	विषय	पृष्ठ	न०	विषय	पृष्ठ
८८	पोषणदि १० तपसु अघि	११०	११०	पचकल्याणकनु गुणणो—	
८९	अथ मेरुनेरसतपनी	"		पृष्ठ १२८ से १३५	
९०	रोहिणी तप	१११	१११	अथ मीतम पात्र तपविधि,	
९१	सोलिया (कषायनय)		११२	गचरगी तप	
	तपनी विधि	११२	११३	नचरगी तप	१३६
९२	पक्षवासो तपविधि	११३	११४	आशील घडेमान तप	"
९३	छमामी	"	११५	अथ नदीश्वर तपविधि	१३७
९४	घरपी	११४	११६	दर्शन	"
९५	२८ लक्ष्मी	११५	११७	ज्ञान	"
९६	लक्ष्मिनो गुणणो	११६	११८	चारित्र	"
९७	अथ १५ पुत्रे तपविधि	११७	११९	धर्मचक्र तप	१३८
९८	" गुणणो आदि	११८	१२०	योगशुद्धि	"
९९	तिलक तपविधि	"	१२१	यवमध्य घञ्जमध्य	
१००	४१ आगम	१२०		चाद्रायण तप	"
१०१	११ अंग गुणणो	"	१२२	तीर्थकर घर्धमान तप	१३९
१०२	वे जुटक मत्र	१२३	१०३	परम भूषण तप	१४०
१०३	११ गणधर तप	"	१०४	तीर्थकर दीक्षा तप	"
१०४	गणधर तो जाप	"	१२५	" ज्ञान	"
१०५	नयकार तपविधि	१०४	१२६	" निर्वाण	१४१
१०६	इन्द्रिय जय तप	१२१	१२७	चतुर्विध सघ	१४२
१०७	८ कर्म सुदन तप	"	१२८	तीर्थकर च्यवन	"
१०८	चन्दन गालानो अट्टम		१२९	" जम	"
	तपविधि	१७	१३०	सघरसर	१४३
१०९	अथ पचकल्याणक		१३१	पञ्चोत्तर तपश्रोली	"
	तपविधि	"	१३२	समवसरण तप	"

न०	विषय	पृष्ठ	न०	विषय	पृष्ठ
१२२	दशविषयति धम तप	१५४	१५६	नव कमल तप	१५४
१२४	पनपरमेष्ठी	"	१५७	सूरायण	" "
१२५	सवाङ्ग सुदर	१४१	१५८	९६ जिन	" "
१२६	निरूकसिंह	" "	१	अतीत घोषीसी जिन	
१२७	सौभ ग्य कल्पवृक्ष	"		गुणणी	"
१२८	आणवद पाषडी तपश्चो	१५६	२	उत्तमान घोषीसी जिन	१५६
१२९	अनु खरशि मर्वसुख		३	अनागत	" १५७
	सपत्ति तप	"	४	वीश यिरहमान	" १५८
१४०	कम चतुर्य	" "	५	४ शाश्वत	" १५९
१४१	कम चक्रवाल	१४७	१५६	१७० जिन तप	"
१४२	चत्तारि अठ दस दीय	"	१	जनुद्राप महा विदेह	
१४३	सौनम कमल	" "	३	जिन	"
१४४	सिंहासन	"	२	घान की खरु पूय महा	
१४५	१० दश पञ्चखण	१४८		विदेह ३२ जिन	१६१
१४	घडीया घे घडीया	" "	३	घात की खरु पश्चिम	
१४७	पाच घुठ	"		महा विदेह ३२ जिन	१६३
१४८	अक्षय निधि	" १४६	४	५ पुष्करार्ध पूर्व महा	
१४९	शाश्वत मेरु पर्वत	" १५१		विदेह ३२ जिन	१६५
१५०	कपली	" "	५	पुष्करार्ध पश्चिम	
१५१	शाश्वत जिन	" १५०		विदेह ३२ जिन	१६७
१५२	सिद्धि	" "	१६०	केवल हडा तप	१६०
१५३	मोक्ष करंभक	" "	१६१	अष्टकर्मोत्तर प्रवृत्ति तप	१६१
१५४	स्वर्ग	" १५३	१६२	पाच पञ्चखण	"
१५५	रत्न रोपण	"	१६३	पञ्चमहाप्रत तप	"
			१६४	सकल तीर्थ नमस्कार	१७०



ॐ ह्रीं अर्हं नमः

॥ श्रीजिनदत्तसूरिभ्यो नमः ॥

॥ श्रीनवपदादि तपविधिसंग्रह ॥

॥ अथ अरिहतपद चैत्यवदन ॥

जयजय श्रीअरिहत भानु, भविकमल विकाशी ॥

लोकालोक अरूपिरूपि, समम्न वस्तु प्रकाशी ॥१॥

समुद्घात शुभ केवले, क्षय कृन्मल राशी ॥२॥

शुक्लचरम शुचि पादसे, भयो वर आघनाशी ॥३॥

अतरत रिपु गण हणीण, हुण अप्पा अरिहत ॥

तसुपद पकजमे रहत, हीर धर्म नित सत ॥४॥

न०	विषय	पृष्ठ	न०	विषय	पृष्ठ
१३३	केशविधयति धम तप	१४४	१४६	नव कमल तप	१४६
१३४	पत्रपरमष्टी	,	१४७	सूरायण	, "
१३५	सर्वाङ्ग सुन्दर	" १४५	१५०	०६ जिन	" "
१३६	निरुक्तसिद्ध	" "	१	भतीत चोवीसी जिन	"
१३७	सौभाग्य कल्पवृक्ष	" "		गुणगो	,
१३८	अणुद पाषण्डी तपत्रो	१४६	०	घतमान चोवीसी जिन	१५६
१३९	अनु खदशि मयसुम्न सपत्ति तप	" "	३	मनागत	" १५७
१४०	कम चतुर्थ	" "	४	वीश विरहमान,	" १५८
१४१	कम चमपाल	१४७	४	४ शाश्वत	, १५९
१४२	चत्तारि अठ दसदोय,	,	१५६	१७० जिन तप	"
१४३	गौतम कमल	" "	१	जवूदाप महा विदेह	
१४४	सिद्धासन	" "	३२	जिन	"
१४५	१० दश पञ्चखण,	१४८	२	घात की खडू पूव महा	
१४६	घडीया ये घडीया	,	विदेह ३२ जिन	१६१	
१४७	पाच घठ	" "	३	घात की खडू पश्चिम	
१४८	अक्षय निधि	" १४६	महा विदेह ३२ जिन	१६३	
१४९	शाश्वत मेरु पर्वत	" १५१	४५	पुष्करार्ध पूव महा	
१५०	कचली	" "	विदेह ३२ जिन	१६४	
१५१	शाश्वत जिन	" १५२	५	पुष्करार्ध पश्चिम	
१५२	सिद्धि	" "	विदेह ३२ जिन	१६६	
१५३	मोक्ष करंभक	" "	१६०	केवल इडा तप	१६८
१५४	स्वर्ग	" १५३	१६१	अष्टकमोक्षर प्रवृत्ति तप	१६९
१५५	रत्न रोपण	" "	१६२	पांच पञ्चखण	"
			१६३	पञ्चमहायत तप	"
			१६४	सकल तीर्थ नमस्कार	१७१



ॐ हौं अई नन्द

॥ श्रीजिनेन्द्रचन्द्रगिरिन्दो नन्द ॥

॥ श्रीनवपदादि तपविधिप्रकाश ॥

॥ अथ आरिहतपद विन्दुप्रकाश ॥

जय जय श्रीअरिहत भानु, भवि बन्धु विन्दुप्रकाश ।
लोकालोक अरूपिन्पि, ममल वन्दु प्रकाश ॥ १ ॥
समुद्रघात शुभ केवले, क्षय वृत्तवन्दु राश्री ॥
शुक्लचरम शुचि पादसे, नयो वर आवनाश्री ॥ २ ॥
अतरत्त रिपु गण हणीण, हुप आपा प्रगिर्वन्दु ॥
तसुपद पकजमें रहत, हीर चर्म ॥

॥ जग अरिहत पद स्तवन ॥

श्रीतेरमेगुण यसिके फत, रुर्मकु भजे श्रीअरिहत ।
 मनमानले । अष्ट समय में समय तीन, सर्व आहारथी
 हावे हीन । मन० ॥१॥ घादर कायो मन वच भोग,
 तनु तनुसे पुन दृढ तनुयोग । मन० । सुखम कायत
 मन वच रोक, निजवीर्ये ताकु कर फोक । मन० ॥२॥
 सजीमात्र के मन व्यापार, ये इहीने वाक्य प्रकार । मन०
 आदिसमय रथो पण कसु जीय, सुखम लह्यो तिण
 जोग अतीव । मन० ॥३॥ एता योगथी समय एक,
 हीना सख गुणा करी छेक । मन० । समया सखे जोग
 निरोध, कृत्वा जो लह्यो जोगी शोध । मन० ॥४॥
 वेदसमे अनाहारतापाय, कुशल, कहे ते श्रीजिनराय
 । मन० । तेरमे गुणमे गुण समे देव, आपो सा जगकु
 नितमेव । मन० ॥ ५ ॥

॥ अथ अरिहंतपद धुड ॥

सकल द्रव्य पर्याय प्ररूपक, लोकालोक सरूपोजी ।
 केवलज्ञान की ज्योति प्रकाशक, अनन्त गुणे करी
 पुरोजी ॥ दीजे भय धानक आराधी, गोत्र तीर्थकर
 नूरोजी । पारे गुणा करी एहवा अरिहत, आराधो
 गुण भूरोजी ॥ १ ॥

॥ अथ सिद्धपद चैत्यवदन ॥

श्रीशैलेशी पूर्वप्रातः, तनु हीन निभागी । पुण्य
पुण्ययोगप्रसंगमे, ऊर्ध्वगति जागी ॥ १ ॥ ममय एक
मे लोक प्रान्त, गये निगुण नीरागी । चेतन मूपे
आतम रूप, सुदिशा लक्ष्मी सागी ॥ २ ॥ केवल
दसण नाण थीए, रूपातीत स्वभाष । सिद्ध भए
तसु हीर धर्म, घटे वरि शुभ भाष ॥ ३ ॥

॥ अथ सिद्धपद स्तवन ॥

(घारे महिला ऊपर मेढ जरीखै बीनली ॥ ए चाल)

अष्ट वरस नग मास हीना कोष्टी पूर्वमे म्दारा
लाल ही० । उत्कृष्ट करै वाम सयोगी घामने म्हा० स० ॥
अजागी के अत तजे भय भव्यता म्दारा० ॥ त० ॥
शैलेशी लक्ष्मी अष्ट दलै गुणधेणिना म्हा० ॥ द० ॥ १ ॥
हस्ताक्षर पुत्र काल म्दृते याग मे । म्हा० २० ॥
तेरम प्रकृतियो अन्त करीने अन्तमे म्हा० क० ॥
गमन करै नगरजसे । अक्रिय होयने म्हा० अ० ॥
पुत्रपयोग अमंग स्वभाव अवधे म्हा० स्व० ॥ २ ॥
ईपु गुण नवपरिमाण जोजन लक्ष्मी म्हा० जा० ॥
यनुल विशद भाषा, निराल्पन सही म्हा० नि० ॥
मध्ये जोजन अष्ट धर्म कृति अन्तमे म्हा० घ० ॥

मक्षी पक्षयी हीन भणी सिद्धान्त में म्हा० भ० ॥३॥
 तनुप-बभारा नाम शिलासें जोयनें म्हा० शि० ॥
 लघु अगुल बस्तीम प्रमाण अघगाहना म्हा० प्र० ॥
 पूद्विधनु शत पंच, गुणसे हीनता म्हा० शु० ॥
 मिलिया एकमें, नत, अयाघा नालही म्हा० अ० ॥
 अष्ट प्राण धरि रप्य मिरि हिजो सही म्हा० सि० ॥
 यीजो पद श्रीसिद्ध धरी मन गेहमें म्हा० घरो० ॥
 कुशल भये जग जीव मिलेगा तेहमे म्हा० मि० ॥५॥

॥ अर्थ सिद्धपदनी शुद्ध ॥

अष्ट करमकु दमन करुनें, गमन, कियो, शिव
 न, वाशीजी । अघ्याघाघ, सादि अनादि, चिदानन्द
 चिदराशीजी । परमात्म पद, पूरण विलाशी, अघ
 पनु दाघ, विनाशीजी । अनत-चतुष्टय-शिवपद
 घ्यायो, केवल ज्ञानी भाषीजी इति ॥ २ ॥

॥ अर्थ आचार्य पद चैत्यवदनम् ॥

॥ ० ॥ जिनपदकुल सुखारस अनिल । मितरसुगुण
 त्तारीमयल सयल घन मोहकी । जिणने चमु हारी ॥१॥
 रुज्यादिक जितराजगीते । नय तन विस्तारी । म्हा

कूपै पापे पडत । जगजन निस्तारी ॥ २ ॥ पचाचारी
जीवके । आचारज पदसार । तिनकु बदे हीर-धर्म
अठोत्तरसोवार ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ आचार्यपदस्तवन ॥

(नणदल वीदलीले ए चाल)

खती खद्गधी जेणें । हृण्यो क्रोध सुभटमम
देणें हो । गणपति गुण पेखी । मन महागिरि वयरे ।
अति सोमन मह्य वयरे हो । ग० । द्भरूप विप-
वेली । चर धज्जव कीले ठेली हो ॥ ग० ॥ मूर्च्छा
विलथी भरीयो । लोह सागर मुत्तंतरियो हो ॥ ग० ॥
॥ २ ॥ मदननाग सद हीनो । जिणदेम शम जंघे
कीनो हो ॥ ग० ॥ मोहमहामह्य-तोडियो । पुण्य
घैराग मुगरे पाळ्यो हो ॥ ग० ॥ ३ ॥ दोषगंध
घस कीनो । घरी उपमश अकुश हीनो हो ॥ ग० ॥
अतरगरिपु श्रेया । सुरवर पिणजिण निपेय्या हो ।
॥ ग० ॥ ४ ॥ रस कृती गुणधी हीनो । सूत्र
अर्थ ध्यागुन पीनो हो ॥ ग० ॥ आचारिज
पद एहवा । घरी जीवकुशला सेवो हो ।
॥ ग० ॥ ५ ॥ इति ॥ ३७ ।

॥ अथ आचार्यपदनी शुद्धि ॥

पचाचारकृ पाते उज्जालै, दोष रहित गुणधारीजी ।
गुण छतीमे आगमधारी, हाठश'अंग विचारिजी ।
प्रबल समल घन मोह हरणकृ । अनिल समो गुण
धाणीजी । क्षमा सहित जे समय पालै आचारज
गुण धारीजी ॥ इति ॥ ३ ॥

॥ अथ उज्ज्वलयपद चैत्यवदनम् ॥

घन घन श्री उज्ज्वलय राय । शठता घन भञ्जन ॥
जिनयर दर्शित द्वादशांग । धरकृमजनमजन ॥ १ ॥
गुणगण भजण मण गयर । सुयशुणि क्षिप गजण ॥
कृतप लोय लोयणें । जत्थए सुय मजण ॥ ३ ॥
महा प्राणमे जिन लक्षो ७ । आगमसे पद तुर्य ।
तिनपें अट्टिनिश हीर धर्म । धरं पाठकवर्य । ३ ।
इति ॥ ४ ॥

॥ अथ उपाध्याय पद स्तवन ॥

(सांवन्धिया चलना रहोती ए चोळ)

हुयनें ३ दूरी हुयनें । चेतन भापे द्राठनें दूरी
होयनें/तु मुझ पास फ्यु आये दू० तुझनें कृण
पतलावे दू० ॥ आकणी ॥ तो समै निज पचेद्रीनो ।
रचना चरम मुझाणो । नाणा घरणी राय उपदा-

मसं । भावेद्री मंडाणो दू० ॥ १ ॥ द्रव्ये ते पर-
जाप्तं कीना । जातिर्नाम व्यपदेश । एव तो गो
तुरग गजादिक । किण कर्म उपदेश दू० ॥ २ ॥
इत्यादिक बहु मुझकु शका । तेरे सगु लागी ।
नीलवर्ण की शमतासेती । मँ मयो तोसुरागी दू०
। ३ ॥ उप कहिये हणीयो भवियानो । अधिया लाभत
आय । आधीनांमन पीडानामें, मायोयेन विलाए दू॥४
आधिक्यै स्मरायै वर आगम । सूत्रसेते उवजाय तत्से-
वा ते हणि सठताकुं । चितन कुशलता थाय दू० इति ॥५॥

॥ अथ उपाध्याय पद स्तुति ॥

अग इग्यारै चउद्वै पूरव, गुण पचवीसना घौरीजी ।
सूत्र अरथघर पाठक कहिये, जांग ममाधि विचारीजी
तपगुणसूरा आगम पूरा, नयनिक्षेपे तारीजी । मुनि
गुणघारी बुधविस्तारी, पाठक पूजो अविकारीजी
इति ॥ ४ ॥

॥ अथ साधुपद चैत्यवदनाम् ॥

दशण नाण चरित्त करी । वरशीवपद गामी ॥ घर्म
शुक्ल शुचि चक्रसे । आदि मखिय कामी ॥ १ ॥
गुण पमत्त लपमत्तते । भये अतर जामी ।

इदिय दसनभूत । शमदम अभिरामी ॥ २ ॥
 पाकृति घन गुणगण भयों ए । पचमपद मुनिराज
 तत्पद परुज नमत है ॥ हीरु धर्म के काज ॥ ३ ॥

॥ अथ साधुपद स्तवन ॥

(माखन माखन मति कदो ए-चाक)

निकपाया जग जनक है । धारे चउगति वसनसे
 रोप हो मुनिदजी । रागहीन भय तु करै । माहिया
 शिव रमणी से हेतरो मुनिदजी ॥ १ ॥ सर्व प्रमाद
 तजी रहै सा० छठे पूरव कोड हो ॥ मु० घात
 सोगम आगम करै सा० लघु काले गुण आदि हो ॥
 मु० ॥ २ ॥ सत्यानर्द्धि निद्राउटे सा० यामें कर्म
 निकन्द हो मु० प्रचला निद्रामें रही सा० । धारम
 गुणनो वासहो मु० ॥ ३ ॥ स्थितिरस घात प्रमुख
 करै सा० जो गुण संरपातीत हो मु० तोपिण
 तिण जग में लही सा० । त्रिक घन गुणनीरुपात
 हो मु० तो पिण तिण जगमें लही सा० त्रिक घन
 गुणनीरुपात हो मु० ॥ ४ ॥ रयण अयसे शिवपथे
 सा० साधन परवर जीव हो मु० साधु इवइ तसु
 धर्ममें सा० कुशल भवतु जगतीव हो मु० ॥ ५ ॥ इति

॥ अथ साधुपद थुई ॥

सुमति गुंपति कर मजम पालै, दोप बयालीश टालैजी ।
पद् काया गोकुल रखवालै, नव विध ब्रह्मव्रतपालैजी ।
पचमहाव्रत सुधापालै, धर्म शुक्ल उज्वालैजी ॥
क्षपक श्रेणि करि कर्म खपावै, दमपद गुण
उपजावैजी ॥ इति ॥ ५ ॥

॥ अथ दर्शनपद चैत्यवदनम् ॥

हुए पुगल परियट्ट । अड्ड परमित ससार ॥ गठि
भेठ तव करि लहै । मय गुण आधार ॥ १ ॥ क्षापक
वेदक शशि असख । उचशमपण वार । चिना जेण
चाग्नि नाण नही हुवै शिवदातार ॥ २ ॥ श्रीदेव
गुरुधर्मनीए । रुचि लच्छन अभिराम । दरशनकु
गणि हीर धर्म । अरनिश करत प्रणाम ॥ ३ ॥ इति

॥ अथ दर्शनपद स्तवन ॥

॥ रामचन्द्रके बाग भावो मोहरहोयी ॥ ए बाळ ॥

देव श्रीजिताराज । गुरुने सोधु भण्योरी । धर्म
जिनेश्वर प्रोक्त । लक्षण बोधि तणोरी ॥ १ ॥ बोधि
लाभके काज । सप्तम नरक भलोरी । तेण विना
सुरलोक । तातें अधिक बुरोरी ॥ २ ॥ मिथ्या

तापे तप्त । घोष ही छाँह छहेरी । उपशम क्षायक
 वेद । ईश्वर तीन कह्योरी ॥ ३ ॥ भवसागर हे
 अपार । कुण अस्ताघ कह्योरी । जसुलामै ते होय ।
 २ गोसप मात्र खरोरी ॥ ४ ॥ यद्-भावे अप्रमाण ।
 नाण चारित्त भलोरी । घोष धर्ममें जीव । लाभै
 कुशल कलोरी ॥ ५ ॥ इति

॥ अथ दर्शनपद थुइ ॥

जिन पन्नत्त तस्व सुधा सरधै, समर्कित गुण
 उजवालैजी । भेद छेद करी आतम निरखी, पशु
 टाली सुरपावैजी । प्रत्याख्यानै समतुल्य भाइयो,
 गणधर अरिहतशूराजी । ए दर्शनपद नित नित
 बढो, भवसागरको तीराजी ॥ इति

॥ अथ ज्ञानपद चैत्यवदनम् ॥

क्षिप्रादिक रस राम विन्ह । मित आदम नाण
 भाव मिलापसैं जिन जनित । सुय वीश प्रमाण १
 भवगुण पज्जवओहि दोय । मण लोचन नाण ।
 लोका-लोक सरूप जाण । इक केवल भाण ॥ २ ॥
 नाणा-वरणीनासधीए । चैतन नाण प्रकाश । सप्तम
 पदमे हीर धर्म । नित चाहत अक्काश ॥ ३ ॥ इति

प्राप्त घन प्रकारता । सप्त, प्राभृतका तेन सु० ॥४॥
 तद्रोधनरूपी भलो । चेतन सयम धाम (सु०)
 कर घनमिलपद धर्मसु । कुशल भवतु अभिराम
 (सु०) ॥ ५ ॥ इति

॥ अथ चरित्रपद थुई ॥

करमअपचय दूर खपावै, आत्म घ्यान
 लगावैजी । पारै भावना सूधी भावै, मागर पार
 उतारेजी । पट्टखड राजकु दूर तजीनें, चक्री मजन
 घारेजी, एह्यो चारित्रपद नित नित यदो आत्म गुण
 हितकरैजी ॥ इति

॥ अथ तपपद चैत्यपदनम् ॥

श्री ऋषभादिरु तीर्थनाथ । तद्भवजिय जाण ।
 विहि अतैरपि बाह्य । मध्य दूदण परिणाम ॥ १ ॥
 वसु कर्मित आमोसही । आदिकलविधि निदान
 भेदै समतासुनखिणें । इग्धन कर्म विमान ॥ २ ॥
 नयमो श्रीतपपद भलोण । इच्छा रोध सरूप ।
 नित शिर धर्म । दूर भवतु भवकृप
 ॥ इति

॥ अथ तपपद स्तवन ॥

भेद भण्यां जिनराजै । बाह्य मध्य

अथ विश्वारोही । अथधि मन-पर्यय केवल यत्ति
प्रत्यक्षरूप अधारोही । ए पांच ज्ञानकु बद्धो पूर्जा,
भविजननें सुग्रकारोही ॥ इति

अथ चरित्रपद चैत्यवदनम् ॥

जस्त पसायें माहु पाय । जुग जुग समितेंद ।
नमन करै सुभ भावलाय । कुण नरपति वृन्द ॥१॥
जपै धुरि अरिहतराय । करि कर्म निकन्द । सुमति
पच तीन गुणियुतांदै सुख्य धमद ॥ २ ॥ इयु कृति
मान कयापधीण । रहित देश सुखिवन्त ॥ जीव
धारितकु धीर-धर्म । नमन करत नित मत ३ इति

॥ अथ चारित्रपद स्तवन ॥

निर्विकल्प अजनिर्गुणी । चिराभाम निश्मग ।
(सुग्यानी सांभलो) मृतिहीन चनेन करै । रूपी
पुद्गल रङ्ग (सुग्यानी सा०) ॥ १ ॥ स्पर्द्धक कारण
वर्गणा । कार्ये कारण भाव सु० कृत्या जोग सुधा-
मता । लब्धा सख स्वभाव ॥ सु० ॥ २ ॥ पर्पाहा
ल्यु जोग में । वृद्धिल्लै जुगमान (सु०) मध्ये
वसुसमयें लहै । अते द्वौते जाण [सु०] ॥ ३ ॥
सहकारी मानस मुखी । कारण रम्य पलेण सु०

प्राप्त घन प्रकारता । सप्त, प्राभृतका तेन सु० ॥४॥
 तद्रोधनरूपी भलो । चेतन सपम धाम (सु०)
 कर घनमिलपद धर्मसु । कुशल भवतु अभिराम
 (सु०) ॥ ५ ॥ इति

॥ अथ चरित्रपद शुई ॥

करमअपचय दूर खपावै, आत्म ध्यान
 लगावैजी । पारे भावना सूर्यी भावै, सागर पार
 उतारेजी । पट्टरुड राजकुं दूर तजीनें, घक्री मज
 घारेजी । एवो चारित्र्यपद नित नित धरो आत्म गुण
 हितकारैजी ॥ इति

॥ अथ नपपद चैत्यउदनम् ॥

श्री ऋषभादिक तीर्नाथ । तद्भवशिय जाण ।
 विहि अतैरपि बाह्य । मध्य द्वदश परिणाम ॥ १ ॥
 वर्तुं कर्मित आमोसही । आदिकः लब्धि निदान
 वेदै समतासुनाखिणों । इग्घन कर्म विमान ॥ २ ॥
 नयमो श्रीतपपद भलोए । इच्छा रोध सरूप ।
 घठनसैं नित रि धर्म । दूर भवतु भवकूप
 ॥ ३ ॥ इति

॥ अथ तपपद स्तवन ॥

धारम भेट भण्यां जिनराजै । बाह्य मध्य

तपण जगजाजेरे (शिषपदत्रेणी) | तिण अथ
 सिद्धितणा वर ग्याता । जिनवर पिण तपना
 वस्तारे ॥१॥ [शि०] समता सहिते जिनते भारी ।
 भली कर्म यमुपिण हारी रे (शि०) जीव कनकसें
 कर्म वधोरा । दटै तप पायनका जोरारे (शि०) ॥२॥
 तप तखरना कुसुम है श्रद्धि । देय नरनाफलने
 सिद्धीरे (शि०) पाप सकलहें तमनी राशी । तप,
 भानूसें जाये नाशीरे (शि०) ॥३॥ जस्ता'पसाये
 लाहिये वारू । लब्धी सगली जगदित कारूरे (शि०)
 अति दुष्कर फण साध्यतोहीना । कामतातें वारू
 कीनारे (शि०) ॥ ४ ॥ इच्छारोघनरूपी कहिये ।
 तपपद से कृपा से । नयपद चेतन वहीयेरे, पाठक
 हीर धर्म कुशलकु भासेरे (शि०) ॥ ५ ॥

॥ अथ तपपद थुई ॥

इच्छारोघन तपतें भाख्यो, आगम तेहनो सा-
 खीजी । द्रव्य भावसें द्वादशां दाखी, जोग समाधि
 राखीजी । चेतन निजगुण परणित पेखे, तेहीज तप
 गुण दाखीजी । लब्धि सकलनो कारण देखी,
 ईश्वरसें सुखभाषीषी ॥ इति

॥ अथ अरिहता १२ गुण ॥

- १ अशोक वृक्ष प्रातिहार्य सयुताय श्रीअरिहताय नमः
- २ पुष्पवृष्टि प्रातिहार्य सयुताय श्रीअरिहताय नमः
- ३ दिव्यध्वनि प्रातिहार्य सयुताय श्रीअरिहताय नमः
- ४ चामर युग प्रातिहार्य सयुताय श्रीअरिहताय नमः
- ५ स्वर्णसिंहासन प्रातिहार्य सयुताय श्रीअरिहताय नमः
- ६ भाम्मदल प्रातिहार्य सयुताय श्रीअरिहताय नमः
- ७ दुन्दुभि प्रातिहार्य सयुताय श्रीअरिहताय नमः
- ८ छत्रत्रय प्रातिहार्य सयुताय श्रीअरिहताय नमः
- ९ ज्ञानातिशय सयुताय श्रीअरिहताय नमः
- १० पूजातिशय सयुताय श्रीअरिहताय नमः
- ११ वचनातिशय सयुताय श्रीअरिहताय नमः
- १२ अपायपगमातिशय सयुताय श्रीअरिहताय नमः

॥ अथ सिद्धना ८ गुण ॥

- १ अनन्त ज्ञान सयुताय श्रीसिद्धाय नमः
- २ अनन्त दर्शन सयुताय श्रीसिद्धाय नमः
- ३ अव्याघाघ गुण सयुताय श्रीसिद्धाय नमः
- ४ अनन्तचारित्र गुण सयुताय श्रीसिद्धाय नमः
- ५ अक्षयस्थिति गुण सयुताय श्रीसिद्धाय नमः

- ६ अरुधीनिरजन गुण सयुताय श्रीसिद्धाय नमः
७ अगुरु लघु गुणो सयुताय श्रीसिद्धाय नमः
८ अनन्नर्षाय गुण सयुताय श्रीसिद्धाय नमः

॥ अथ आचार्यवर्दना ३६ गुण ॥

- १ प्रतिरूप गुण सयुताय श्रीआचार्याय नमः
२ भूर्पयत्तेजस्वि गुण सयुताय श्रीआचार्याय नमः
३ युगप्रधानागम सयुताय श्रीआचार्याय नमः
४ मधुरवाक्य गुण सयुताय श्रीआचार्याय नमः
५ गाभीर्य गुण सयुताय श्रीआचार्याय नमः
६ धैर्य गुण सयुताय श्रीआचार्याय नमः
७ उपदेश गुण सयुताय श्रीआचार्याय नमः
८ अपरि-त्राची गुण सयुताय श्रीआचार्याय नमः
९ सौम्य प्रकृति गुण सयुताय श्रीआचार्याय नमः
१० जलितगुण सयुताय श्रीआचार्याय नमः
११ अविग्रह गुण सयुताय श्रीआचार्याय नमः
१२ अविक्थरु गुण सयुताय श्रीआचार्याय नमः
१३ अचल गुण सयुताय श्रीआचार्याय नमः
१४ प्रसन्न चदन गुण सयुताय श्रीआचार्याय नमः
१५ क्षमा गुण सयुताय श्रीआचार्याय नमः
१६ शत्रु गुण सयुताय श्रीआचार्याय नमः

- १७ मृदु गुण सयुताय श्रीआचार्याय नमः
 १८ सर्व्वसग मुक्ति गुण सयुताय श्रीआचार्याय नमः
 १९ द्वादश विघर्तप गुण सयुताय श्रीआचार्याय नमः
 २० सप्तदशविध सयम गुण सयुताय श्रीआचार्याय नम
 २१ सत्यव्रत गुणसयुताय श्रीआचार्याय नम.
 २२ शौच गुणसयुताय श्रीआचार्याय नमः
 २३ अर्किचन गुणसयुताय श्रीआचार्याय नम.
 २४ ब्रह्मचर्य गुणसयुताय श्रीआचार्याय नमः
 २५ अनित्यभावनाभावकाय श्रीआचार्याय नमः
 २६ अशरणभावनाभावकाय श्रीआचार्याय नमः
 २७ ससारस्वरूपभावनाभावकाय श्रीआचार्याय नम
 २८ एकत्वस्वरूपभावनाभावकाय श्रीआचार्याय नमः
 २९ अन्यत्यभावनाभावकाय श्रीआचार्याय नमः
 ३० अशुचिभावनाभावकाय श्रीआचार्याय नमः
 ३१ आश्रयभावनाभावकाय श्रीआचार्याय नम
 ३२ सबरभावनाभावकाय श्रीआचार्याय नम
 ३३ निर्जराभावनाभावकाय श्रीआचार्याय नम
 ३४ लोकस्वरूपभावनाभावकाय श्रीआचार्याय नमः
 ३५ षोधिदुर्लभभावनाभावकाय श्रीआचार्याय नमः
 ३६ धर्मदुर्लभभावनाभावकाय श्रीआचार्याय नमः

॥ अथ उपाध्यायना २५ गुणो ॥

- १ आचारागसूत्र पाठनगुणसमुताय श्रीउपाध्याय नमः
- २ सुयगडागसूत्र पाठनगुणसमुताय श्रीउपाध्याय नमः
- ३ श्रीठाणागसूत्र पाठनगुणसमुताय श्रीउपाध्याय नमः
- ४ श्रीसमसाधगसूत्र पाठनगुणसमुताय श्रीउपा० नमः
- ५ श्रीसगतीसूत्र पाठनगुणसमुताय श्रीउपा० नमः
- ६ श्रीज्ञातासूत्र पाठनगुणसमुताय श्रीउपा० नमः
- ७ श्रीउपाशरुदशाङ्गसूत्र पाठनगुणसमु० श्रीउपा० नमः
- ८ श्रीअतगद्वशागसूत्र पाठनगुणसमु० श्रीउपा० नमः
- ९ श्रीअणुसरोचनसूत्र पाठनगुणसमुताय श्रीउ० नमः
- १० श्रीप्रश्नकारणसूत्र पाठनगुण समुताय श्रीउ० नमः
- ११ श्रीविपाकसूत्र पाठनगुणसमुताय श्रीउपा० नमः ।
- १२ श्रीउत्पाठपूर्व पाठनगुण समुताय श्रीउपा० नमः
- १३ श्रीआश्रायणीपूर्व पाठनगुण समुताय श्रीउपा० नमः
- १४ श्रीवीर्यप्रवादपूर्व पाठनगुण समुताय श्रीउपा० नमः
- १५ आस्तिप्रवादपूर्व पाठनगुण समुताय श्रीउपा० नमः
- १६ ज्ञानप्रवादपूर्व पाठनगुण समुताय श्रीउपा० नमः
- १७ सत्यप्रवादपूर्व पाठनगुण समुताय श्रीउपा० नमः
- १८ आत्मप्रवादपूर्व पाठनगुण समुताय श्रीउपा० नमः
- १९ कर्मप्रवादपूर्व पाठनगुण समुताय श्रीउपा० नमः

- २० प्रत्योरुघानप्रवादपूर्व पाठनगुण सयुताय श्रीउपा० नमः
 २१ विद्याप्रवादपूर्व पाठनगुण सयुताय श्रीउपा० नमः
 २२ अविध्यप्रवादपूर्व पाठनगुण सयुताय श्रीउपा० नमः
 २३ प्राणाघानप्रवादपूर्व पाठनगुणसयुताय श्रीउ० नमः
 २४ श्रितागिनात्पूर्व पाठनगुण सयुताय श्रीउपा० नमः
 २५ लोकाविन्दुसारपूर्व पाठनगुण सयुताय श्रीउपा० नमः

॥ अथ साधुपदना २७ गुण ॥

- १ प्राणातिपातविरमणत्रतसयुताय श्रीसाधये नमः
 २ सृपावादाविरमणत्रत सयुताय श्रीसाधये नमः
 ३ अटस्तादानविरमणत्रतसयुताय श्रीसाधये नमः
 ४ मैथुताविरमणत्रतसयुताय श्रीसाधये नमः
 ५ परिग्रहविरमणत्रतसयुताय श्रीसाधये नमः
 ६ रात्रिभोजनविरमणत्रतसयुताय श्रीसाधये नमः
 ७ पृथ्वीकायरक्षकाय श्रीसाधये नमः
 ८ अप्पायरक्षकाय श्रीसाधये नमः
 ९ तेजकायरक्षकाय श्रीसाधये नमः
 १० वाऊकायरक्षकाय श्रीसाधये नमः
 ११ वनस्पतिकायरक्षकाय श्रीसाधये नमः
 १२ असकायरक्षकाय श्रीसाधये नमः
 १३ एकैत्रियजीवरक्षकाय श्रीसाधये नमः

- १४ वेदद्रियजीवरक्षकाय श्रीसाधवे नमः
 १५ वेदद्रियजीवरक्षकाय श्रीसाधवे नमः
 १६ चौरिन्द्रियजीवरक्षकाय श्रीसाधवे नमः
 १७ पचेन्द्रियजीवरक्षकाय श्रीसाधवे नमः
 १८ लोभविग्रहकारकाय श्रीसाधवे नमः
 १९ क्षमागुणयुक्ताय श्रीसाधवे नमः
 २० शुभभावनाभावकाय श्रीसाधवे नमः
 २१ प्रतिलेखनादिक्रियाशुद्धकारकाय श्रीसाधवे नमः
 २२ समययोगसयुक्ताय श्रीसाधवे नमः
 २३ मनोगुप्तिसयुक्ताय श्रीसाधवे नमः
 २४ वचनगुप्तिसयुक्ताय श्रीसाधवे नमः
 २५ कायगुप्तिसयुक्ताय श्रीसाधवे नमः
 २६ शीताश्विद्वारविंशतिपरीशहसहस्रणतत्पराय श्रीसाधवे नमः
 २७ मरणांत उपसर्ग सहन तत्पराय श्रीसाधवे नमः

॥ अथ दर्शनपदना ६७ गुण ॥

- १ परमार्थ सस्तवरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः
 २ परमार्थज्ञातृसेवनरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः
 ३ घ्णापन्नदर्शन घजनरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः
 ४ कुदर्शन घर्जनरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः
 ५ शुद्धपारूप श्रीसद्दर्शनाय नमः

- ६ घर्मरागरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः
 ७ वैपाद्युत्यरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः
 ८ अर्हाद्विनयरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः
 ९ सिद्धविनयरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः
 १० चैत्यविनयरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः
 ११ श्रुतविनयरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः
 १२ घर्मविनयरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः
 १३ साधुधर्मविनयरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः
 १४ आचार्यविनयरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः
 १५ उपाध्यायविनयरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः
 १६ प्रवचनविनयरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः
 १७ दर्शनविनयरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः
 १८ संसारेजिनसारमिति चिंतनरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः
 १९ संसारेजिनमतसारमितिचिंतनरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः
 २० संसारेजिनमतस्थित माध्वादिसारमिति चिंतन-
 रूप श्रीसद्दर्शनाय नमः
 २१ शकादूषणरहिताय श्रीसद्दर्शनाय नमः
 २२ कांक्षादूषणरहिताय श्रीसद्दर्शनाय नमः
 २३ विचिकित्सारूप दूषणरहिताय श्रीसद्दर्शनाय नमः
 २४ कुदृष्टिप्रशसा दूषणरहिताय श्रीसद्दर्शनाय नमः
 २५ कुदृष्टिपरिषयो दूषणरहिताय श्रीसद्दर्शनाय नमः

- २६ शत्रुचनप्रभावरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः
 २७ गर्भकथाप्रभावकरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः
 २८ घाटिप्रभावकरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः
 २९ नैमित्तकप्रभावकरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः
 ३० तपास्त्रिप्रभावकरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः
 ३१ प्रज्ञाघाटिविद्याभृत्प्रभावकरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः
 ३२ चूर्णाजनादिसिद्धप्रभावकरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः
 ३३ कविप्रभावकरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः
 ३४ जिनशासने कौशलभूषणरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः
 ३५ प्रभावनाभूषणरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः
 ३६ तीर्थसेवाभूषणरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः
 ३७ धैर्यभूषणरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः
 ३८ जिनशासने भक्तिभूषणरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः
 ३९ उपशमगुणरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः
 ४० सवेगगुणरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः
 ४१ निर्वेदगुणरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः
 ४२ अनुकपागुणरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः
 ४३ ध्यास्तिक्यगुणरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः
 ४४ परतीर्थकादिवेदनवर्जनरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः
 ४५ परतीर्थकादिनमस्कारवर्जनरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः
 श्रीसद्दर्शनाय नमः

- ४७ परतीर्थकादिमलापन्नर्जनरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः -
४८ परतीर्थकादिअमनादिदानवर्जनरूप श्रीस० नमः
४९ परतीर्थकादिगघपुष्पादिप्रेषणवर्जनरूप श्रीस० नमः
५० राजाभियोगाकारयुक्त श्रीसद्दर्शनाय नमः
५१ गणाभियोगाकारयुक्त श्रीसद्दर्शनाय नमः
५२ बलाभियोगाकारयुक्त श्रीसद्दर्शनाय नमः
५३ सुराभियोगाकारयुक्त श्रीसद्दर्शनाय नमः
५४ कानारवृक्ष्याकारयुक्त श्रीसद्दर्शनाय नमः
५५ गुरुनिग्रहाकारयुक्ताय श्रीसद्दर्शनाय नमः
५६ सम्यक्त्व चारित्र्य धर्मस्यमूलमिति चिंतन
श्रीसद्दर्शनाय नमः
५७ सम्यक्त्व चारित्र्यधर्मपुरस्यद्वारामिति चिंतन
श्रीसद्दर्शनाय नमः
५८ सम्यक्त्व चारित्र्य धर्मस्य प्रतिष्ठानमिति चिंतन
श्रीसद्दर्शनाय नमः
५९ सम्यक्त्वचारित्र्यधर्मस्याधारमिति चिंतन श्रीस० नमः
६० सम्यक्त्वचारित्र्यधर्मस्य भाजनमिति चिंतन श्रीस० नमः
६१ सम्यक्त्व चारित्र्य धर्मस्य निधि संनिध मिति
चिंतन श्रीसद्दर्शनाय नमः
६२ अस्ति जीवेति अदानस्थानयुक्ताय श्रीसद्दर्शनाय नमः
६३ सख जीवो नित्येति अदानस्थानयुक्ताय श्रीस० नमः

- ६४ सचजीवः कर्माणि करोतीति श्रद्धानस्थान
युक्ताय श्रीसद्दर्शनाय नमः
- ६५ सचजीवः कृतकर्माणि वेदयतीति श्रद्धानस्थान
युक्ताय श्रीसद्दर्शनाय नमः
- ६६ जीवस्यास्ति निर्वाणमिति श्रद्धानस्थान युक्ताय
श्रीसद्दर्शनाय नमः
- ६७ अस्ति पूनर्मोक्षोपायेति श्रद्धानस्थान युक्ताय
श्रीसद्दर्शनाय नमः

॥ अथ ज्ञानपदना ५१ गुण ॥

- १ स्पर्शनेन्द्रिय व्यजनावग्रहाय श्रीमति ज्ञानाय नमः
- २ रसनेन्द्रिय व्यजनावग्रहाय श्रीमति ज्ञानाय नमः
- ३ घ्राणेन्द्रिय व्यजनावग्रहाय श्रीमति ज्ञानाय नमः
- ४ श्रोत्रेन्द्रिय व्यजनावग्रहाय श्रीमति ज्ञानाय नमः
- ५ स्पर्शेन्द्रिय अर्थावग्रहाय श्रीमति ज्ञानाय नमः
- ६ रसेन्द्रिय अर्थावग्रहाय श्रीमति ज्ञानाय नमः
- ७ घ्राणेन्द्रिय अर्थावग्रहाय श्रीमति ज्ञानाय नमः
- ८ चक्षुरिन्द्रिय अर्थावग्रहाय श्रीमति ज्ञानाय नमः
- ९ श्रोत्रेन्द्रिय अर्थावग्रहाय श्रीमति ज्ञानाय नमः
- १० मनोअर्थावग्रहाय श्रीमति ज्ञानाय नमः
- ११ स्पर्शेन्द्रिय ईहा श्रीमति - ज्ञानाय नमः
- रसेन्द्रिय ईहा श्रीमति - ज्ञानाय नमः

१३ घ्राणेंद्रिय	ईहा	श्रीमति	- ज्ञानाय	नमः
१४ चक्षुरिन्द्रिय	ईहा	श्रीमति	ज्ञानाय	नमः
१५ श्रोत्रेंद्रिय	ईहा	श्रीमति	ज्ञानाय	नमः
१६ मन	ईहा	श्रीमति	ज्ञानाय	नमः
१७ स्पर्शेंद्रिय	अपाय	श्रीमति	ज्ञानाय	नमः
१८ रसेन्द्रिय	अपाय	श्रीमति	ज्ञानाय	नमः
१९ घ्राणेंद्रिय	अपाय	श्रीमति	ज्ञानाय	नमः
२० चक्षुरिन्द्रिय	अपाय	श्रीमति	ज्ञानाय	नमः
२१ श्रोत्रेंद्रिय	अपाय	श्रीमति	ज्ञानाय	नमः
२२ मनो	अपाय	श्रीमति	ज्ञानाय	नमः
२३ स्पर्शेंद्रियधारणा		श्रीमति	ज्ञानाय	नमः
२४ रसेन्द्रियधारणा		श्रीमति	ज्ञानाय	नमः
२५ घ्राणेंद्रियधारणा		श्रीमति	ज्ञानाय	नमः
२६ चक्षुरिन्द्रियधारणा		श्रीमति	- ज्ञानाय	नमः
२७ श्रोत्रेंद्रियधारणा		श्रीमति	- ज्ञानाय	नमः
२८ मनोधारणा		श्रीमति	- ज्ञानाय	नमः
२९ श्रीअक्षर		श्रुतज्ञानाय		नमः
३० श्रीअनक्षर		श्रुतज्ञानाय		नमः
३१ श्रीसजी		श्रुतज्ञानाय		नमः
३२ श्रीअसजी		श्रुतज्ञानाय		नमः
३३ श्रीसम्पर्क		श्रुतज्ञानाय		नमः

३४ भीमिध्या	श्रुतज्ञानाय	नम
३५ श्रीसादि	श्रुतज्ञानाय	नम
३६ श्रीअनादि	श्रुतज्ञानाय	नमः
३७ श्रीसपर्यवसित	श्रुतज्ञानाय	नमः
३८ श्रीअपर्यवसित	श्रुतज्ञानाय	नम
३९ श्रीगमिक	श्रुतज्ञानाय	नम
४० श्रीअगमिक	श्रुतज्ञानाय	नम
४१ श्रीअगप्रविष्ट	श्रुतज्ञानाय	नम
४२ श्रीअनगप्रविष्ट	श्रुतज्ञानाय	नम
४३ श्रीअनुगामि	अवधिज्ञानाय	नमः
४४ श्रीअननुगामि	अवधिज्ञानाय	नम
४५ श्रीवर्द्धमान	अवधिज्ञानाय	नमः
४६ श्रीहीयमान	अवधिज्ञानाय	नम
४७ श्रीप्रतिपाति	अवधिज्ञानाय	नमः
४८ श्रीअप्रतिपाती	अवधिज्ञानाय	नमः
४९ श्रीअज्ञमति	अनपर्यवज्ञानाय	नम
५० श्रीविपुलमतिमन	अपर्यवज्ञानाय	नमः
५१ लोकालोकप्रकाशक	श्रीकेवलज्ञानाय	नम
॥ अथ चारित्र्यपदना ७० गुण ॥		
१ प्राणातिपातविरमणरूप	श्रीचारित्र्याय	नम
२ मृपावादविरमणरूप	श्रीचारित्र्याय	नमः

३ अदत्तादानविरमणरूप	श्रीचारित्राय	नमः
४ मैथुनविरमणरूप	श्रीचारित्राय	नमः
५ परिग्रहाविरमणरूप	श्रीचारित्राय	नमः
६ क्षमाधर्मरूप	श्रीचारित्राय	नमः
७ आर्जवधर्मरूप	श्रीचारित्राय	नमः
८ मृदुताधर्मरूप	श्रीचारित्राय	नमः
९ मुक्तिधर्मरूप	श्रीचारित्राय	नमः
१० तपोधर्मरूप	श्रीचारित्राय	नमः
११ सयमधर्मरूप	श्रीचारित्राय	नमः
१२ सत्यधर्मरूप	श्रीचारित्राय	नमः
१३ शौचधर्मरूप	श्रीचारित्राय	नमः
१४ अकिंचनधर्मरूप	श्रीचारित्राय	नमः
१५ ब्रह्मचर्यधर्मरूप	श्रीचारित्राय	नमः
१६ पृथ्वीरक्षासयम	श्रीचारित्राय	नमः
१७ उदकरक्षासयम	श्रीचारित्राय	नमः
१८ तेजसरक्षासयम	श्रीचारित्राय	नमः
१९ वातरक्षासयम	श्रीचारित्राय	नमः
२० वनरूपतिरक्षासयम	श्रीचारित्राय	नमः
२१ घेष्टद्रियरक्षासयम	श्रीचारित्राय	नमः
२२ तेजन्द्रियरक्षासयम	श्रीचारित्राय	नमः
२३ अक्षरिन्द्रियरक्षासयम	श्रीचारित्राय	नमः

- २४ पञ्चेन्द्रियरक्षासयम श्रीचारित्र्याय नमः
 २५ अजीवरक्षासयम श्रीचारित्र्याय नमः
 २६ प्रेक्षासयम श्रीचारित्र्याय नमः
 २७ उपेक्षासयम श्रीचारित्र्याय नमः
 २८ अतिरिक्त वस्त्रभक्तादिपरठण त्यागरूप सयम
 गुणयुक्ताय श्रीचारित्र्याय नमः
 २९ प्रमार्जनरूप श्रीचारित्र्याय नमः
 ३० मन सयमरूप श्रीचारित्र्याय नमः
 ३१ वाक्सयमरूप श्रीचारित्र्याय नमः
 ३२ कायसयमरूप श्रीचारित्र्याय नमः
 ३३ आचार्यवैयाघृत्यरूपसयम श्रीचारित्र्याय नमः
 ३४ उपाध्याय वैयाघृत्यरूप सयम श्रीचारित्र्याय नमः
 ३५ तपस्विवैयाघृत्यरूप श्रीचारित्र्याय नमः
 ३६ लघुशिष्यादि वैयाघृत्यरूप श्रीचारित्र्याय नमः
 ३७ ग्लानसाधु वैयाघृत्यरूप श्रीचारित्र्याय नमः
 ३८ साधुवैयाघृत्यरूप श्रीचारित्र्याय नमः
 ३९ श्रमणोपासक वैयाघृत्यरूप श्रीचारित्र्याय नमः
 ४० सघवैयाघृत्यरूप श्रीचारित्र्याय नमः ।
 ४१ कुलवैयाघृत्यरूप श्रीचारित्र्याय नमः
 ४२ गणवैयाघृत्यरूप श्रीचारित्र्याय नमः

- ४३ पशुपङ्गादि रहित वसति वसन ब्रह्मगुप्त
श्रीचारित्राय नमः
- ४४ स्त्रीहास्यादिक्रिधावर्जनब्रह्मगुप्त श्रीचारित्राय नमः
- ४५ स्त्रीजासनवर्जन ब्रह्मगुप्त श्रीचारित्राय नमः
- ४६ स्त्रीभगोपाग निरीक्षण वर्जन ब्रह्मगुप्त श्री-
चारित्राय नमः
- ४७ कुड्यांतर सहित स्त्री हावभाय सुगन वर्जन
ब्रह्मगुप्त श्रीचारित्राय नमः
- ४८ पूर्वस्त्रीसभोगचिंतनवर्जनब्रह्मगुप्त श्रीचारित्राय नमः
- ४९ अतिसरस आहार वर्जनब्रह्मगुप्त श्रीचारित्राय नमः
- ५० अतिआहार वर्जनब्रह्मगुप्त श्रीचारित्राय नमः
- ५१ अगविभूपावर्जन ब्रह्मगुप्त श्रीचारित्राय नमः
- ५२ अनशनतपोरूप श्रीचारित्राय नमः
- ५३ ऊनोठरीतपोरूप श्रीचारित्राय नमः
- ५४ वृत्तिसक्षेपतपोरूप श्रीचारित्राय नमः
- ५५ रसत्यागतपोरूप श्रीचारित्राय नमः
- ५६ कायफिलेसतपोरूप श्रीचारित्राय नमः
- ५७ सलेपणातपोरूप श्रीचारित्राय नमः
- ५८ प्रायश्चित्ततपोरूप श्रीचारित्राय नमः
- ५९ विनयतपोरूप श्रीचारित्राय नमः
- ६० वैयावचतपोरूप श्रीचारित्राय नमः

- ६१ मिज्जायतपोरूप श्रीचारित्राय नमः
 ६२ ध्यानतपोरूप श्रीचारित्राय नमः
 ६३ उपसर्गतपोरूप श्रीचारित्राय नमः
 ६४ अनतज्ञानसयुक्तश्रीचारित्राय नमः
 ६५ अनतदर्शनसयुक्तश्रीचारित्राय नमः
 ६६ अनतचारित्सयुक्तश्रीचारित्राय नमः
 ६७ क्रोधनिग्रहकरणरूप श्रीचारित्राय नमः
 ६८ माननिग्रहकरणरूप श्रीचारित्राय नमः
 ६९ मायानिग्रहकरणरूप श्रीचारित्राय नमः
 ७० लोभनिग्रहकरणरूप श्रीचारित्राय नमः

॥ अथ तपपदना ५० गुण ॥

१ यावत्कथक	तपसे	नम	
२ इत्वरतपभेद	तपसे	नम	
३ बाह्यजनोदरी	तपोभेद	तपसे	नम
४ अभ्यतरजनोदरी	तपोभेद	तपसे	नम
५ द्रव्यतपोवित्ति	सक्षेपतपोभेद	तपसे	नम
६ क्षेत्रतपोवित्ति	सक्षेपतपोभेद	तपसे	नम
७ कालतपोवित्ति	सक्षेपतपोभेद	तपसे	नम
८ भावतपोवित्ति	सक्षेपतपोभेद	तपसे	नम
९ कायकिलेस	तपोभेद	तपसे	नम
१० रसत्याग	तपसे	नम	

११ इन्द्रियकषाययोग विषयिक सलीणता तपसे नम.
 १२ स्त्रीपशुपङ्कादि यज्ञितस्थान अवस्थित सलीणता
 तपसे नम

१३ आलोचन	प्रायश्चित्त	तपसे	नमः
१४ पण्डितकर्मण	प्रायश्चित्त	तपसे	नम
१५ मिश्र	प्रायश्चित्त	तपसे	नम
१६ विवेक	प्रायश्चित्त	तपसे	नम
१७ उपसर्ग	प्रायश्चित्त	तपसे	नम.
१८ तप	प्रायश्चित्त	तपसे	नम
१९ भेद	प्रायश्चित्त	तपसे	नम
२० मूलप्रायश्चित्त	तपसे	नम.	
२१ अणवस्थित	प्रायश्चित्त	तपसे	नम
२२ पारचिप	प्रायश्चित्त	तपसे	नमः
२३ त्याग	विनयरूप	तपसे	नम.
२४ दर्शन	विनयरूप	तपसे	नमः
२५ चारित्र	विनयरूप	तपसे	नम
२६ गुर्वादिकप्रति मनोविनयरूप		तपसे	नम
२७ गुर्वादिकप्रतिवचन विनयरूप		तपसे	नमः
२८ गुर्वादिकप्रतिकाय विनयरूप		तपसे	नम
२९ उपचारिक	विनयरूप	तपसे	नमः
३० आचार्य	धेयावज्ञ	तपसे	नमः

३१ उपाध्याय	वेयावद्य	तपसे	नम
३२ साधु	वेयावद्य	तपसे	नम
३३ तपस्वि	वेयावच्च	तपसे	नम
३४ लघुशिष्यादि	वेयावद्य	तपसे	नम'
३५ गिराणसाधु	वेयावच्च	तपसे	नम.
३६ श्रमणोपासक	वेयावद्य	तपसे	नम
३७ सद्य	वेयावद्य	तपसे	नम
३८ कुल	वेयावद्य	तपसे	नम'
३९ गण	वेयावद्य	तपसे	नम
४० वापणा	तपसे	नम.	
४१ पृच्छना	तपसे	नमः	
४२ परायतना	तपसे	नम'	
४३ अनुप्रेक्षा	तपसे	नम	
४४ घर्मकथा	तपसे	नम	
४५ आर्त्तध्यान	नियुक्त	तपसे	नम.
४६ सौद्रध्यान	नियुक्त	तपसे	नम'
४७ घर्मध्यान	चितन	तपसे	नम
४८ शुक्लध्यान	चितन	तपसे	नम
४९ पाह्य	उपसर्ग	सहनरूप	तपसे नमः
५० अभ्यतर	उपसर्ग	सहनरूप	तपसे नम.

॥ अथ चैत्यवदन नवपदनो ॥

उप्पन्न सन्नाण महोमयाण । सप्पाडिहेरासण
 सठिआण ॥ सरेसणाणदियसज्जणाण । नमो नमो
 होउ सया जिणाण ॥ १ ॥ सिद्धाण माणदरमा-
 लयाण । नमो नमोणत चउक्कयाण ॥ समग्ग-
 कम्मक्खयकारयाण । जम्मजरादुक्खनिवारयाण ॥ २ ॥
 सूरीणादूरीकयकुग्गहाण । नमोनमो सूरसमप्पहाण ॥
 सदेशणादाण समायराण । अखड्ढत्तीस गुणाय-
 राण ॥ ३ ॥ सुत्तध्वविध्दरणात्तप्पराण । नमो
 नमो धायगकुजराण ॥ गणस्ससधारणसायराणं ।
 सब्बप्पणावज्जिय मच्छराण ॥ ४ ॥ साहूण ससाहिय
 सजमाण । नमो नमो सुद्धदयादमाण ॥ तिगुत्ति-
 गुत्ताण समाहियाण । मुणीण माणदपयठियाण ॥ ५ ॥
 जिणुत्तत्तत्तेइलक्खणस्स । नमो नमो निम्मलदस-
 णस्स ॥ मिच्छत्तनासाइ समुगम्मस्स । मूलस्स
 सद्धम्ममहादुमस्स ॥ ६ ॥ अन्नाण समोह तमो हरस्स
 नमो नमो नाण दिवायरस्स ॥ पंचपयारस्सुवगारगस्स
 मत्ताण सब्बत्थपयासगस्स ॥ ७ ॥ आराहियाखडिय
 सक्कियस्स । नमो नमो सयम वीरियस्स ॥
 सहावणा सग विवड्ढियस्स । निब्बाण द्राणाइ

समुज्जयस्स ॥ ८ ॥ कम्मदुमुम्मूलण कुजरस्स ।
 नमो नमो तिब्बतयोभरस्स ॥ अणेगलद्वीणनिब-
 घणत्स । पुस्सज्ज अत्थाण्ण यसाहणस्स ॥ ९ ॥
 इयनवपयमिद्धं लद्धिविज्जासमिद्ध । पपडियसरवग्ग
 ५ क्षीतिरेहा समग्ग ॥ दिसिवइ सुरसार खोणिपिढा
 र्थयार । तिजय विजयचक्क सिद्धचक्क नमामि ॥ १० ॥ इति

॥ अथ सिद्धचक्रस्तवन ॥

नवपदध्यान सदा जयकारी ॥ नवपदध्यान सदा
 सुखकारी ॥ ए आकणी ॥ अरिहतसिद्ध आचारज
 पाठक । साधु देखो गुणरूप उदारी ॥ नवपद० ॥ १ ॥
 दरशनज्ञान चारित्र्य हे उत्तम । तप द्योय भेदे हृदय
 विचारी ॥ नवपद० ॥ २ ॥ मथ्रजडीओर तत्र घणेर
 उन्न सपक्क हम दूर विसारी ॥ नवपद० ॥ ३ ॥
 द्यौतजीव भव जलसे तारे । गुणं गावतहे यह नरनारी
 ॥ नवपद० ॥ ४ ॥ श्रीजिनभक्त मोहन मुनि वदत ।
 ६ दिनदिन चढते हरख अपारी ॥ नवपद० ॥ ५ ॥ इति

॥ अथ नवपदनी थुई ॥

नितप्रतिः हुं प्रणमु/सिद्धचक्र शुभ भाव ।
 ह्येः कारजं सिद्धिनो लाघो एह उपाय । तुझ
 नाम पसाये आरति च्याधि पुलाय । इगतुझ अनु-

ब्रह्मी सुखसपति मुक्त धाय ॥ १ ॥ श्री-अरि-
 हत नमिषै, सिद्ध सूरौ उवज्ञाय । मुनिवर त्रिका-
 करणे, वसण नाण सुहाय । दुग्धिधि चारित्र्ये, बुध
 विष । तपमन भाय । ये नवपदध्यातां निरुपम
 शिषसुखधाय ॥ २ ॥ विद्यापरवादौ जाणो ए अधि-
 कार । श्रीगुरु उपदेशे, सिद्ध-ध्वक्त उद्धार । प्रवचन
 अनुसारे, भाख्यो ण्ह विचार । भवि जन नित
 ध्यावो, सुरतरु गुण भडार ॥ ३ ॥ जिनधरम अनु-
 रागी, चक्केमरि सुखकार । सेवकनें आपै, सुख
 संपति परिवार । हिव निधि उदयकरि, चारित्र
 नद्री मन भाय । जिनचदसूरीसर, खरतर-पति
 सुपसाय ॥ ४ ॥ इति

॥ अथ नवपदचैत्य वदन ॥

श्रीअरिहत उदार कांति । अतिसुन्दररूप ।
 सेवो सिद्ध अनन्तशांत । आत्म गुण भूप ॥ १ ॥
 आचारज उवज्ञाय साधु । शमतारसधाम । जिन
 भापित सिद्धान्त शुद्ध, अनुभव अभिराम ॥ २ ॥
 बोधिधीजगुण सपदाए । नाण धरणतव शुद्ध ।
 ध्यावो परमानन्दपद । ए नवपद धविरुद्ध ॥ ३ ॥
 इह परभव आनन्दकद । जगमांहि प्रसिधौ ।
 चिंतोमणि समजासजोग । बहुपुण्यै लद्धौ ॥ ४ ॥

तिहुअणत्तार अपार एह महिमा मन धारो । परि
 हर परजजालजाल । नित एह सभारो ॥ ५ ॥
 सिद्धचक्रपद सेवतां । सहजानन्द स्वरूप । अमृ-
 तमय कल्याणनिधि । प्रगटे चेतन भूप ॥ ६ ॥ इति

॥ अथ नवपदे स्तवन ॥

। रागमारु । तीरथनाथक जिनवरूजी अतिशयजास
 अनूप । सिद्धअनतमहागुणीजी परमानन्द स्वरूप ।
 भविकमन धारजोरे ॥ १ ॥ धार जो नवपदध्यान ।

। म० । श्रीध्याजारजर्गण धरूरे । गुणछत्ताश निवास
 पाठक पदधर मुनिवरूजी । श्रुतदायक सुविलास । म०

॥ २ ॥ सुमति गुपतिधर सोभताजी । साधुसमता
 धत । सम्यग्दर्शन सुदरूजी । ज्ञानप्रकाशक अनन्त

म० ॥ ३ ॥ संवरसाधना चरण छेरे । तप उत्तमविधि
 होय । ए नवपदना ध्यानधीरे । निरूपाधिक सुख

होय । म० ॥ ४ ॥ अमृतसमजिन धर्मनोरे । मूल ए
 नवपदजाण । आविचल अनुभव कारणेजी । नितप्रति

नमत कल्याण ॥ ५ ॥ इति
 ॥ अथ नवपदनी थुई ॥

जगनाथक दायक सिद्धचक्र सुखकद । जेहना जप
 तपधी भाजे भव भय फद । श्रीपालने मयणा विधिधी
 एतर्पकीध, नवपदधीपामें अष्टसिद्धनवनिघा ॥ १ ॥ जिन

सिद्ध आचारिज, पाठक श्रीसुनिराज, दर्शनज्ञान
 चारित्र नवमो तप कहेषाय । एक एक पद
 घ्यांतानिवि सर्पाससार / चोवीसी प्रणमु कीधो
 भवि उपगार ॥ २ ॥ आसूवलिचैत्र सुदि सातमपी
 जाण, ओली कीजैसुम मन आंबिलकरपचखाण ।
 पदपद नोंगुणनो कीजै भावसुजगीस आगममांही ००
 बोलया घ्यावो तुम निसदीस ॥ ३ ॥ विमलादिक-
 देवदेवी चक्रेसरी जान, सिद्धचक्रना सेषक
 आपवछितदान । खरतरगच्छादिनकर श्रीजिन-
 अखयद्वारिंद तस चरणपसाये, भाखे श्रीजिनचद
 ॥ ४ ॥ इति



अथ नवपदओली करणविधि ६३

दिन क्रम	पदनां नामो	नव- कर वाली	काउस्सग लोगस्स		वर्ण	भोजन
			॥३॥३॥३॥	॥३॥३॥३॥		
१	ॐ ही नमो अरिहताण	२०	१२	१२	श्वेत	चोखा
२	" " नमो सिद्धाण	२०	८	८	लाल	घठ
३	" " नमो आयरियाण	२०	३६	३६	पीलो	घणा
४	" " नमो उवझायाणं	२०	२५	२५	नीलो	मग
५	" " नमो लोए सब्बसाहूण	२०	२७	२७	कालो	अडद
६	" " नमो वस्सणस्स	२०	६७	६७	श्वेत	चोखा
७	" " नमो नाणस्स	२०	५१	५१	"	"
८	" " नमो चारित्तस्स	२०	७०	७०	"	"
९	" " नमो तवस्स	२०	५०	५०	"	"

शुभमास शुभदिवसमां गुरुमहाराजनी पक्षे
विधि पूर्वक आंबीलओलीनी तपस्या ग्रहण करे,
पछे आ तप आसो सुदि अने चैत्र सुदि ७ कदाच
तीधि घटी होय तो ६ अने वधी होयतो ८ धी पूनम
सुधी नव आंबील करे, एम वरसमां बे चार करतां
साहाचार वरसे नव ओली पूरी करधी, नव दिन
सुधी देवसिराहपाडिकमणो साज सवारे बे वखत
पांडलेहण, गुरुपासे पञ्चखाण करे त्रिकाल देवपूजा
करे, मध्याने आठथुइयी देव वांटे, हमैसा नवपदना
नव चैत्यवदन करे जेटला गुण होय तेदला साथीया
प्रदक्षिणा काउस्सग करे स्वमासमणा अने गुणणी
हमेशां एकएक पदनी करे एकएक प्रदक्षिणा अने
एकएक स्वमासणो दहने एकएक गुण कहे, पञ्च-
खाणपारवानो चैत्यवदन करे बाद आंबील करी चैत्य
वदन करे सुति वखतै संधारापोरिसी भणावीने भूमि
सजाराउपर सोवे शीलव्रतपाले इत्यादि नव दिवस
सुधी करधी ॥ अने काउस्सग करवुं होय त्यारे इया
वहीपडिकमीने स्वमासमणो दहने इच्छाकारेण-
सदिस्सह भगवत् अमुकपद आराधवानिमित्त
करेमिकाउस्सग, धंद्यवत्तियाए, अन्नत्य ० पुजे

काउस्मग करीने प्रगट लोगस्सकहे आतप पूर्ण थया
 पाठ शक्ति अनुसार उजमणु करे ते गुरुमुखपी जाणवुं

॥ अथ विशस्थानक तपकरण विधि ॥

सारा दिवसे गुरुने पासे विधि पूर्वक बीशस्थान
 तपउचरे आतप दशवरपमांहे पुरो करवो आतपनी
 ओली २० होय छे एकेएक ओली छठ मासैं पूरी
 करवी, उपरात भग थाय, एकएक ओली बीस अठम
 छठ अथवा उपवास थी थाय छे दशवर्षे अठमपी करे
 तो ४०० अठम, छठपी करे तो ४०० छठ, उपवासपी
 करे तो ४०० उपवास थाय छे अने आंवील नीवीके
 एकासणापी पण थायछे, जे दिवसे उपवास होय ते
 दिवसे पढिक्कमणो शक्ति होय तो पोपो अथवा देशा
 घगाशिक करवु, देववदन करवु, जेटला जे पदना
 गुण होय तेदला खमासणा साथीया प्रदक्षीणा अने
 लोगस्सना काउस्सग करवा, जे पद होय ते पदनी
 बीश माला दर उपवासे गणवी आतप सपूर्ण थया बाद
 शक्ति अनुसार उजमणो करे ते गुरुमुखपी जाणवुइति

अक०	नाम	काउ	खमा	सा	प्रद-	माला
		लोग	सणा	थीया	क्षीणा	
१	नमो अरिहताण	१२	१२	१२	१२	२०

२	॥ सिद्धाणं	३१	३१	३१	३१	२०
३	॥ पवयणस्त	२७	२७	२७	२७	२०
४	॥ आयरिषाणं	३६	३६	३६	३६	२०
५	॥ धेराण	१०	१०	१०	१०	२०
६	॥ उवञ्ज्जायाण	२५	२५	२५	२५	२०
७	॥ लोएसव्वसाह्वण	२७	२७	२७	२७	२०
८	॥ नाणस्त	५१	५१	५१	५१	२०
९	॥ वसणस्त	६७	६७	६७	६७	२०
१०	॥ विनयसंपन्नाण	५२	५२	५२	५२	२०
११	॥ चरिच्चस्त	७०	७०	७०	७०	२०
१२	॥ धंभवयघारीण	१८	१८	१८	१८	२०
१३	॥ किरियाण	२५	२५	२५	२५	२०
१४	॥ तवस्सीण	१२	१२	१२	१२	२०
१५	॥ गोयमस्त	१२	१२	१२	१२	२०
१६	॥ जिणाण	२०	२०	२०	२०	२०
१७	॥ चरणस्त	१७	१७	१७	१७	२०
१८	॥ नाणस्त	५२	५२	५२	५२	२०
१९	॥ सुयनाणस्त	२०	२०	२०	२०	२०
२०	॥ तित्थस्त	३८	३८	३८	३८	२०

॥ अथ प्रथम अरिहंतना १२ भेद ॥

१ अशोकवृक्ष प्रातिहार्यं सयुताय भीमरिहताय

२ पुष्पवृष्टि	प्रातिहार्यसयुताय श्रीश्वरिहताय नम	
३ दिव्यधरणि	"	"
४ चामरयुग	"	"
५ स्वर्णसिंहासन	"	"
६ भामडल	"	"
७ दुदुभि	"	"
८ छत्रत्रय	"	"
९ ज्ञानातिशय	"	"
१० पुजातिशय	"	"
११ वचनातिशय	"	"
१२ अपायायगमातिशय	"	"

॥ अथ बीजा सिद्धपदना ३१ भेद ॥

१ मतिज्ञानावरणि	कर्मरहिताय श्रीनिद्राय नमः
२ श्रतज्ञानावरणि	"
३ अवधिज्ञानावरणि	"
४ मनपर्यवज्ञानावरणि	"
५ केवल ज्ञानावरणि	"
६ निद्रादर्शनावरणि	"
७ निद्रानिद्रादर्शनावरणि	"
८ प्रचलादर्शनावरणि	"
९ प्रचलाप्रचलादर्शनावरणि	"

१०	धीणद्विदर्शनावराणि कर्मराहिनाय श्रीसिद्धायनम	
११	चक्षुदर्शनावराणि	११
१२	अचक्षुदर्शनावराणि	११
१३	अवधिदर्शनावराणि	११
१४	केवलदर्शनावराणि	११
१५	शातावेदनीय	११
१६	अशातावेदनीय	११
१७	दर्शनमोहनीय	११
१८	चारित्रमोहनीय	११
१९	नरकायुः	११
२०	तिर्यगायुः	११
२१	मनुष्यायुः	११
२२	देवायुः	११
२३	शुभनाम	११
२४	अशुभनाम	११
२५	उच्चगोत्र	११
२६	नीचगोत्र	११
२७	दानातराय	११
२८	लाभतराय	११
२९	भोगातराय	११

- ३० उपभोगांतराय कर्मरहिताय श्रीसिद्धाय नमः
 ३१ वीर्यांतराय " "

॥ अथ त्रीजापवयण पदना २७ भेद ॥

- १ सर्वतो प्राणातिपातविरताय श्रीप्रवचनाय नमः
 २ सर्वतो मृषायादविरताय " "
 ३ सर्वतो अदत्तादानविरताय " "
 ४ सर्वतो मैथुनविरताय " "
 ५ सर्वतो परिग्रहविरताय " "
 ६ देशतो प्रणातिपात विरताय " "
 ७ देशतो मृषायाद विरताय " "
 ८ देशतो अदत्तादान विरताय " "
 ९ देशतो मैथुन विरताय " "
 १० देशतो परिग्रह विरताय " "
 ११ दिसिपरिमाणव्रत सयुताय " "
 १२ भोगोपभोगपरिमाणव्रत सयुताय " "
 १३ अन्नधंदुल विरताय " "
 १४ सामायिकव्रत सयुताय " "
 १५ देसावकासिकव्रत सयुताय " "
 १६ पौषघोषवासव्रत सयुताय " "
 १७ अतिपीसविभागव्रत सयुताय " "

१८ विधिसूत्रागमाय	श्रीप्रवचनाय नमः
१९ षण्णिकसूत्रागमाय	”
२० भयसूत्रागमाय	”
२१ उत्सर्गागमाय	”
२२ अपवादागमाय	”
२३ उभयसूत्रागमाय	”
२४ उद्यमसूत्रागमाय	”
२५ सर्वनयसमूहात्मकाय	”
२६ मत्तमंगीरचनात्मकाय	”
२७ द्वादशांगीगणपिटकाय	”

॥ अथ चोथा आचार्यपदना ३६ गुण ॥

१ प्रतिरूपगुणसयुताय	श्रीआचार्याय नमः
२ तेजस्वीगुणसयुताय	”
३ युगप्रधानागमसयुताय	”
४ मधुरवाक्यगुणसयुताय	”
५ गभीरगुण संयुताय	”
६ धैर्यगुण सयुताय	”
७ उपदेशगुण सयुताय	”
८ अपरिभ्रायीगुण संयुताय	”
९ सौम्यप्रकृतिगुण सयुताय	”

	श्रीग्यान्गार्याय नमः
१० अविग्रहगुण सयुताय	
११ अतिकथकगुण सयुताय	११
१२ शीतलगुण सयुताय	११
१३ अचलगुण सयुताय	११
१४ प्रसन्नचदनगुण सयुताय	११
१५ क्षमागुण सयुताय	११
१६ ऋजुगुण सयुताय	११
१७ मृदुगुण सयुताय	११
१८ सर्वमगमुक्तिगुण सयुताय	११
१९ द्वादशविध तपगुण सयुताय	११
२० मत्तदशविध मज्जम सयुताय	११
२१ सत्यव्रतगुण सयुताय	११
२२ शौचगुण सयुताय	११
२३ अकिंचनगुण सयुताय	११
२४ ब्रह्मचर्यगुण सयुताय	११
२५ अनित्यभायना भावकाय	११
२६ अशरणभायना भावकाय	११
२७ असारस्वरूप भायना भावकाय	११
२८ एकत्वस्वरूप भायना भावकाय	११
२९ अन्यत्व भायना भावकाय	११
३० अशुचि भायना भावकाय	११

३	ठाणागसूत्र पाठकाय श्रीउपाध्यायाय नम	
४	सन्नवापागसूत्र पाठकाय	११
५	भगवतीसूत्र पाठकाय	११
६	ज्ञातागसूत्र पाठकाय	११
७	उपासकदसांगसूत्र पाठकाय	११
८	अतगढदसांगसूत्र पाठकाय	११
९	अनुत्तरोववाइसूत्र पाठकाय	११
१०	प्रश्नव्याकरणसूत्र पाठकाय	११
११	विपाकसूत्र पाठकाय	११
१२	उत्पादपूर्व पाठकाय	११
१३	आप्रायणी पूर्वपाठकाय	११
१४	धीर्यप्रवाद पूर्वपाठकाय	११
१५	अस्तिप्रवाद पूर्वपाठकाय	११
१६	ज्ञानप्रवाद पूर्वपाठकाय	११
१७	सत्यप्रवाद पूर्वपाठकाय	११
१८	आत्मप्रवाद पूर्वपाठकाय	११
१९	कर्मप्रवाद पूर्वपाठकाय	११
२०	प्रत्याख्यानप्रवाद पूर्वपाठकाय	११
२१	विद्याप्रवाद पूर्वपाठकाय	११
२२	अर्विध्यप्रवाद पूर्वपाठकाय	११
२३	प्राणायामप्रवाद पूर्वपाठकाय	११

२४ क्रियाविसाल पूर्वपाठकाय श्रीउपाध्यायाय नमः

२५ लोकरिंदुसार पुर्यपाठकाय

॥ अथ सातमा साधुपदना २७ भेद ॥

१ प्राणातिपातधिरमणव्रतसयुताय श्रीसाधवे नमः

२ मृषायादधिरमणव्रतसयुताय श्रीसाधवे नमः

३ अदत्तादानधिरमणमयुताय श्रीसाधवे नमः

४ मैथुनधिरमणव्रतसयुताय श्रीसाधवे नमः

५ परिग्रहधिरमणव्रतसयुताय श्रीसाधवे नमः

६ रात्रिभोजनधिरमणव्रतसयुताय श्रीसाधवे नमः

७ पृथ्वीकायरक्षकाय श्रीसाधवे नमः

८ अण्काय रक्षकाय श्रीसाधवे नमः

९ तेजकायरक्षकाय श्रीसाधवे नमः

१० वातकायरक्षकाय

११ धनस्पतिकायरक्षकाय

१२ असकायरक्षकाय

१३ एकेंद्रियजीवरक्षकाय

१४ द्वेन्द्रियजीवरक्षकाय

१५ त्रिन्द्रियजीवरक्षकाय

१६ चतुर्द्रियजीवरक्षकाय

१७ पंचेन्द्रियजीवरक्षकाय

१८ लोभनिग्रहकारकाय

- १० क्षमागुणस्युताय श्रीसाधवे नमः
 १० शुभभावनाभास्कराय ॥
 ११ शीतलेनादिक्रियाशुद्धकारकाय श्रीसाधवे नमः
 १२ सज्जगद्गोस्युताय ॥
 १३ मनोगुप्तिस्युताय ॥
 १४ ध्वनिस्युप्तिस्युताय ॥
 १५ कायगुप्तिस्युताय ॥
 १६ शीतादिद्वाविंशतिपरीसहस्रहनतत्पराय ॥
 १७ मरणातउपसर्गसहस्रहनतत्पराय ॥

॥ अथ आठमा ज्ञानपदना ५१ भेद ॥

- १ स्पर्शनैन्द्रियव्यजनावग्रहाय श्रीमतिज्ञानाय नमः
 २ रसनैन्द्रियव्यजनावग्रहाय ॥
 ३ घ्राणैन्द्रियव्यजनावग्रहाय ॥
 ४ श्रोतैन्द्रियव्यजनावग्रहाय ॥
 ५ स्पर्शनैन्द्रियअर्थावग्रहाय ॥
 ६ रसनैन्द्रियअर्थावग्रहाय ॥
 ७ घ्राणैन्द्रियअर्थावग्रहाय ॥
 ८ चक्षुरिन्द्रियअर्थावग्रहाय ॥
 ९ श्रोतैन्द्रियअर्थावग्रहाय ॥
 १० मनोअर्थावग्रहाय ॥
 ११ स्पर्शैन्द्रियह्राय ॥

	श्रीमतिज्ञानाय नमः
१२ रसनेन्द्रियईहा	
१३ घ्राणेन्द्रियईहा	११
१४ चक्षुरिन्द्रियईहा	११
१५ श्रोत्रेन्द्रियईहा	११
१६ मनईहा	११
१७ स्पर्शेन्द्रियअपाय	११
१८ रसनेन्द्रियअपाय	११
१९ घ्राणेन्द्रियअपाय	११
२० चक्षुरिन्द्रियअपाय	११
२१ श्रोत्रेन्द्रियअपाय	११
२२ मनोअपाय	११
२३ स्पर्शेन्द्रियधारणाय	११
२४ रसनेन्द्रियधारणाय	११
२५ घ्राणेन्द्रियधारणाय	११
२६ चक्षुरिन्द्रियधारणाय	११
२७ श्रोत्रेन्द्रियधारणाय	११
२८ मनोधारणाय	११
२९ श्रीअक्षरश्रुतज्ञानाय नमः	
३० श्रीअनक्षरश्रुतज्ञानाय नमः	
३१ श्रीसक्षिश्रुतज्ञानाय नमः	
३२ श्रीअसक्षिश्रुतज्ञानाय नमः	

- ३३ श्रीसम्यग्श्रुतज्ञानाय नमः
३४ श्रीमिथ्याश्रुतज्ञानाय नमः
३५ श्रीसादिश्रुतज्ञानाय नमः
३६ श्रीअनादिश्रुतज्ञानाय नमः
३७ श्रीसपर्यवसितश्रुतज्ञानाय नमः
३८ श्रीअपर्यवमितश्रुतज्ञानाय नमः
३९ श्रीगमिकश्रुतज्ञानाय नमः
४० श्रीअगमिकश्रुतज्ञानाय नमः
४१ श्रीअगप्रविष्टश्रुतज्ञानाय नमः
४२ श्रीअनगप्रविष्टश्रुतज्ञानाय नमः
४३ श्रीअनुगामिक अवधिज्ञानाय नमः
४४ श्रीअननुगामिक अवधिज्ञानाय नमः
४५ श्रीवर्द्धमान अवधिज्ञानाय नमः
४६ श्रीहीयमान अवधिज्ञानाय नमः
४७ श्रीप्रतिपाति अवधिज्ञानाय नमः
४८ श्रीअप्रतिपाति अवधिज्ञानाय नमः
४९ श्रीरञ्जुमतिमनःपर्यवज्ञानाय नमः
५० श्रीविपुलमतिमनःपर्यवज्ञानाय नमः
५१ श्रीलोकालोकप्रकाशक केवलज्ञानाय नमः

॥ अथ नवमा दर्शनपदना ६७ भेद ॥

१ परमार्थसस्वरूप श्रीसदर्शनाय नमः ।

२ परमार्थज्ञातृसेवनरूप	भ्रिसिद्दर्शनाय नमः
३ व्यापन्नदर्शनवर्जनरूप	”
४ कुदर्शनवर्जनरूप	”
५ शुश्रूषारूप	”
६ धर्मरागरूप	”
७ वैषाढृत्य	”
८ अर्हद्विनयरूप	”
९ सिद्धविनयरूप	”
१० चैत्य विनयरूप	”
११ श्रुत विनयरूप	”
१२ धर्म विनयरूप	”
१३ साधुवर्ग विनयरूप	”
१४ आचार्य विनयरूप	”
१५ उपाध्याय विनयरूप	”
१६ प्रवचन विनयरूप	”
१७ दर्शन विनयरूप	”
१८ ससारे जिनसारामिति चिंतनरूप	”
१९ समारेजिनमतमारमिति चिंतनरूप	”
२० समारेजिनमत स्थित साध्वा दिसारमिति चिंतनरूप	
२१ शाका दूषण रहिताय	

	भीसद्दर्शनाय नमः
२२ वाक्सादृपणरहिताय	
२३ विचिकित्सारूप दृपणरहिताय	॥
२४ कुहट्टिप्रशमारूप दृपणरहिताय	॥
२५ कुहट्टिपरिचयदृपणरहिताय	॥
२६ प्रवचन प्रभावकरूप	॥
२७ धर्मकथा प्रभावकरूप	॥
२८ वादि प्रभावकरूप	॥
२९ नैमित्तिकप्रभावकरूप	॥
३० तपस्विप्रभावकरूप	॥
३१ प्रज्ञाया दिविद्याभृत्	॥
३२ चूर्णाजनादिसिद्ध प्रभावकरूप	॥
३३ कवि प्रभावकरूप	॥
३४ जिनशासने कौशलभूषणरूप	॥
३५ प्रभावना भूषणरूप	॥
३६ तीर्थसेवा भूषणरूप	॥
३७ धर्म भूषणरूप	॥
३८ जिनशासने भक्ति भूषणरूप	॥
३९ उपशम गुणरूप	॥
४० संवेग गुणरूप	॥
४१ निर्वेद गुणरूप	॥
४२ अनुकपा गुणरूप	॥

- ४३ आस्तिक्य गुणरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः
- ४४ परतीर्थिकादिवदनवर्जनरूप " "
- ४५ परतीर्थिकादि नमस्कारवर्जनरूप " "
- ४६ परतीर्थिकादि आलापवर्जनरूप " "
- ४७ परतीर्थिकादि सलापवर्जनरूप " "
- ४८ परतीर्थिकादि अशनादि दानवर्जनरूप, "
- ४९ परतीर्थिकादि गंधपुष्पादि प्रेषण वर्जनरूप, "
- ५० राजाभियोगआगारयुक्त " "
- ५१ गणाभियोगआगारयुक्त " "
- ५२ बलाभियोगआगारयुक्त " "
- ५३ सुराभियोगआगारयुक्त " "
- ५४ कातासृष्ट्यागारयुक्त " "
- ५५ गुरु निग्रहागारयुक्त " "
- २६ सम्पक्त्व चारित्र्यमस्य मूलामिति चिंतवन
रूप श्रीसद्दर्शनाय नमः
- ५७ सम्पक्त्व चारित्र्य धर्मपुरस्य द्वारामिति
चिंतवनरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः
- ५८ सम्पक्त्व चारित्र्य धर्मस्य प्रतिष्ठान
मिति चिंतवनरूप " "
- ५९ सम्पक्त्व चारित्र्य धर्मस्याधार
मिति चिंतवनरूप " "

- ६० सम्यक्त्व चारित्र्य धर्मस्य भाजन
मिति चिंतवनरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः
- ६१ सम्यक्त्व चारित्र्य धर्मस्य निधि
सनिभमिति चिंतवनरूप ॥
- ६२ अस्ति जीवोति श्रद्धान स्थानयुक्त ॥
- ६३ सचजीवो नित्योति श्रद्धान स्थानयुक्त ॥
- ६४ सचजीवः कर्माणि करोतीति
श्रद्धान स्थानयुक्त ॥
- ६५ सचजीवः कृत कर्माणि वेदयतीति
श्रद्धान स्थानयुक्त ॥
- ६६ जीवस्यास्तितानिर्वाणमिति
श्रद्धान स्थानयुक्त ॥
- ६७ अस्ति पुनर्मोक्षोपायेति श्रद्धान स्थानयुक्त
श्रीसद्दर्शनाय नमः

॥ अथ दशमाधिनयपदना ५२ भेद ॥

- १ श्रीतीर्थकरस्याना ज्ञातनाकरणरूप विनयधराय नमः
- २ श्रीतीर्थकरस्य भक्ति करणरूप ॥
- ३ श्रीतीर्थकरस्य बहुमान करणरूप ॥
- ४ श्रीतीर्थकरस्य स्तुति करणरूप ॥
- ५ श्रीसिद्धस्यनाशातनारूप ॥
- ६ श्रीसिद्धस्य भक्तिकरणरूप ॥

- ७ श्रीसिद्धस्य बहुमानकरणरूप विनयधराय नमः
- ८ श्रीसिद्धस्य स्तुतिकरणरूप
- ९ श्रीसुविहितचद्रादि कुलानाशातना करणरूप
- १० श्रीसुविहितचद्रादिकुलभक्तिकरणरूप
विनयधराय नमः
- ११ श्रीसुविहितचद्रादिकुलबहुमानकरणरूप
- १२ श्रीसुविहितचद्रादिकुलस्तुति करणरूप
- १३ श्रीकोटिकादि गणोत्पन्नसुविहितानाशातनाकरणरूप
- १४ श्रीकोटिकादि गणोत्पन्न सुविहितभक्तिकरणरूप
- १५ श्रीकोटिकादि गणोत्पन्न सुविहितबहुमानकरणरूप
- १६ श्रीकोटिकादि गणोत्पन्न सुविहितस्तुतिकरणरूप
- १७ श्रीचतुर्विधसघानाशातना करणरूप
- १८ श्रीचतुर्विधसघभक्तिकरणरूप
- १९ श्रीचतुर्विधसघबहुमानकरणरूप
- २० श्रीचतुर्विधसघस्तुतिकरणरूप
- २१ श्रीशुद्धागमोक्तक्रियाकारकस्थानाशातनाकरणरूप

- ६० सम्यक्त्व चारित्र्य धर्मस्य भाजन
मिति चिंतवनरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः
- ६१ सम्यक्त्व चारित्र्य धर्मस्य निधि
सनिभमिति चिंतवनरूप "
- ६२ अस्ति जीवेति श्रद्धान स्थानयुक्त "
- ६३ सचजीवो नित्येति श्रद्धान स्थानयुक्त "
- ६४ सचजीव कर्माणि करोतीति
श्रद्धान स्थानयुक्त - "
- ६५ सचजीव कृत कर्माणि वेदयतीति
श्रद्धान स्थानयुक्त "
- ६६ जीवस्यास्तित्तिनिर्वाणमिति
श्रद्धान स्थानयुक्त "
- ६७ अस्ति पुनर्मोक्षोपायेति श्रद्धान स्थानयुक्त
श्रीसद्दर्शनाय नमः

॥ अथ दशमाधिनयपदना ५२ भेद ॥

- १ श्रीतीर्थकरस्याना शातनाकरणरूप विनयधराय नमः
- २ श्रीतीर्थकरस्य भक्ति करणरूप "
- ३ श्रीतीर्थकरस्य बहुमान करणरूप "
- ४ श्रीतीर्थकरस्य स्तुति करणरूप "
- ५ श्रीसिद्धस्यनाशातनारूप "
- ६ श्रीसिद्धस्य भक्तिकरणरूप "

- ७ श्रीसिद्धस्य बहुमानकरणरूप विनयधराय नमः
- ८ श्रीसिद्धस्य स्तुतिकरणरूप
- ९ श्रीसुविहितचद्रादि कुलानाशातना करणरूप ॥
- १० श्रीसुविहितचद्रादिकुलभक्तिकरणरूप
विनयधराय नमः
- ११ श्रीसुविहितचद्रादिकुलबहुमानकरणरूप ॥
- १२ श्रीसुविहितचद्रादिकुलस्तुति करणरूप ॥
- १३ श्रीकोटिकादि गणोत्पन्नसुविहित
तानाशातनाकरणरूप ॥
- १४ श्रीकोटिकादि गणोत्पन्न सुविहित
भक्तिकरणरूप ॥
- १५ श्रीकोटिकादि गणोत्पन्न सुविहित
बहुमानकरणरूप ॥
- १६ श्रीकोटिकादि गणोत्पन्न सुविहित
स्तुतिकरणरूप ॥
- १७ श्रीचतुर्विधसघानाशातना करणरूप ॥
- १८ श्रीचतुर्विधसघभक्तिकरणरूप ॥
- १९ श्रीचतुर्विधसघबहुमानकरणरूप ॥
- २० श्रीचतुर्विधसघस्तुतिकरणरूप ॥
- २१ श्रीशुद्धागमोक्तक्रियाकारकस्याना
शातनाकरणरूप ॥

- २२ श्रीशुद्धागमोक्तक्रियाकारकस्य भक्ति करणरूप
विनयधराय नमः
- २३ श्रीशुद्धागमोक्त क्रिया कारकस्य बहुमान
कारणरूप " "
- २४ श्रीशुद्धागमोक्त क्रिया कारकस्य
स्तुति करण रूप " "
- २५ श्रीजिनोक्तधर्मस्यानाशातनाकरणरूप " "
- २६ श्रीजिनोक्तधर्मस्य भक्तिकरणरूप " "
- २७ श्रीजिनोक्तधर्मस्य बहुमानकरणरूप " "
- २८ श्रीजिनोक्तधर्मस्य स्तुतिकरणरूप " "
- २९ श्रीज्ञानगुणप्राप्तस्यानाशातनाकरणरूप " "
- ३० श्रीज्ञानगुणप्राप्तस्य भक्तिकरणरूप " "
- ३१ श्रीज्ञानगुणप्राप्तस्य बहुमानकरणरूप " "
- ३२ श्रीज्ञानगुणप्राप्तस्य स्तुतिकरणरूप " "
- ३३ श्रीज्ञानानाशातनाकरणरूप " "
- ३४ श्रीज्ञानभक्तिकरणरूप " "
- ३५ श्रीज्ञानबहुमानकरणरूप " "
- ३६ श्रीज्ञानस्तुतिकरणरूप " "
- ३७ श्रीआचार्यस्यानाशातनाकरणरूप " "
- ३८ श्रीआचार्यस्य भक्तिकरणरूप " "
- ३९ श्रीआचार्यस्य बहुमानकरणरूप " "

८ मृदुता धर्म रूप	- -	वारित्राय नमः
९ मुक्ति धर्म रूप	,	"
१० तपो धर्म रूप	"	"
११ सयम धर्म रूप	"	"
१२ सत्य धर्म रूप	"	"
१३ शौच धर्म रूप	"	"
१४ अकिंचन धर्म रूप	"	"
१५ धर्म धर्म रूप	"	"
१६ पृथ्वी रक्षा सयम	"	"
१७ उदक रक्षा सयम	"	"
१८ तेज रक्षा सयम	"	"
१९ वायु रक्षा सयम	"	"
२० धनस्पति सयम	"	"
२१ धैद्रिय रक्षा सयम	"	"
२२ तन्द्रिय रक्षा सयम	"	"
२३ चतुर्ध्रिय रक्षा सयम	"	"
२४ पंचैद्रिय रक्षा सयम	"	"
२५ अजीव रक्षा सयम	"	"
२६ प्रेक्षा सयम	"	"
२७ उपेक्षा सयम	"	"
२८ अतिरिक्त वस्त्रभक्तादि परठण त्यागरूप	"	"

२९ प्रमार्जन रूप सयमः	३१
३० मनः सयम	३१
३१ वागू सयम	३१
३२ काय सयम	३१
३३ आचार्य वैयाघृत्यरूप	३१
३४ उपाध्याय वैयाघृत्यरूप	३१
३५ तपस्वि वैयाघृत्यरूप	३१
३६ लघुशिष्यादि वैयाघृत्यरूप	३१
३७ ग्लानसाधुवैयाघृत्यरूप	३१
३८ साधुवैयाघृत्यरूप	३१
३९ भ्रमणोपासकवैयाघृत्यरूप	३१
४० संघवैयाघृत्यरूप	३१
४१ कुलवैयाघृत्य रूप	३१
४२ गणवैयाघृत्यरूप	३१
४३ पशुपटकादिरहितवसतिवसनब्रह्मगुप्त	३१
४४ स्त्रीहास्यादिविकथावर्जनब्रह्मगुप्त	३१
४५ स्त्रीध्यासनवर्जनब्रह्मगुप्त	३१
४६ स्त्रीअंगोपांगनिरीक्षणवर्जनब्रह्मगुप्त	३१
४७ कुटयनरसहितस्त्रीहावभायश्रवणब्रह्मगुप्त	३१
४८ पूर्वस्त्रीसभोगचितवनवर्जनब्रह्मगुप्त	३१
४९	३१

	चारित्र्याय नमः
५० अतिघ्राहारकरणवर्जनघ्नघ्नशुभ	११
५१ अगदिभूयापर्जनघ्नघ्नशुभ	११
५२ अनशनतपोरूप	११
५३ उनोदरितपोरूप	११
५४ वृत्तिसक्षेपतपोरूप	११
५५ रसत्यागतपोरूप	११
५६ कायाकिलेशतपोरूप	११
५७ सलीनतातपोरूप	११
५८ प्रायश्चित्ततपोरूप	११
५९ विनयतपोरूप	११
६० वैषावञ्जतपोरूप	११
६१ सज्जायतपोरूप	११
६२ ध्यानतपोरूप	११
६३ उपसर्गतपोरूप	११
६४ अनतज्ञानसयुत	११
६५ अनतदर्शनसयुत	११
६६ अनतचारित्रसयुत	११
६७ क्रोधनिग्रहकरणरूप	११
६८ माननिग्रहकरणरूप	११
६९ मायानिग्रहकरणरूप	११
७० लोभनिग्रहकरणरूप	११

॥ अथ धारमा ब्रह्मचर्य पदना १८ भेद ॥

१ मनसाओदारिकविषयअसेवनरूप	
	श्रीब्रह्मचारिणे नमः
२ मनसाओदारिकविषयअसेवावनरूप	११
३ मनसाओदारिकविषयअननुमोदनरूप	११
४ वचसाओदारिकविषयअसेवनरूप	११
५ वचसाओदारिकविषयअसेवावनरूप	११
६ वचसाओदारिकविषयअननुमोदनरूप	११
७ कायेनओदारिकविषयअसेवनरूप	११
८ कायेनओदारिकविषयअसेवावनरूप	११
९ कायेनओदारिकविषयअननुमोदनरूप	११
१० मनसावैक्रियविषयअसेवनरूप	११
११ मनसावैक्रियविषयअसेवावनरूप	११
१२ मनसावैक्रियविषयअननुमोदनरूप	११
१३ वचसावैक्रियविषयअसेवनरूप	११
१४ वचसावैक्रियविषयअसेवावनरूप	११
१५ वचसावैक्रियविषयअननुमोदनरूप	११
१६ कायेनवैक्रियअसेवनरूप	११
१७ कायेनवैक्रियविषयअसेवावनरूप	११
१८ कायेनवैक्रियविषयअननुमोदनरूप	११

॥ अथ नाना क्रियापदानां ३५ भेदः

- १ अशुद्धकायकीक्रियानियतनिरूप्य भीक्रियायते नरूप
- २ अधिकाणकीक्रियानियतनिरूप्य " "
- ३ परागणकीक्रियानियतनिरूप्य " "
- ४ प्राणाक्रियायतेकीक्रियानियतनिरूप्य " "
- ५ आग्निर्वाक्रियानियतनिरूप्य " "
- ६ वायुवर्वाक्रियानियतनिरूप्य " "
- ७ मायाप्रत्ययिर्वाक्रियानियतनिरूप्य " "
- ८ मिथ्यावृत्तानुप्रत्ययिर्वाक्रियानियतनिरूप्य " "
- ९ अपव्ययतायुक्तीक्रियानियतनिरूप्य " "
- १० वृष्टिकीक्रियानियतनिरूप्य " "
- ११ स्वष्टिकीक्रियानियतनिरूप्य " "
- १२ प्राणीभ्यस्कीक्रियानियतनिरूप्य " "
- १३ आत्मबोधनिपायकीक्रियानियतनिरूप्य " "
- १४ नैष्ठिकीक्रियानियतनिरूप्य " "
- १५ स्वहृष्टिकीक्रियानियतनिरूप्य " "
- १६ आणवणीक्रियानियतनिरूप्य " "
- १७ विशारणीकीक्रियानियतनिरूप्य " "
- १८ अनाभोगप्रत्ययिर्वाक्रियानियतनिरूप्य " "
- १९ अणवकत्वप्रत्ययिर्वाक्रियानियतनिरूप्य " "
- २० आज्ञापनप्रत्ययिर्वाक्रियानियतनिरूप्य " "

- २१ प्रयोगकीक्रियानिवर्तनरूप - श्रीक्रियायते नमः
२२ समुदायिकीक्रियानिवर्तनरूप " "
२३ प्रेमकीक्रियानिवर्तनरूप " "
२४ द्वेषकीक्रियानिवर्तनरूप " "
२५ हरियापथिकीक्रियानिवर्तनरूप " "

॥ अथ चउदमां तपसीणपदना १२ भेद ॥

- | | |
|------------------------|----------------------|
| १ अणसणतपोरूप | श्रीवाद्यतपसे नमः |
| २ उणोदरीतपोरूप | " " |
| ३ श्रुतिसञ्ज्ञेपतपोरूप | " " |
| ४ रसत्यागतपोरूप | " " |
| ५ कायक्लेशतपोरूप | " " |
| ६ सलीनतातपोरूप | " " |
| ७ प्रायाश्चित्ततपोरूप | श्रीध्वभ्यतरतपसे नमः |
| ८ विनयतपोरूप | " " |
| ९ वैयाधृत्यतपोरूप | " " |
| १० सञ्ज्ञायनपोरूप | " " |
| ११ आत्मध्यानतपोरूप | " " |
| १२ काउस्सगतपोरूप | " " |

॥ अथ पनरमा गौत्तमपदेना १२ भेद ॥

- १ श्रीगौत्तमस्वामि
- २ श्रीअग्निभूतिस्वामि
- ३ श्रीवायुभूतिस्वामि
- ४ श्रीव्यक्तस्वामि
- ५ श्रीसुधर्मास्वामि
- ६ श्रीमदितिस्वामि
- ७ श्रीमौर्यपुत्रस्वामि
- ८ श्रीअकपितस्यामि
- ९ श्रीअचलभ्रातास्वामि
- १० श्रीमेतार्थस्वामि
- ११ श्रीप्रभासस्वामि
- १२ श्रीचतुर्विंशतितीर्थकराणां चतुर्दशशत-
द्विपचाशत्

गणधराय नमः

गणधरभ्यो नमः

अथ सोलमा जिणाणपदेना २० भेद

- १ श्रीसीमधरस्वामि
- २ श्रीयुगमधरस्वामि
- ३ श्रीवाहुस्वामि
- ४ श्रीसुपाहुस्वामि
- ५ श्रीसुजातस्यामि

जिनेश्वराय नमः

जिनेश्वराय नमः

- ६ श्रीस्वप्नप्रभस्वामि
 ७ श्रीरूपभाननस्वामि
 ८ श्रीअनतवीर्यस्यामि
 ९ श्रीसूरप्रभस्वामि
 १० श्रीविशालस्वामि
 ११ श्रीवज्रधरस्वामि
 १२ श्रीचंद्राननस्वामि
 १३ श्रीचन्द्रबाहुस्वामि
 १४ श्रीसुजग स्वामि
 १५ श्रीहृष्यरस्यामि
 १६ श्रीनमिप्रभस्वामि
 १७ श्रीवीरसेह्यामि
 १८ श्रीमहाभद्रस्वामि
 १९ श्रीदेवयसास्वामि
 २० श्रीअजितवीर्यस्वामि

अथ सतरमा सजम पदना १७ भेद

- १ प्राणातिपातविरताय श्रीसयमधराय नमः
 २ मृषाबाधविरताय
 ३ अदस्तादानविरताय
 ४ मैथुनविरताय

- ५ परिग्रहाविरताय श्रीमयमधराय नमः
 ६ रात्रिभोजनाविरताय " "
 ७ इरियासमितिसंयुताय " "
 ८ भाषासमितिसंयुताय " "
 ९ एषणासमितिसंयुताय " "
 १० ध्यादानमङ्गलनिखेवणासमितिसंयुताय " "
 ११ पारिठावणियासमितिसंयुताय " "
 १२ मनोगुप्तिसंयुताय " "
 १३ वचनगुप्तिसंयुताय " "
 १४ कायगुप्तिसंयुताय " "
 १५ मनोदण्डविरताय " "
 १६ वचनदण्डविरताय " "
 १७ कायदण्डविरताय " "

अथ अठारमां ज्ञानपदना ५१ भेद

- १ श्रीआचाराग श्रुतज्ञानाय नमः
 २ श्रीसूपगङ्गांग " "
 ३ श्रीठाणांग " "
 ४ श्रीसमवायाग " "
 ५ श्रीमगवतीअग " "
 ६ श्रीज्ञाताधर्मक्यांग " "

७ श्रीउपाशकदशांग	१७ - श्रुतज्ञानाय नमः
८ श्रीअतगदशांग	१८ - श्रीअतगदशांग
९ श्रीअनुत्तरोववाइअग	१९ - श्रीअनुत्तरोववाइअग
१० श्रीप्रहनव्याकरणांग	२० - श्रीप्रहनव्याकरणांग
११ श्रीकर्मविपाकश्रुतांग	२१ - श्रीकर्मविपाकश्रुतांग
१२ श्रीउषवाइउपांग	२२ - श्रीउषवाइउपांग
१३ श्रीरायपसेणीउपांग	२३ - श्रीरायपसेणीउपांग
१४ श्रीजीवाभीगमउपांग	२४ - श्रीजीवाभीगमउपांग
१५ श्रीपक्षवणाउपांग	२५ - श्रीपक्षवणाउपांग
१६ श्रीजबूदीपपक्षतिउपांग	२६ - श्रीजबूदीपपक्षतिउपांग
१७ श्रीचदपक्षतिउपांग	२७ - श्रीचदपक्षतिउपांग
१८ श्रीमूरपक्षतिउपांग	२८ - श्रीमूरपक्षतिउपांग
१९ श्रीनिरयावलीउपांग	२९ - श्रीनिरयावलीउपांग
२० श्रीपुष्कियाउपांग	३० - श्रीपुष्कियाउपांग
२१ श्रीपुष्कचूलियाउपांग	३१ - श्रीपुष्कचूलियाउपांग
२२ श्रीकप्पियाउपांग	३२ - श्रीकप्पियाउपांग
२३ श्रीवह्निदसाउपांग	३३ - श्रीवह्निदसाउपांग
४२ श्रीचउसरणपयज्ञो	४२ - श्रीचउसरणपयज्ञो
५२ श्रीआउरपञ्चस्त्राणपयज्ञो	५२ - श्रीआउरपञ्चस्त्राणपयज्ञो
२६ श्रीभक्तपरिज्ञापयज्ञो	२६ - श्रीभक्तपरिज्ञापयज्ञो
२७ श्रीमहापञ्चस्त्राणपयज्ञो	२७ - श्रीमहापञ्चस्त्राणपयज्ञो

२८ श्रीतंबुलधैयालियपयन्नो	श्रुतज्ञानाय नमः
२९ श्रीचन्दाविजयपयन्नो	"
३० श्रीगाणिविद्यापयन्नो	"
३१ श्रीभरणसकाक्षिपयन्नो	"
३२ श्रीसथारापयन्नो	"
३३ श्रीदिवेन्द्रस्तवपयन्नो	"
३४ श्रीवशवैकालिकमूल	"
३५ श्रीध्यायदयकमूल	"
३६ श्रीपिंहनिर्युक्तिमूल	"
३७ श्रीउत्तराध्ययनमूल	"
३८ श्रीनिसीयछेद	"
३९ श्रीबृहत्कल्पछेद	"
४० श्रीव्यवहारछेद	"
४१ श्रीपचकल्पछेद	"
४२ श्रीजीतकल्पछेद	"
४३ श्रीमशानिर्मापछेद	"
४४ श्रीनन्दीसूत्र	"
४५ श्रीधनुयोगद्वार	"
४६ श्रीस्यादस्तिभगप्ररूपकायस्याद्वाद	"
४७ श्रीस्यान्नास्तिभगप्ररूपकायस्याद्वाद	"
४८ श्रीस्यादस्तिस्पाद्वास्तिभगप्ररूप-	"

कायस्याद्वाद	श्रुतज्ञानाय नमः
१ श्रीस्यादवक्तव्यभगप्ररूपकायस्याद्वाद	"
२ श्रीस्यादस्तिअवक्तव्यभगप्ररूप-	"
कायस्याद्वाद	"
३ श्रीस्यात्तास्तिअवक्तव्यभगप्ररूप-	"
कायस्याद्वाद	"
४ श्रीस्यादस्तिस्यात्तास्तिअवक्तव्य-	"
भगप्ररूपकायस्याद्वाद	"

अथ ओगणीसमा श्रुतपदना २० भद

१ पर्याय ३०	श्रुतज्ञानाय नमः
२ श्रीपर्यायसमास	"
३ श्रीअक्षर	"
४ श्रीअक्षरसमास	"
५ श्रीपद	"
६ श्रीपदसमास	"
७ श्रीसघात	"
८ श्रीसघातसमास	"
९ श्रीप्रतिपत्ति	"
१० श्रीप्रतिपत्तिसमास	"
११ श्रीअनुयोग	"

१२ श्रीअनुयोगसमास	धृतज्ञानाय नमः
१३ श्रीपाहुडपाहुडा	"
१४ श्रीपाहुडपाहुडाममास	"
१५ श्रीपाहुडा	"
१६ श्रीपाहुडासमास	"
१७ श्रीवस्तु	"
१८ श्रीवस्तुसमास	"
१९ श्रीपूर्व	"
२० पूर्वसमास	"

अथ वीसमा तीर्थपदना ३८ भेद

१ प्राणातिपातविरतिघत	श्रीसाधुतीर्थाय नमः
२ मृषावादविरतिघत	"
३ अदस्तादानविरतिघत	"
४ मैथुनविरतिघत	"
५ परिग्रहविरतिघत	"
६ पृथ्वीकायजीवरक्षाकाय	"
७ अपकायजीवरक्षाकाय	"
८ तेजकायजीवरक्षाकाय	"
९ वातकायजीवरक्षाकाय	"
१० वनस्पतिकायजीवरक्षाकाय	"

११ असकायजीवरक्षकाय	श्रीलाक्ष्मीतीर्थाय नमः
१२ क्रोधदोषरहिताय	॥
१३ मानदोषरहिताय	॥
१४ मायादोषरहिताय	॥
१५ लोभदोषरहिताय	॥
१६ रागांशदोषरहिताय	॥
१७ द्वेषांशदोषरहिताय	॥
१८ लज्जागुणयुताय	श्रीद्वैतविरतितीर्थाय नमः
१९ क्षयागुणयुताय	॥
२० मध्यस्थगुणयुताय	॥
२१ सौम्यगुणयुताय	॥
२२ गुणरागरूप	॥
२३ अक्षुद्रतागुणयुताय	॥
२४ धर्मप्रभावकगुणयुताय	॥
२५ सौम्यप्रकृतिगुणयुताय	॥
२६ जनप्रियगुणयुताय	॥
२७ मनोज्ञरूपगुणयुताय	॥
२८ पापभीरुगुणयुताय	॥
२९ असद्वगुणयुताय	॥
३० दाक्षिण्यतागुणयुताय	॥
३१ अफूरतागुणयुताय	॥

३२	सत्कथकगुणयुताय	श्रीदेशाभिरतितीर्थाय	ममः
३३	सुपक्षगुणयुताय		"
३४	दीर्घदार्शिकगुणयुताय		"
३५	विदोषज्ञगुणयुताय		"
३६	शृद्धानुगामिगुणयुताय		"
३७	विनयगुणयुताय		"
३८	कृतज्ञतागुणयुताय		"

॥ अथ वीसस्थान चैत्यवन्दन ॥

अतिशयवत महांत रूप, अनुपम गुणधारी ।
 आराधे जिनकु मङ्गल, तीर्थंकर शिष्यगामी ॥ १ ॥
 अरिहत सिद्ध प्रवचन गणी, स्थिर बहु श्रुत जान ।
 तपसी धुम दर्शन विनय, आशयकवली दान ॥२॥
 शील क्रिया तप धारिए, वैयाचव समाधि । ज्ञान
 ग्रहण श्रुत भक्ति तीर्थ, सेविते स्थाग उपाधि ॥ ३ ॥
 ए विंशति स्थानक अमल, सेवो सरधा-युक्त ।
 परमात्म सपद प्रगेद, कारक यधन युक्त, ॥ ४ ॥
 मनयणित सए सिद्धि कर, ज्ञापिक सुख भर कइ ।
 जिनको बदे भावपर, श्रीकृशलेंदु गणीइ ॥ ५ ॥

॥ अथ वीसस्थानक धुइ ॥

—०००—

निरमल आत्म मान प्रकाशक, कारक क्षायिक
भाषोजी । जिन पद वर्धक कर्म निकंजक, वीस
स्थानक भषी सेवोजी ॥ जिनवर सह जे स्थानक
सेवे, एक अनेक भव तीजेजी । धाराधन ते साधन
भावे, मन बडित मय सीजेजी ॥ १ ॥ अरिहत मिद्ध
प्रवचन आचारज, स्थविर बहु श्रुत तपसीजी ।
अत दर्शन विनयी ध्यावदपक, शील क्रिया तप
बामीजी । गणधर वैषाणव सुसमाधि, ज्ञान महण
भुत भगतीजी । प्रवचन णवीशानि पद भापक,
जिन नामिप सह जुगतीजी ॥ २ ॥ अठम उठ
उपवास आबील तप, एकाशन निज संगतेजी ।
कल्प ओलीपदमास भीतर, धाराधन बहु भागेजी
धारम टाली पौषधधारी, योग सहम जप गणित
जी । काउस्सग निज पद परिमाणे, देवपूजन श्रुत
भणियजी ॥ ३ ॥ शामन रक्षक समकितधारि, जे
सहसुर सुरि वृदाजी । सानिध करवो ते तप
कर्ता, वधते भाव अमंदाजी । धीजिनला भसूरीश्वर
शाखा, श्रीकुशलेंदु गणीदाजी । तस पद सेवक
सहलमतिगणी, जपे श्रीपालचदाजी ॥ ४ ॥ इति

आदि लाहरे ॥ बीस० ॥ १९ ॥ फलोधी मगरनी
 आधिका विविध चित्तलाप लाहरे । जनम सकल
 करवा भाणी, पट्टीज मोक्ष उपाय लाहरे ॥ बीस० ॥ २० ॥

कलश

इय वीर जिनवर तणी, आज्ञा धारे चित्तमहार ए ।
 सद्गु ठेग्य आगम तणी, रचना रुचि तप विध मारए ।
 वसु निधिसिद्धिससी, वरम, उजल वैश्रमास सुह करी
 मुनि केशरीचन्द्र गच्छपरतर, भणी स्तवना मनहूबा२१।

॥ अथ दीवालीपर्वनु गुणणो ॥

१ श्रीमहावीर स्वामि सर्वज्ञाय नमः । रात्रे बीजा प्रहरे
 २ श्रीमहावीर स्वामि पारगताय नमः । रात्रे श्रीजा प्रहरे
 ३ श्रीगौतम स्वामि सर्वज्ञाय नमः रात्रे चोपा प्रहरे
 आ गुणणानी दीवालीने रात्र बीस बीस नयकारवाली
 गदावी अठम करे तो तेरमधी छठ करे तो चउदस
 थी, उपवास करे ता दीवालीने रोज तप करे, रात्रि
 जोगी करे, अने प्रभु निर्वाण ममये देरासरमा जइने
 लाहु आदि अष्ट द्रव्य चढावे, आरती करे, वैश्य
 चदन करे, दीवालीनो स्तवन फटे, निर्वाण कल्याण
 फनो आधिकार सुणे, अने भीगौतम स्वामिनो मोटो
 रास सांभले पठे पारणो करे, इति

॥ अथ ज्ञानपंचमी पर्व अधिकार ॥

કાર્તિક સુદ્ધિ પચમી જ્ઞાન પંચમી નામથી પર્વ કહેવાય છે છા પર્વ આરાધન કરવાથી ગુણમજરી અને શરદત્તની માફક જ્ઞાનાધરણી કર્મ નાશ થાય છે, કોઠાદિ દ્રવ્ય રોગ નાશ થાય છે સર્વ ઉપદ્રવ નાશ પાય છે, સપૂર્ણ મનોરથ પૂર્ણ થાય છે.

જ્ઞાનપચમીનું ઉપવાસ સુદિર્ઘ કરવો કદાચ રોગાદિક કારણે અને ખૂલી જાય તો વડિ મા કરવો, જ્ઞાનપચમીનું તપ જઘન્યથી પાંચ માસ મધ્યમથી પાંચ વર્ષ અને પાંચ માસ અને ઉત્કૃષ્ટથી જાથ જીવ સુધી થાય છે, ઉપવાસ ધોધિતાર કરવો ધોધિતાર ન થની શકે તો તિવિદ્યાર કરે, જઘન્ય મધ્યમઉત્કૃષ્ટ જ્ઞાનપચમીનું તપ ન થની શકે તો અવશ્ય કાર્તિક સુદ્ધિ પચમીનો તો ઉપવાસ કરવો તે ઉદિવમે જાણગારેલી જ્ઞાન કોઠીને ધાગલ પાંચ અથવા એકાદન સાધીયો કરીને તેના ઉપર ફલ ફુલ ચદાવવા, પાંચ પત્તીનો દીવો કરવો થૂંક ઉછેવવો જ્ઞાન પૂજાની ઢાલ કહીને ધામક્ષેપ કરે પુસ્તક પર રોકડ નાળો ચદાવે, અને કાગલ વલમ સલેટ પેન શીસાપેન દવાલ આદિ ચદાવે દ્રવ્યપૂજા કરીને આઘપૂજા કરવી તે પ્રથમ દરિયાવાદિ પદ્ધિતક-

मीने समा० दहन मुहपाति पाडिलेहीने बे वादणा
पाच समासमणा दहने चैत्यवदन करे।

॥ अथ चैत्यवदन ॥

सकल वस्तु प्रतिभास भानु, निरमल सुख काण ।
सम्पद्दर्शन पुष्ट हेतु, भव जलानीधि तारण ॥ सजम
तप घ्राणद कद, अज्ञाण निधारण । मार विकार
प्रचार नाप, तापित जन ठारण ॥१॥ स्याद्वाक् परि-
णाम धर्म, परिणति पडिषोहण । साहु माहुणी संघ
सर्व, आराधन सोहण । मोहतिमिर विध्वन, सू-
मिध्यात्व पणामण घातम शक्ति अनत शुद्ध,
प्रसुता परगासण ॥२॥ मृति ध्रुति अर्वाधि विसुद्ध-
नाण, मणपज्जव केवल । भेद पचास क्षयोपशामिक्
एक क्षापक निरमल । दोष परोक्ष प्रथम तिही, दुग
परतक्ष दसिता सकल परतक्ष प्रकाश भास, ध्रुव
केवल अपरिमित ॥३॥ धर्म सकलनो मूल शुद्ध
श्रीपदी जिन भाखे । बाहिर अग प्रधान खघ, गण
धर सुप्रकाशे । शाखा श्रीनिर्युक्ति भाण्य, पडि
शाम्वादीपे । धरणी टीका पत्र पुष्प, सशय भा
जीपे ॥४॥ पचागी सार बोध कस्यो, जिन पचा
अगे । नदी अन्तुयोगहार, शाखा मानो मनरगे

वीर परपर जीत। अनु भव उपगारी । अभ्यासो
 आगम अगम 'निरुपम सुखकारी ॥५॥ मोह पकहर
 नीरसम, सिद्धान्त अषाधे। देवचन्द्र आणा सहित
 नय भग अगाधे ज्ञान, एश्रुतज्ञान मोहामणो सकल
 मोक्ष मुख कद । भगते सेवो भविकजन, पामो
 परमानद ॥६॥ जेकिंचि० नमुत्थुण० जावति चेइयाइ
 जावतेकेचि० नमोर्हत्त्० प्रणामु श्रीगुरुपाध० ज्ञान
 पचामिनु स्तघन जयवीय० अरिहत चेइयाण० वदण०
 अन्नत्थ० एक नवकारनु काउस्सग्ग करीने थुइ कहे,

॥ अथ थुइ (वसततिलका) ॥

देविंदवदियपएहिपम्बवियाणि, नाणाणि केवलमणो
 रि भई सुपाणि । पचावि पचम गई सियपचमीए,
 पूयात्तयो गुणरयाण जियाण टिंतु ॥१॥ पछे खमा०
 ठहने इच्छा० स० भ० पचज्ञान आराधवा निमित्त
 काउस्सग्ग करु इच्छ पचज्ञान आराधवा निमित्त
 करेमि काउस्सग्ग वदण० अन्नत्थ० कहीने पाच अथवा
 ०१ लोगस्सनो काउस्सग्ग करीने प्रगट लोगस्स कहे
 पछे समारढावाणी बोधागाढनामनी धीजी थुइ
 कहे प्रदक्षिणा होय तो प्रदक्षिणा खमा समणा पांच
 ज्ञान मयधि नमस्कार करे,

यथा पाच नमस्कार

१ श्रीमति	जानाय नमः
२ श्रीगुण	" "
३ श्रीआवधि	" "
४ श्रीमनपर्यव	" "
५ श्रीलोकालोकप्रकाशककेवल	" "

अथवा ५१ ज्ञानना नमस्कार

१ स्पर्शनेन्द्रियव्यजनावग्रह	श्रीमतिजानाय नमः
२ रसनेन्द्रियव्यजनावग्रह	" "
३ घ्राणोन्द्रियव्यजनावग्रह	" "
४ श्रोत्रेन्द्रियव्यजनावग्रह	" "
५ स्पर्शनन्द्रियअर्थावग्रह	" "
६ रसनेन्द्रियअर्थावग्रह	" "
७ घ्राणोन्द्रियअर्थावग्रह	" "
८ चक्षुरिन्द्रियअर्थावग्रह	" "
९ श्रोत्रेन्द्रियअर्थावग्रह	" "
१० मनोअर्थावग्रह	" "
११ स्पर्शनेन्द्रियइहा	" "
१२ रसनेन्द्रियइहा	" "
१३ घ्राणोन्द्रियइहा	" "
१४ चक्षुरिन्द्रियइहा	" "

श्रीमतिज्ञानाय नमः

१५ श्रोत्रेन्द्रियद्वय	१
१६ मनद्वय	३
१७ स्पर्शनेन्द्रियअपाय	११
१८ रसनेन्द्रियअपाय	११
१९ घ्राणेन्द्रियअपाय	११
२० चक्षुरिन्द्रियअपाय	११
२१ श्रोत्रेन्द्रियअपाय	११
२२ मनअपाय	११
२३ स्पर्शनेन्द्रियधारणा	११
२४ रसनेन्द्रियधारणा	११
२५ घ्राणेन्द्रियधारणा	११
२६ चक्षुरिन्द्रियधारणा	११
२७ श्रोत्रेन्द्रियधारणा	११
२८ मनोधारणा	११
२९ अक्षर	श्रीश्रुतज्ञानाय नमः
३० ध्वनक्षर	११
३१ मञ्जी	११
३२ असञ्जी	११
३३ सम्यग्	११
३४ मिथ्या	११
३५ सादि	११

३६ अनादि	श्रीश्रुतज्ञानाय नमः
३७ सपर्यवमित	"
३८ अपर्यवमित	"
३९ गमिक	"
४० अगमिक	"
४१ अगप्रविष्ट	"
४२ अनगप्रविष्ट	श्रीश्रुतज्ञानाय नमः
४३ अनुगामि	श्रीअवधिज्ञानाय नमः
४४ अननुगामि	श्रीअवधिज्ञानाय नमः
४५ पर्द्धमान	श्रीअवधिज्ञानाय नमः
४६ हायमान	श्रीअवधिज्ञानाय नमः
४७ प्रतिपानि	श्रीअवधिज्ञानाय नमः
४८ अप्रतिपानि	श्रीअवधिज्ञानाय नमः
४९ ऋजुमति	श्रीमनापर्यवज्ञानाय नमः
५० विपुलमति	श्रीमन पर्यवज्ञानाय नमः
५१ लोकालोकप्रकाशक	श्रीकेवलज्ञानाय नमः

पछे (ॐ ह्रीं नमोनाणस्स) आ पदनी २० मात
 फेरधी, आठ थुहधी देघ रांदया, अने स्थिरता हो
 तो ११ अगनी सज्जाय सामले पौपध लीधेलो होय
 भीजे दिवसे पौपध पालीने द्रव्यपूजा करे शील
 ये दक पडिकमणु आदि आवकनी करणी करे उजम

आदिनी बीजीविधि ज्ञानपचमीना मोटा म्त्वनयी
जाणवी

अथ प्रथम आचारागनी सज्ज्ञाय ६०

(ढाल हठीलानी)

पहेलो अग सोहामणारे लाल, अनुपम आचारांगरे
सुगुणनणनर । रीर जिणदेभाखियारे लाल, उववाइ
जास उपागे सुगु० ॥१॥ बलिहारि ण अगनीरे लाल
हु जाउ वारवाररे सु० । विनये गोचरी आदरेरे लाल,
जिहासाधु तणो आचररे ॥सु०॥ सुयग्घ ढोय छे
जेहनारे लाल, प्रवर अध्ययन पचयीसरे सु० ॥ उदे-
शादिक जाणीयेरे लाल, पिन्धाशी सुजगीशरे सु० ।
ब० ॥३॥ हेतु जुगति करी शोभतारे लाल, पद अढारे
एजाररे सु० ॥ अक्षर पदने छेहडेरे लाल, मर्याता
श्रीकाररे सु० ॥३०॥४॥ गमा अनता जेहमारे लाल,
बलि अनत पर्यायेरे सु० । असपरित्ततो छे इहारे लाल
थावर अनत कणायरे सु० ॥४०॥५॥ नियद्व निका-
चित्त शाश्वतारे लाल, जिन प्रणीत ण भावरे सु० ।
सुणता आतम उल्लामेरे लाल, प्रगटेसफज एमावरे
सु० ब० ॥६॥ सुगुण आवक धाविकारे लाल, अगेध-
रीय उल्लामेरे सु० । विधि पूर्वक तुमेसामलोरे लाल,
गीतारथ गुरुपासरे सु० ब० ॥७॥ ण सिद्धात महिमा

जिलोरे लाल, उतरे भयपाररे सु० । विनयचन्द्र कहे
माहरेरे लाल, एहीज अग आधारे सु० । १०॥८॥इति

॥ अथ बीजी सुयगडागनी सज्जाय ॥

(डाल रमीयानी) बीजोरे अग तुमे सांभलो,
मनोहर श्रीसुगडाग (मोरा साजन) अणसे त्रेसठ
पाखडी तणो, मत खडयो धरि रग मो० ॥१॥ मीठीरे
लागे वाणी जिन तणी, जागे जेहथीरे ज्ञान मो० ।
ए वाणी मनभावी माहरे, मानु सुधारे समान मो० ।
मीठी० ॥२॥ राय पसेणी उपाग ठे जेहनो, ए तो सूत्र
गभीर मो० । बहुश्रुत अरथ जाणे सह, क्षीरनीर
धनुर तीर मो० । मी० ॥३॥ एहनारे सुयखध दोयछे,
बलि अध्ययन त्रेवीश मो० । उद्देशा ममुद्देशा तिहा
भला, मग्याये त्रेवीश मो० मी० ॥ ४ ॥ नयनिक्षेप
प्रमाण भर्या, पद छत्तीस हजार मो० । सरयाता
अक्षर पठमाहे, कुणलहे तेहनोरे पार मो० । मी० ॥५॥
गमा अनता पर्याय घली, भेद अनत जिणमारे मो०
गुण अनत अस परिच्छ कर्ष्या, थावर अनत जेमाहिं मो०
मी० ॥६॥ निषट्टनिकाचित जेमा सयकडा, जिनपत्र
त्तारे भाव मो० । भाखीरे सुन्दर एह प्ररूपणा, चरण
करणोरे जाव मो० । ॥७॥ करीये भगत जुगति ए

सुप्रती, निधय लहायेरे मुक्ति मो० । विनयचन्द्र कहे
 प्रगटे प्रगटे गह्यी, आतम गुणनीरे शक्ति मो० मी० ॥८॥

॥ अथ त्रीजी ठाणागनी सज्झाय ॥

(दान-आठ टके ककणो लीयोरी-ए चाल)

त्रीजो अग भलो कह्यो रे जिनजी, नामे श्री
 ठाणाग मोरो, मन मगन थयो, हारे देखी देखी
 भाव, हारे जीवा जीव राभाध, मोरो० । सपल जगत
 करी छाजतोरे जिनजी, जोयाभिगम उपाग मो० १॥
 एह अग मुझ मन धन्योरे जि० जिम कोकिल दल
 श्रंष मो० गुहिर भायकर जागतोरे जि० ध्याजतो एह
 पाल्य मो० ॥२॥ कूट गोल शिखरी शिलारे जि०
 कान नमे पलि कूट मो० । गह्वर आगर द्रह नदीरे
 जि० जेहमे अछेरे उदद मो० ॥३॥ दशठाणा अनि
 दीपनारे जि० गुण पर्याय प्रयोग मो० । परित्त
 जेहिनी याचनारे जि० मत्प्याता अनुयोगमो० ॥४॥
 श्रेष्ठ शिलोक निजुत्तसुरे जि० संगरणी पटिचित्त
 मो० । ॥५॥ महु मत्प्याता जिहारे जि० सृगतां उलसे
 पित्तमा० ॥६॥ सुयमघ एक राजतोरे जि० दश
 अप्यपन उठारमो० उद्देशादिक धीशछेरे जि० पद
 बहुतर हजारमां० ॥७॥ रागी जिनशासन प्रपारे

जि० सुणे सिद्धात वपाण मो० । विनयचन्द्र कहे
त हुबरे जि० परमारथता जाण मो० ॥७॥ इति

॥ अथ चौथी समवायागनी सज्ज्ञाय ॥

(दाट-थारा महिला उपर मेढ झरोके वीजली-ए चाल)

चौथी समवायाग सुणो श्रोता गुणी हो लाल,
सुणा० । पद्मपणा उपाग करी शोहावणी हो लाल,
करी० ॥ अरथ मागरी भाषा शाखा सुरतणी, हो
लाट, शाखा० । समकिन भाव कुसुम परिमल
व्यापी घणो हो लाल, परि० ॥१॥ जीव अजीवने
जीव जीव ममासधी हो लाल, जीव० । लहीये
एहधी भाव विरोध काइ नथी हो लाल, विरोध
भागा तीन स्व समयादिकना जाणिये, हो लाल,
यादि० । लोक अलोकने लोकालोक बग्वाणीये हो
लाल, लोक ॥२॥ एक थकी छे सात समवाय प्ररूपणा
हो लाल, मम० । कोडा कोड प्रमाणक जीव निरूपणा
हो लाल जी० । धारसाविह गणिपिटक तणी सग्धा
करी हो लाल, त० । शाश्वता अरथ अनतक छे
एहना सरी हो लाल, छे ॥ ३ ॥ सुयखध अर्घ्ययन
उद्देशादिके भला हो लाल, उ० । सख्याए एक एक
गुणानिला हो लाल, प्र० । पद एक लाख

सोमालीस सहस्र तेउत्तरा हो लाल, स० । प्रदने
 अग्रउग्र मरुपाता अक्षरा हो-लाल, स० ॥ ४ ॥
 भाष्यचूरणि निर्युक्ति करी सोढे मदा हो लाल, क० ।
 सुणना भेद गभीर, त्रिपत्त न होय कदा हो-लाल,
 त्रि० । जेह नमावे अगकी अतरगति हमी हो लाल
 अ० । जनवचने जोर कृण न हुये खुसी हो लाल,
 कु० ॥ ५ ॥ जाणु गो घरम सनेह जिणदसु माहरो हो लाल,
 जि० । तजिया-शास्त्र मिध्यान सूत्र जाण्यो खरो हो
 लाल, घ० । जिम माल नी लही भृग-करीरे नवि-रहे
 हो लाल, क० । इश्वर गिरसुरगगतजी परिनवि घडे-
 हो लाल, त० ॥ ६ ॥ ष प्रवचन निग्रथ तणो-जुगते
 बडो हो लाल, जु० । शाकर सेलडी द्राग्व थकी पण-
 मीठडो हो लाल, थकी० । स्यु कहिये बहु-वात विनय-
 चद इम कहे हो लाल, वि० । एहना सुणीने भाव
 थोता अति गहगहे हो लाल, धा० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ (५) भगवतीसूत्रनी सज्ज्ञाय ॥

('ढाल-पथीगेनी') ॥ १ ॥

पचम अगे भगवती जाणीयेरे, जिहां जिनवरना
 घचन अथाघरे । हिमवत-परवत सेती-नीकल्यारे,
 मानु पर-नक्ष-गगा प्रवाहरे । पच० ॥ १ ॥ सूरपन्नसी

नामि परगटी रे, जेहनी छे उद्दाम उपांगरे । सूत्र
 तणी रचना दरीयाजिसीरे, माहिला अरथ ते सजल
 तगरे । प० ॥२॥ इहाँ तो सुयस्य एक अति भलोरे
 एकमो एक अर्थयन उदाररे । दश हजार उद्देशा
 जेहनारे, जिहाँकियो प्रश्न छत्रीस हजाररे । प० ॥३॥
 पदतो क्षाप लाव अरथे भपीरे, उपरि महस
 अठपासी जाणरे, लोकालोक स्वरूपनी वर्णनारे,
 विवाह पत्रती अधिक प्रमाणरे । प० ॥ ४ ॥ करीये
 पूजा अने परभचिनरे, धर्मिये सदगुरु उपर रागरे
 सुणीये सूत्र भगवती रागसुरे, तो होय भवसागरनो
 त्यागरे । प० ॥५॥ गीतमनामि द्रव्य चढाहयेरे, सम्पग
 ज्ञान उदय होय जेमरे । कीज साधु तथा साहमी
 तणीरे भगति जुगति मनआणो प्रेमरे प० ॥६॥ इण
 विधि सु ण्ह सूत्र आराधनारे, इणभवमीक्षे वछित
 काजरे । परभर विनयचन्द कहे ते लहेरे, मोहन
 मुग्निपुरीनो राजरे । प० ॥७॥ इति

॥ अथ (६) ज्ञातासूत्रना सज्झाय ॥

(ढाल-कितलख लागी राजाजीरे मालिने-ए देशी)

छटा अङ्ग ते ज्ञातासूत्र चव्वाणीयेजां, जहना
 अधिक उद्दहो, ह्यारा सुणजो धरिनेह

मिर्दाननी घातहीजी । श्रवणे सुगता गाढो रस
 उपजेजी, मयुरता तार्जित जिम मधुग्वड हो, ह्यारा०
 ॥१॥ जन्महीषपद्यत्ती उपांग जेहनोजी, इणमाहे जिन
 पूजानी पिधिजो रहो । ह्या० । अर्चिक सुणि परम
 शक्तिरम अनुभवेजी, चर्चिक सुणिकरे मममोर हो ।
 ह्या० ॥२॥ नगर उद्यान चैत्यवन गंडसोह मणोजी
 समवसरण राजाना मातने तातहो, ह्या० । धर्मा-
 चारज धर्म कथा निहा दाखवीजी, इह लोकपरलाक
 रुद्धि विशेष सुहातहो, ह्या० ॥३॥ भोगे परि त्याग
 प्रव्रज्या पर्यवाजी, सूत्रपरिग्रह वारुतपउपधान हो ।
 ह्या० । सतेहण पचत्खाण पादपोपगमनताजी,
 स्वर्गगमन शुभकूल उनपत्ति हो । ह्या० ॥४॥ योधि
 लाभ बलितने अनाक्रिया कहीजी, धर्म कथानां
 योगे उ सुयपेध हो । ह्या० । पहिलाना उगणीश
 अध्ययनने घाज छे जी, बाजाना दशवर्ग महा
 अनुषय हा ह्या० ॥५॥ उठकोही तिहां संपल कथानक
 भाषियाती, भाष्यावलि उगणीश उद्देश हो ह्या० ।
 मरुपना हजार भला पद एहनाजी, एहथेकी जाये
 कुमति कलेश हो ह्या० ॥६॥ दिनये करे जे गुरुनो
 पहु परेजी, तेहन श्रुत सुगता पहु फल होय हो ।
 ह्या० ते रामिया मनवसि या दिनपचदनेजी,

सोमं हेमिने ज्योषां एकके दोषहो ह्यां ॥७॥ इति

अथ (७) उपासकदशासूत्रनी सञ्ज्ञाय

(ढाल-बिछियानी)

हये मातमो अगते माभलो उपासकदशा
नामे चगरे । श्रमणोपाशकनो चर्णना, जसुचदपन्ननी
उपांगरे ॥१॥ मनलागो मोरोसूत्रधी, एतो भववेराग
तरगरे । रमराता ज्ञाता, गुण, लहे, परमारथ सुवि-
हित सगरे । मन० ॥ २ ॥ इया अगे सुयखध एक छे,
अध्ययन उद्देश विचाररे । दशदश सख्याये दाग्व
ख्या, पदपिण सख्यात हजाररे । म० ॥ ३ ॥ आणदा-
दिक आयण तणो, सुणतां, अधिकार रसालरे । रस
लागे जागे मोहनी, श्रोता जनत, ततकाररे । म०
॥ ४ ॥ श्रोता आगलतो वांचना, गीतारथ पामे
रीशरे । जे अर्द्धदग्ध समझे, नही तेहसु तो करवी
धीजरे । म० ॥ ५ ॥ दश आवक तो इहां भाखिया,
पण सूत्र भण्यो नही कोयरे । ते माटे शुद्ध आवक
भणी, एक अरथनी धारणा होयरे । म० ॥ ६ ॥
साचो होय ते प्ररूपीये, निस्मक पण, सुजगीशरे ।
कविविनयचद-कहे स्यु थयो, जो कुमति करस्ये
रीशरे म० ॥ ७ ॥ इति

५८। अथ (८) अतगडदशांगनी सज्जाय ॥

(ठाले वीरवखाणी राणी चेलणाजी ए देशी)

आठमा अतगडदशांगनी, सुणी-करो कान
 पवित्र, अतगड, केवली जे थयाजी, तेहनारे इहां
 आठ चरित्र ॥१॥ कर्म कठिन दल चूरताजी पूरता
 जगतनी आस ।- जिनवर, देव-इहा, आमताजी,
 आश्ववता अरथ सुविलाश, ॥ आठ० ॥ २ ॥ सकल
 अनिक्षेप नय भगयीजी, अगना, माव अभाग । सहज
 सुखरगनी तल्पिकाजी, कल्पिका जासु उपांग ॥
 आठ० ॥ ३ ॥ एक सुपखघ, इण-अगनोजी, चर्ग छे
 आठ अभिराम । आठ उद्देशा छे बलिजी, सख्याता
 सप्त, पदठाम, ॥ आठ० ॥ ४ ॥ आठमा अगना
 पादमंजी, पहवो, अच्छरे म्ठीठाम । सुरस अनुभव रस
 उपजेजी, सपजे पुन्यती, रास ॥ आठ० ॥ ५ ॥ विषय
 लपट नर जे हुवेजी, निरविषयी सुण्या, ध्याय । जिम
 महाविष विषधर तणोजी नागमत्रे सुण्या जाय ॥
 आठ० ॥ ६ ॥- अमृत, वचने, सुग्न तरसतीजी, सर-
 स्वनी करोरे पमाय । जिम विनपत्र इण सुघनाजी
 तुरत, छहे अभिप्राय ॥ आठ० ॥ ७ ॥ इति

अथ (९) अनुत्तरोपवाङ् अग सज्ज्ञाय ॥

(ढाल-नणदल रिदली ले-ए देशी ॥

नवमो अग अनुत्तराववाङ्, एहनी रूचि सु
 जाई हो । (आवक सूत्र सुणो) सूत्र सुणो
 आणी, एतो धीतरागनी घाणीहो ॥ आ० ॥
 जसु कल्पावतासिका नामे, सोए उपाग प्रकारे हो
 आ० ॥ एतो आगेमन अनुकूल, मानुं मेरे शिव
 नी घुलाहो ॥ आ० ॥ २ ॥ एतो सूत्रना नाम सु
 जे, तिमतिम अतर गति भी जेहो ॥ आ० ॥ प्र
 नवल सनेहा, एधी उलमे मारी देहा हो ॥ आ०
 ॥ ३ ॥ अनुतर सुरपद पाया, तेहना गुण इणमें गा
 हा ॥ आ० ॥ नगारादिक भाष घाखाण्या, ते
 छेठे अगे आण्याहो ॥ आ० ॥ ४ ॥ इहा एक सुय
 वारू, प्रेण वर्ग घलि मनोहारा हो ॥ आ० ॥ उहे
 प्रणे सनूरा, सरयाता सहस पद पूरा ॥ आ० ॥
 सूत्र सुणावु अमे तहने, साची थदा हुये जेहने हा
 आ० ॥ आताधी प्रीत लंगावुं, निदकने मुह
 लंगावुहो ॥ आ० ॥ ६ ॥ जे सुणतां करे घकोर ते
 माणम नहीं पेण दोरे हो ॥ आ० ॥ कवि विनयच
 कहे साचो श्रुत रगे सहु काई राचाहो ॥ आ० ॥ ७

अथ (१०) प्रश्न व्याकरणाग सञ्ज्ञाय ॥

(दाल-आधा आम पधारी पूज्य-ए देशी)

दशमो अग-सुरग सुहावे, प्रदन व्याकरण
 मे। सूत्र कल्पतरु सेवे ते तो, चिदानन्द फल पामे।
 वो आधो गुणना जाण, तुमने सूत्र सुणावु ॥१॥
 कला ज्यु, परिमूल महके गुरु परागने राग।
 म उपाग पुष्पिका षडनो, जोर जुगति करी
 ने ॥ आ० ॥ २ ॥ अगुष्टादिक जिहा, प्रकाश्या,
 तादिक अति रूढा। ते छे, अष्टोत्तर सत ऐ तो,
 म मध्य मणि चूडा ॥ आ० ॥ ३ ॥ आश्रवद्वार
 च ईर्षा आपणा, पाचे-सर द्वारा। महामन्त्र
 णीमां लहीये, लब्धि भेद सुखकारा ॥ आ० ॥ ४ ॥
 पयघ एक छे दशम अगे, पण घालीम अज्ञयणा
 ग पालीम उद्देश चली पद, महस मरुयात नीर-
 णा ॥ आ० ॥ ५ ॥ जे नर सूत्र सुग नही काने, केवल
 पे काया। माया माहि रहे लपटाणा, ते नर
 म हीज आया ॥ आ० ॥ ६ ॥ सूत्रमाहे तो मारग
 रोय छे निश्चय नय व्ययहारा। विनयचद कहने
 प्रादरिये तजि मन मदन चिहारा ॥ आ० ॥ ७ ॥ इति

अथ (११) : विपाकसूत्रनी सज्ज्ञाय ॥ १ ॥

(ढाल-कडखानी)

मृणारे विपाक श्रुत अंग इग्यारमो, तजो
 विकथा वृथा जे अनेरी । ललित उपाग जसु प्रवर
 पुष्पचूलिका, मूलिका पाप आतक केरी ॥ सुणो ०
 ॥ १ ॥ अशुभ किंपोक सम दुष्कृत फल भोगवी,
 नरकमा गरक थया जेह प्राणी । सुकृत फल भोगवी
 स्वर्गमा जे गया; ताम चक्रव्यता इहा आणी ॥
 सु० ॥ २ ॥ दोष श्रुत गधने वीश अध्ययन बली,
 वीश उद्देश इहा जिन प्रयुजे । सहस सख्यात मद
 क्रुद मच क्रुद जिम, पहुल परिमल अमर चित्त
 गुजे ॥ सु० ॥ ३ ॥ मरस चपकलना सुरभि सहुने रुचे,
 अन्य डपगारनी बुद्धिमाटे । सूत्र उपगार तेहथी
 सयल जाणीये, जेहथी पुरुष सुख अचल खाटे ॥ सु०
 ॥ ४ ॥ रन्धने मोक्षना चिड कारण अछे, दुष्कृतने
 सुकृत जोवो विचारी । दुष्कृतने परिहरी सुकृतने
 आदरी, जिन धर्मे धारिये गुण सभारी ॥ सु०
 ॥ ५ ॥ मंकररे मकर निंदा निगुण पारकी, नारकी
 तणी गति कांइ याचे । नारकी प्रकृति तजि सहजे
 मतोप नज, लाग श्रुत सांभली घरम घन्चे ॥ सु० ॥ १ ॥

मुलने हुल्ल बिपाके कल दाखार्या, अंग इग्यारमे
बीतरंगे । फिर जयो बीर शासन जिहां सूत्रपी,
कवि दिनपचंद गुण ज्योति जोगे ॥सु०॥ ७ ॥

॥ कलशं ॥

(दोह-बदावनी)

अंग इग्यारह में धुपया, साहेलीए । आज बया
रगरोलकि, सानही सूत्रमांहि ऐहनो ॥सा०॥ भार्यो
सर्व निचोल ॥ सा० ॥ १॥ नहेलीए आज पचामणी,
पसरी अंग इग्यारनी ॥सा०॥ मुह मन मडप बेलकि,
सा० ॥ सींनु ते हरखे करी, सा०॥ अनुभव रसनी रेल
की, सा० ॥ २॥ हेज धरी जे सांभले, सा०॥ कुंय बुहा
कुण बालकि, सा० ॥ तोते फल लहे फूडरा, सा० ॥
स्वादे आतिहि रसालकि, सा० ॥ ३॥ हरख अपार बरि
हाये, सा० ॥ अहम्मदाबाद महारकि, सा०॥ भास
करीए अगनी, सा०॥ बरत्या जपजबकारकि, सा०॥ ४॥
सबत सतर पचावने, सा० ॥ बरिसा कतुे नम भासकि,
सा०॥ दशमी दिन शुदि प्रक्षमां, सा०॥ पुरणे यई मन
आशकि, सा० ॥ ५॥ श्रीजिनधर्मबुरि पाटपी, सा० ॥
श्रीजिनधर सूरि बाकि, सा० ॥ खरतरे गळना

हरण निधानजी, सा० ॥ ज्ञान तिलक सुपसायाकि,
 सा० ॥ दिवसचन्द्र कहे नै करी सा ० ॥ अग इग्यार
 सख्यापकि, साहे० । ७ ॥

॥ इति ज्ञानपचमी आराधन विधि सपूर्णम् ॥

॥ अथ मौनएकादशी पर्व आधिकार ॥

अगशिर सुदि ११ इग्यारम मौन एकादशी नामधी,
 पर्व प्रसिद्ध छे, आ दिवसे १५० दोहसो जिन कल्या-
 णक थया छे, यथा श्रीमाल्लिनाथना जन्म १ वीक्षा १
 केवलज्ञान १ अण कल्याणक धी अरनाथनी वीक्षा
 १ कल्याणक अने श्रीनमिनाथनो केवलज्ञान १ कल्या-
 णक थयो छे, तेथी जाधर्त्तमान चौबीशीमां पांच
 कल्याणक थया एवी रीते धीजा चार भरत अने
 पांच ऐरवतने विधे पांच पांच कल्याणक होवाधी
 वषा क्षेत्र सम्बंधि १० वर्त्तमान जिन चौबीसीमा १०
 पचास कल्याणक थया बली अतोत वर्त्तमान अने
 अनागत १० जिन चौबिशीमां १५० दोहसो कल्या-
 ण थाय छे, ते कारणधी आ दिवस पर्व त के मोटो
 गण थ छे, बली आ दिवसे मान साहित उपवास
 क बां, प्राक्क हाय तो पोपत्र करबो तेनी पण शक्ति
 होय तां देशाधगाशिक के सामायिक अवश्य

काशो, अने पोषध आदि व्रतमां मौनपणे १५०
 मालानो गुणगो को, आ तप जघन्यथी -११ मास
 मध्यमथी ११ वर्षे अने ११ मास उत्कृष्टथी, जाव
 जीव सुधी उपवास आदिथी सुदि एकादशी
 आराधे, कशाच रोगादि कारणे वक्ष्मी-करे तो व्रत
 भग न धाय, आपण न वनी शकेतो मागशिर सुदि
 मौन एकादशाने दिवस उपवासादि कधी आ पर्वनी
 आराधना के, तथा ११ खमाममणा ११ सार्थीया
 ११लागपनो काउस्मत् (श्री मल्लिनाथ सर्वज्ञाय नमः)
 आ पदना २० माला आ धीना वरेक शुदि ११ ने
 दिवसे करवा. बीजी प्रतिक्रमण आदिक्रिया इत्य
 कृत्यनी माफक समजथी, आ व्रत पूर्ण धणे उते
 ज्ञानपवमनी माफक उजमणां समजथी, पण एतल्लु
 विशेष छ के पाच पांच वस्तुने ठेकाणे इग गर इग्यार
 वस्तु समजथी

अथ मौनएकादशीनो १५० गुणगो

[१] जवद्वीप भरतक्षेत्र अर्नाम इति

शोशोशी पाच कल्याणक नाम

४ श्री महायश

सर्वज्ञाय नमः

५ श्रीसर्वानुभूति

शुद्धिते नमः

६ श्रीसर्वानुभूति

उत्तमोपाय नमः

हरण निधानजी, सा० ॥ ज्ञान तिलक सुपसायाके,
 सा० ॥ दिवसचन्द्र कहे में करी सा • ॥ अग इग्यार
 सज्जापकि, साहे० । ७ ॥

॥ इति ज्ञानपचमी आराधन विधि सपूर्णम् ॥

॥ अथ मौनएकादशी पर्व अधिकार ॥

मगशिर सुधि ११ इग्यारम मौन एकादशी नामधी
 पर्व मंसिद्ध छे, आ दिवसे १५० दोहसो जिन कल्या
 णक थया छे, यथा श्रीमाल्लिनाथना जन्म १ दीक्षा २
 केवलज्ञान ३ आ अण कल्याणक थीअरनाथनी कीक्षा
 ४ कल्याणक अने श्रीनमिनाथनो केवलज्ञान १ कल्या
 णक थयो छे, तधी आधर्त्तमान चौबीशीमां पांच
 कल्याणक थया एवी रीते थीजा चार भरत अने
 पांच ऐरधने विधे पांच पांच कल्याणक होवाधी
 द्वा क्षेत्र सम्बंधि १० वर्त्तमान जिन चौबीसीमा ५०
 पचास कल्याणक थया बली अतोत वर्त्तमान अने
 अनागत ३० जिन चौबीशीमां १५० दोहसो कल्या
 ण थाय छे, ते कारणधी आ दिवस पर्व तीके मोटो
 गण व छे, बली आ दिवसे मान साहित उपवास
 क था, शक्ति हायतो पोपप्र करबो तेनी पण शक्ति
 होयतो देशाधगाशिक के सामायिक अवश्य

क्रावो, अने पोषध आदि व्रतमां मौनपणे १५०
 मालाना गुणगो करे, आ तप जघन्यधी ११ मास
 मध्यमधी ११ वर्ष अने ११ मास, उत्कृष्टधी जाव
 जीव सुधी उपवास आदिधी, सुदि एकादशी
 आराधे, कदाच रोगादि कारणे बदली करे तो व्रत
 भग न थाय, आपण न बनी शकेतो मागशिर सुदि
 मौन एकादशीने दिवस उपवासादिधी आ पर्वनी
 आराधना करे, तथा ११ खमाममणा ११-सार्धिया
 ११ (नागः पुरो काउस्मा (बो मल्लिनाथ सर्वज्ञाय नमः)
 आ पदना २० माला आ धीना दरेक शुदि ११ ने
 दिवसे करवा. बीजी प्रतिक्रमण आदिक्रिया इत्य
 कृत्यनी माफक समजवो, आ व्रत पूर्ण थये छेते
 ज्ञानपत्रमनी माफक उत्तमणो समजवो, पण एतल्लु
 विशेष छे के पांच पांच वस्तुन ठेकाणे इग गार इग्यार
 वस्तु समजवी

अथ मौनएकादशीनो १५० गुणगो

[१] त्रवृद्धीप भरतक्षेत्र अर्मान जित्त]

चाबीशी, पांच कल्याणक नाम

- | | |
|-------------------|--------------|
| ४ श्री महायश | सर्वज्ञाय नम |
| ५ श्रीसर्वानुभूति | सुहृते नमः |
| ६ श्रीसर्वानुभूति | ऋतेषु नमः |

६ श्रीलघांशुमूर्ति सर्वज्ञाय नमः
 ७ श्रीधर नाथाय नमः

[२] जंबूद्वीप भरतक्षेत्रे वर्तमान जिन

चौबीसी पांच कल्याणक

१८ श्रीधर नाथाय नमः
 १९ श्रीमल्लि अर्हते नमः
 १९ श्रीनल्लि नाथाय नमः
 १९ श्रीमल्लि सर्वज्ञाय नमः
 १९ श्रीनमि सर्वज्ञाय नमः

[३] जंबूद्वीप भरतक्षेत्रे अनागत जिन

चौबीसी पांच कल्याणक

४ श्रीस्वपयसु सर्वज्ञाय नमः
 ५ श्रीदेवधुत अर्हते नमः
 ६ श्रीदेवधुत नाथाय नमः
 ६ श्रीदेवधुत सर्वज्ञाय नमः
 ७ श्रीउदय नाथाय नमः

[४] धातकी खड्ग पर्व भरते अनीत जिन

चौबीसी पांच कल्याणक

१४ श्रीअकलक सर्वज्ञाय नमः
 १५ श्रीशुभकर अर्हते नमः
 १५ श्रीशुभकर नाथाय नमः

६ श्रीशुभकर

सर्वज्ञाय नमः

७ सप्त

नाथाय नमः

(५) आतकीखंडे पूर्वभरते अज्ञान जिन

श्रीषीसी पांच कल्याणक

१८ श्रीगांगीलनाथाय नमः

१९ श्रीगुणनाथअर्हते नमः

१९ श्रीगुणानाथनाथाय नमः

१९ श्रीगुणनाथसर्वज्ञाय नमः

२१ श्रीब्रह्मद्रमर्वज्ञाय नमः

(६) आतकी खंडे पूर्वभरते अनागत जिन

श्रीषीसी पांच कल्याणक

४ श्रीसंप्रातिसर्वज्ञाय नमः

६ श्रीमुनिनाथअर्हते नमः

६ श्रीमुनिनाथनाथाय नमः

६ श्रीमुनिनाथसर्वज्ञाय नमः

७ श्रीविशिष्टनाथाय नमः

(७) आतकीखंडे पश्चिमभरते अतीत जिन

श्रीषीसी पांच कल्याणक

४ श्रीसर्वाथसर्वज्ञाय नमः

६ श्रीहरिभद्रअर्हते नमः

६ श्रीहरिभद्रनाथाय नमः

६ श्रीहरिमूर्धन्यनाथाय नमः

७ श्रीमन्महादेवाय नमः

(८) घातकीखण्डे पश्चिमभू त वर्तमाने जिन

चौथीसी पांच कल्याणक

१८ श्रीमहामिहनाथाय नमः

१९ श्रीजज्ञोभमर्धने नमः

१९ श्रीजज्ञोभनाथाय नमः

१९ श्रीजज्ञोभमर्धनाथाय नमः

२१ श्रीप्रयच्छमर्धनाथाय नमः

(९) घातकीखण्डे पश्चिमभूतने अनागत जिन

चौथीसी पांच कल्याणक

४ श्रीआदिकरसर्धनाथाय नमः

६ श्रीधनदधर्धने नमः

६ श्रीधनदनाथाय नमः

६ श्रीधनदमर्धनाथाय नमः

७ श्रीपापनाथाय नमः

(१०) पुष्करादि पूर्वमाने अगत जिन

चौथीसी पांच कल्याणक

४ श्रीमृदुनाथाय नमः

६ श्रीव्यक्तधर्धने नमः

६ श्रीव्यक्तनाथाय नमः

६ श्रीव्यससर्वज्ञाय नमः

७ कृशाशतसर्वज्ञाय नमः

(११) पुष्करार्द्र पूर्वभरते वर्तमान जिन
चोवीसी पाच कल्याणक

१८ श्रीअयोगनाथाय नमः

१९ श्रीयोगनाथअर्हते नमः

१९ श्रीयोगनाथाय नमः

१९ श्रीयोगनाथसर्वज्ञाय नमः

२१ श्रीअरण्यवाससर्वज्ञाय नमः

(१२) पुष्करार्द्र पूर्वभरते अनागत जिन
चोवीसी पाच कल्याणक

४ श्रीपरमसर्वज्ञाय नमः

६ श्रीशुद्धार्तिअहते नमः

६ श्रीशुद्धार्तिनाथाय नमः

६ श्रीशुद्धार्तिसर्वज्ञाय नमः

७ श्रीनिष्केशनाथाय नमः

(१३) पुष्करार्द्र पश्चिमभरते अनागत जिन

चोवीसी पाच कल्याणक

४ श्रीमलयसर्वज्ञाय नमः

६ श्रीचारिअनिधिअर्हते नमः

६ श्रीचारिअनिधिनाथाय नमः—

६ श्रीचारित्रनिघिसर्वज्ञाय नमः

७ श्रीप्रशमजितनाथाय नमः

(१४) पुष्करार्द्ध पश्चिमभरते वर्तमान जिन
चौबीसी पांच कल्याणक

१८ श्रीप्रसादनाथाय नमः

१९ श्रीविपरितअर्हते नमः

१९ श्रीविपरितनाथाय नमः

१९ श्रीविपरितसर्वज्ञाय नमः

२१ श्रीस्वामिसर्वज्ञाय नमः

(१५) पुष्करार्द्ध पश्चिमभरते अनार्गत जिन
चौबीसी पांच कल्याणक

४ श्रीअघटितसर्वज्ञाय नमः

५ श्रीअमणेंद्रअर्हते नमः

६ श्रीअमणेंद्रनाथाय नमः

६ श्रीअमणेंद्रसर्वज्ञाय नमः

७ श्रीस्वामिअमणेंद्रनाथाय नमः

(१६) जवद्वीपे ऐरबतक्षेत्रे अतीत जिन
चौबीसी पांच कल्याणक

४ श्रीद्विपांतसर्वज्ञाय नमः

५ श्रीअभिनन्दनअर्हते नमः

- ६ श्रीअभिनन्दननाथाय नमः
 ६ श्रीअभिनन्दनसर्वज्ञाय नमः
 ७ श्रीरत्नेष्वानाथाय नमः

(१७) जम्बूद्वीपे ऐरवतक्षेत्रे वर्त्तमान जिन
 चौबीसी पांच कल्याणक

- १८ श्रीअतिपार्श्वनाथाय नमः
 १९ श्रीमरुदेवअर्हते नमः
 १९ श्रीमरुदेवनाथाय नमः
 १९ श्रीमरुदेवसर्वज्ञाय नमः
 २१ श्रीशामकोटसर्वज्ञाय नमः

(१८) जम्बूद्वीपे ऐरवतक्षेत्रे अनागत जिन
 चौबीसी पांच कल्याणक

- ४ श्रीनदिपेणमर्यज्ञाय नमः
 ५ श्रीव्रतघरअर्हते नमः
 ६ श्रीव्रतघरनाथाय नमः
 ६ श्रीव्रतघरसर्वज्ञाय नमः
 ७ श्रीनिर्वाणनाथाय नमः

(१९) घातकीखण्डे पृथ्वैरवते अतीत जिन
 चौबीसी पांच कल्याणक

- ४ श्रीसौदयसर्वज्ञाय नमः
 ६ श्रीत्रिविक्रमअर्हते नमः

६ श्रीत्रिविक्रमनाथाय नमः

६ श्रीत्रिविक्रमसर्वज्ञाय नमः

७ श्रीनरसिंहनाथाय नमः

(२०) घातकीर्ण्डे पूर्वपेरघतक्षेत्रे वर्तमान जिन

चौधीसी पाच कल्याणक

१८ श्रीकामनाथाय नमः

१९ श्रीसतोपितअर्हते नमः

१९ श्रीसतोपिननाथाय नमः

१९ श्रीसतोपितसर्वज्ञाय नमः

२१ श्रीखेमसर्वज्ञाय नमः

(२१) घातकीर्ण्डे पूर्वपेरघतक्षेत्रे घनागत जिन

चौधीसी पाच कल्याणक

४ श्रीमुनिनाथसर्वज्ञाय नमः

६ श्रीचन्द्रदाहअर्हते नमः

६ श्रीचन्द्रदाहनाथाय नमः

६ श्रीचन्द्रदाहसर्वज्ञाय नमः

७ श्रीद्विलादित्यनाथाय नमः

(२२) घातकीर्ण्डे पार्श्वपेरघतक्षेत्रे अतीत जिन

चौधीसी पांच कल्याणक

४ श्रीपुरखसर्वज्ञाय नमः

६ श्रीअयषोघअर्हते नमः

६ श्रीअवधोघनाथाय नमः

६ श्रीअवधोघसर्वज्ञाय नमः

७ श्रीविक्रमद्रनाथाय नमः

(२३) घातकी पश्चिम गेरवतक्षेत्रे वर्तमान जिन
शोधीसी पांच कल्याणक

१८ श्रीनदिकेशनाथाय नमः

१९ श्रीहरअर्हते नमः

१९ श्रीहरनाथाय नमः

१९ श्रीहरमर्वज्ञाय नमः

२१ श्रीसुशांतसर्वज्ञाय नमः

(२४) घातकी पश्चिम गेरवतक्षेत्रे अनागत जिन
शोधीसी पांच कल्याणक

४ श्रीमहामृगेंद्रमर्वज्ञाय नमः

६ श्रीअसौचित्यअर्हते नमः

६ श्रीअसौचित्यनाथाय नमः

६ श्रीअसौचित्यसर्वज्ञाय नमः

७ श्रीधर्मद्रनाथाय नमः

(२५) पुकरार्द्ध पूर्व गेरवतक्षेत्रे अतीत जिन
शोधीसी पांच कल्याणक

४ श्रीअष्टाहिकसर्वज्ञाय नमः

- ६ श्रीघणिकजर्हते नमः
 ६ श्रीघणिकनाथाय नमः
 ६ श्रीघणिकसर्वज्ञाय नमः
 ७ श्रीउदयशाननाथाय नमः

(१६) पुष्करार्द्ध पूर्व ऐरवतक्षेत्रे वर्त्तमान जिन
 चौबीसी पांच कल्याणक

- १८ श्रीखेमनाथाय नमः
 १९ श्रीसायकाक्षजर्हते नमः
 १९ श्रीसायकाक्षनाथाय नमः
 १९ श्रीसायकाक्षसर्वज्ञाय नमः
 २१ श्रीतमोकदनसर्वज्ञाय नमः

(२७) पुष्करार्द्ध पूर्व ऐरवतक्षेत्रे अनागत जिन
 चौबीसी पांच कल्याणक

- ४ श्रीनिर्वाणसर्वज्ञाय नमः
 ६ श्रीरविराजजर्हते नमः
 ६ श्रीरविराजनाथाय नमः
 ६ श्रीरविराजसर्वज्ञाय नमः
 ७ श्रीप्रथमनाथाय नमः

(२८) पुष्करार्द्ध पश्चिम ऐरवतक्षेत्रे अतीत जि
 चौबीसी पांच कल्याणक

- ४ श्रीअश्वघृदसर्वज्ञाय नमः
 ६ श्रीकुटिलअर्हते नमः
 ६ श्रीकुटिलनाथाय नमः
 ६ श्रीकुटिलसर्वज्ञाय नमः
 ७ श्रीवर्द्धमाननाथाय नमः

(२९) पुष्करार्द्ध पश्चिमेऽपेरघतक्षेत्रे वर्तमान जिन

चोवीसी पांच कल्याणक

- १८ श्रीविवेकनाथाय नमः
 १९ श्रीधर्मचद्रअर्हते नमः
 १९ श्रीधर्मचद्रनाथाय नमः
 १९ श्रीधर्मचद्रसर्वज्ञाय नमः
 २१ श्रीनादिकेशसर्वज्ञाय नमः

(३०) पुष्करार्द्ध पश्चिमः पेरघतक्षेत्रे अनागत जिन

चोवीसी पांच कल्याणक

- ४ श्रीकलापसर्वज्ञाय नमः
 ६ श्रीविमोमअर्हते नमः
 ६ श्रीविमोमनाथाय नमः
 ६ श्रीविमोमसर्वज्ञाय नमः
 ७ श्रीअरन्यनाथाय नमः

इति मौनएकादशी ११५० शुक्लपौर्णमासी

पोषवदि १० दशमी तपनु अधिकार

आ तप पोषवदि ण्टले गुजराती मागशरंवदि १०ने दिवसे थाय छे, केमके ते दिवसे भीपार्श्वनाथनु जन्मकल्याणक छे, तेमां प्रथम नवमीने दिवसे साकरना पाणीनु ठाम चोविहार एकासणु करवु दशमने दिवसे ठाम चोविहार क्षीरनो एकामणु करवु इग्यारसने दिवसे दिवसे एकासणु करवु, ते दिवसे पछिबकमणो देवपूजा करवी, ब्रह्मचर्य पालवुं शक्ति होय तो पोषो करवो, आतप १० वरष दश मास सुधी वरेक दशमने दिवसे एकासणु करवु आतप करनार सूरदत्तनी माफक आ लोक परलोक विपे सुखी थाय छे, अनुक्रमे मोक्षना सुख पामे, दशमीने दिवसे (भीपार्श्वनाथ अर्हते नमः) आप-दनी १० चीश मालां केरवी अरिहतना चार गुण होवायी १२ साथीया १२ खमासणा १२ प्रदक्षिणा १२ लोगस्सनो काउस्सग करवो, उजमणीमो जान-दर्शने चारिप्रनी दश दश वस्तु समजवी

अथ मेरु तेरस्तपनो अधिकार

आ तपनो माघवदि गुजराती पोषवदि १३ तेरसने दिवसे आरभ थाय छे, ते दिवसे श्रीरुप-

ભદ્રેવતુ નિર્વાણ કલ્યાણક થયું છે તેથી એ દિવસ
 તુ મહાત્મ્ય ઘણુ મોટુ છે, તે દિવસે ચડવિહાર
 ઉપવાસ કરવો, શક્તિ ન હોય તો તિવિહાર કરવો
 ત્નના સોનાના ચાંદીના અથવા ઘીના પાચ મેરુ
 કરવા, તે મેરુ ચારે દિશામાં ચાર અને તેના ષીષમાં
 એક મોટો મેરુ કરવો, જો ગામમાં ષાજા ગાજા
 સહિત ફેરાયુ હોયતો, તે મેરુને ધાલેમા રાંસીને
 ફેરવીને દેરાસરમાં જઈને ચારે દિશામાં તથા એક
 ષીષમાં નદાવર્ત સાથીયા (ગુહલી) પાંચ કરીને
 તેના ઉપર મુકીને વીપ ધૂપ પ્રમુખથી પૂજા કરવી,
 આ તપ તેર માસ અથવા તેર વરસ સુધી કરવું, તે
 દિવસે [શ્રીરૂપભદ્રેવ પારગતાય નમઃ] આ પવની
 ૨૦ ષીસમાલા ગણવી સાથીયા ચ્રમાસણા પ્રદક્ષિણા
 કાઉસ્તગ્ગ ઘાર ઘાર કરવા

અથ રોહિણી તપ આધિકાર

આ તપ રોહિણી નક્ષત્રમાં ધાય છે, તેથી તે
 રોહિણી તપ કહેવાય છે, તે તપ બ્રહ્મચર્ય તૃતીયા
 અથવા આગલ પાંચલ રોહિણી નક્ષત્ર આવે ત્યારે
 સરુ ધાય છે, તે તપ ધીવાસુપૂજ્યશર્માત્રી પૂજાપૂર્વક
 સાત વરસ સાત માસ સુધી ધાય છે, જે તે માસમાં

उपारे रोहिणी आरे,त्यारे उपवास ओंशील अथवा
एकाशनाधी ते तर करवो, कदाच भूल थई जाय
ता पाछो फरीधी करवो, देवपूजा प्रातिक्रमण देव-
बदन शीलत्रत आदि क्रिया करवी, उजमणामां
रुप्य सृवर्णमय अशोकवृक्ष आदि करवो, आ
तपधी अक्षयसुग्व मीले छे [श्रीवासुपूज्यसर्वज्ञाय
नम] आ पडनी वीशामाला फेरववी साथीया
समासणा काउस्सग्ग प्रदक्षिणा वार वार जाणवा,

॥ अथ सोलीया (कपाय जय) तपनी विधि

क्रोध१ मान२माया३ लोभ४ आचार५ कपायना सोल
भेद धाय छे यथा अनंतानुषधी ४ अपत्याख्यानी४
प्रत्याख्यानी४ सज्वल४ आ कपायने जीतवाने चार
ओली करवी, यथा पहिले दिवसे एकासणु, धीजे
दिवसे नीवी, श्रीजे दिवसे आर्षील, चौथे दिवसे
उपवास करवाधी एक ओली पुरी धाय छे एवी
रीते चार ओली करवाधी १६ दिवसे आ तप पुरो
धाय छे, आ तपपूर्ण धिया बाद ज्ञानपूजा पूर्वक १६
मोदक फलफुल आदि अष्टद्रव्यधी जिनेश्वरनी पूजा
करवी, [सर्वकपाय जय तपसे नमः] एनी दररोज
१० वीशामाला गणरी अने साथीया विसर्व सोल

सोल करवा, प्रतिक्रमणु देववदन आदि क्रिया हमे-
सानी माफक समजवी,

॥ अथ पखवासो तपविधि ॥

आ शुभादिने गुरू पासे तप ग्रहण करे, पछे सुदि
एकमपी लगावी पूनम सुधी १५ उपवास भेगा
करे पनर उपवासनी शक्ति न होय तो प्रथम सुदि
पक्षनी एकमें उपवास करवो, पछे बीज मासे सुदि
बीज, बीजे मासे सुदि बीज, एम अनुक्रमे पनरमे
मासे पूनमनो उपवास करवो, त्यारे आ तप पूरा
थाय छे, जे दिवमे उपवास होय ते दिवसे (श्रीमुनि
सुव्रतस्वामि सर्वज्ञाय नमः) आ पदनी २० माला
गणवी, सार्थीया आदि पार पार समजवा, प्रति-
क्रमण देववदनादि क्रिया सर्वे करवी

॥ अथ छमासी तपविधि ॥

श्रीमहावीरस्वामीना शाननमां उत्कृष्ट छमासी
(उपवास १८० नो) तप थाय छे तेथी तेने आर्थिन
एकसो एसी उपवास एकातरीया पारणावाला कर-
वा उजमणामां १८० लाडु फल विंगरे प्रभुने आगल
राववा, तपस्याने दिवसे (श्रीमहावीरनाथाय
नमः) आ पदनी बीस माला सार्थीया विंगरे

चार करवा, अथवा एकांतरीया उपवास छमास सुधी
करवा, तेमा चउदजे खराय नहीं; चोमामनीं छट्ट
करवा, शरु करता छट्ट तेजम पारणु पण छठे थाय
छे, आ छमासी तपमा ९० उपवास थाय छे, देव
चदनादि क्रिया करवी, एरीरीमे आठमामी तप
करयो होयतो आठमाम करवा पारमामी तप करयो
होय तो चारमास करवा, एवी राते प्रणमास, प्रेमास
दोढ माम पण समघो,

॥ अथ वरपोतप विधि ॥

श्रीरूपभदेवस्वामीच चैत्र (गुजराती फागण)

वदि ८ मे दीक्षा ल्हने पीजा चरपनी अम्बाश्रीजे
(चारमो उपवासमे) पारणो कथो तेथी छाने चरपी
तप कहे छे, आतप चैत्रवेदी आठमथी मरु करता
श्रीजे थपे असाश्रीजनो पूर्ण थाय छे, आरापमा एका-
तरीयया उपवास करवा, तप करतां चन्वली अखा-
शीजमा पारणो आवे तो ते दिवसे उपवास करयो
पण पारणो न करयो, उले दिवसे देवगुम्नी पूजा
पूर्वक स्वामीवत्सल करीने पारणो करयो, तपस्याने
दिवसे (श्रीरूपभदेवनाथाय नम) आ पदनी चीश
माला फेरपी, माथीया विंगेरे चार चार समजवा

(बीजीरीत) श्री स्वभदेव स्वामीना शास-

नमा, उत्कृष्ट तपस्या यः मासनी शोचाधी आखा-
 श्रीजे एकांतरीया उपवास सुरु करीने बीजे वरपे
 आखाश्रीजनो पारणो करे याकी विधि उपर
 प्रमाणे—

हालमा या तप करवानो प्रचार आ प्रमाणे छे
 चैत्रवद ८ ने दिवसे उपवासधी सुरु करी एकांतरे
 पारणे येघासणु करी तेर मान अने अशीघार दिवसे
 एदले आखाश्रीजे पारणु करे छे, पारणे १०८ घडा
 सेलडीनो रस अथवा माकरनो पाणी पीण छे,
 [घटो रूपानो घणो नानो घनावे छे]

आ तपमा चउदशनो पारणो न करवां जोइए
 तेम घण चोमासी (१४-१५) ना उठे करवा जोइए,
 अने छवटे छठथी ओछे तपे पारणु न करयु जोइए,
 मेलडीनो रस ये पारो पडे अभक्ष्य थाप छे तेथी
 ताजो वापरघो, उपवासने दिवसे देववडनादि
 क्रिया करयी

अथ २८ लव्घी तपविधि

आ तप एक एक लव्घिनो एक एक एकांतरीया
 उपवास करवाधी अट्ठाधीस उपवासे पुरो थाय छे,

अने जे लब्धिनो उपवास घालतो होय, ते लब्धिनी
 २० माला फेरवी, अने दैव्यदनादि क्रिया करवी
 आ तपस्या करवाधी आणद थाय छे अथवा लागट
 २८ आषाज २८ निधी अथवा २८ एकास जांणी
 पण आ तप थायवे

॥ २८ लब्धिनो गुणणो ॥

१ श्रीआमासही	लब्धये नमः
२ श्रीवीपोसही	"
३ श्रीखेलोसही	"
४ श्रीजहोसही	"
५ श्रीसन्वोसही	"
६ श्रीसभिन्नसोयोसही	"
७ श्रीअवाधि	लब्धये नमः
८ श्रीजुमइ	"
९ श्रीविपुलमइ	"
१० श्रीचारण	"
११ श्रीआसीरिस	"
१२ श्रीकेवल	"
१३ श्रीगणधर	"
१४ श्रीपूर्वधर	"

१५ श्री अर्चन	७
१ श्रीकृष्णार्चि	११
१७ श्रीकन्देव	११
१८ श्रीवासुदेव	११
१९ श्रीकृष्णनाम्न	११
२० श्रीकृष्णवृद्धि	११
२१ श्रीगदानुसारि	११
२२ श्रीयोगवृद्धि	११
२३ श्रीनिजोत्प्रेष्या	११
२४ श्रीआहारक	११
२५ श्रीदीनोत्प्रेष्या	११
२६ श्रीवैक्रिय	११
२७ श्रीअर्क्षीणमाननी	११
२८ श्रीपुत्राक	११

स्वये नम. इति

॥ अथ १४ पूर्व तपविधि ॥

आ षड्द पूर्वनी तपस्या षडानरीशा षड्द १४
उपवास पूरा करायी थाय छे, जे दिवसे जे पूर्व
उपवास होय, ते दिवसे ते पूर्वनी २० माला गणे,
आ तप सुदि १४ थी मरु कावां, अने साथीया
विगेरे कोष्टमां देखवा देवकदनादि सर्व ।
रबी तप पूर्ण थया उजमणो ज्ञान पचमी

जाणवो अधवा लागट १४ आंबील १४ निवी १४
एकासणाधी पण आतप थाय छे

अथ १४ पूर्वनो गुणणो आदि

सा ख लो मालो

१ आउत्पाद पूर्वाय नमः	१४-१४-१४-२०
२ श्रीअग्रायणी	२६-२६-२६-२०
३ श्रीवीर्यप्रवाद	१६-१६-१६-२०
४ अस्तिप्रवाद	२८-२८-२८-२०
५ श्री ज्ञानप्रवाद	१२-१२-१२-२०
६ श्री सत्यप्रवाद	२-२-२-२०
७ श्रीआत्मप्रवाद	१६-१६-१६-२०
८ श्रीकर्मप्रवाद	३०-३०-३०-२०
९ श्री प्रत्याख्यानप्रवाद	२०-२०-२०-२०
१० श्रीविद्याप्रवाद	१५-१५-१५-२०
११ श्रीअविष्यप्रवाद	१२-१२-१२-२०
१२ श्रीप्राणावाय पूर्वाय नमः	१३-१३-१३-२०
१३ श्रीक्रियाविशाल	३०-३०-३०-२०
१४ श्रीलेकविंदुमार	२५-२५-२५-२०

अथ तिलक तपविधि

आ तप श्रीश उपवासे पुरो थाय छे तेमा श्रीरूप-
भदेवस्वामी सपन्धी व छ उपवास करे, पछे

तनाथ आदि धारीस तीर्थकरों मयन्धी एक एक
उपवास करे अने महावीरस्वामी सम्पन्धी वे उप-
वास करे गुणगो जे तीर्थङ्कर सम्पन्धी उपवास होय
तनो गुणगो करे, साधिया त्रिगेरे धारधार, देववं-
दनादि सर्व श्रिया करे,

—० गुणगो ०—

१ श्रीरुद्रभद्र	सर्वज्ञाय नम,
२ श्रीअजितनाथ	"
३ श्रीसभरनाथ	"
४ श्रीअभिनन्दन	"
५ श्रीसुमतिनाथ	"
६ श्रीपद्मप्रभु	"
७ श्रीसुपार्श्वनाथ	"
८ श्रीचन्द्रप्रभु	"
९ श्रीसुविधिनाथ	"
१० श्रीशतितजनाथ	"
११ श्रीश्रेयासनाथ	"
१२ श्रीवासुपूज्यस्वामी	"
१३ श्रीविमलनाथ	"
१४ श्रीअनतनाथ	"
१५ श्रीधर्मनाथ	"

१६ श्रीशाक्तिनाथ	॥
१७ श्रीकृष्णनाथ	॥
१८ श्री अरनाथ	॥
१९ श्री मल्लिनाथ	॥
२० श्री मुनिसुवत	॥
२१ श्री नमिनाथ	॥
२२ श्री नेमिनाथ	॥
२३ श्री पार्श्वनाथ	॥
२४ श्री महावीर	॥

॥ अथ ४५ आगम तपविधि ॥

आ तप ४५ उपवास करवाधी पूरो थाय छे, छा तपना उपवास एकांतरिया अथवा ज्ञानादि तिथीमां छुटा छुटा पण थाय छे, ४५ होय ते सूत्रनी अथवा ४५ आंवीलनिवी अथवा ४५ जे सूत्रचालतो ४५ एकासणा लोगट करवाधी पण आतप थाय बे, वीश माला गणवी साथीया विगेरे कोष्टक प्रमाणे जाणवा

प्रथम ११ अग गुणणो

सा ख लो माला

२ श्रीसुगढांगसूत्राय नमः	२३-२३-२३-२०
३ श्रीठाणागसूत्राय नमः	१०-१०-१०-२०
४ श्रीसमवायांगसूत्राय नमः	१०४-१०४-१०४-२०
५ श्रीभगवतीसूत्राय नमः	४२-४२-४२-२०
६ श्रीज्ञातागसूत्राय नमः	१९-१९-१९-२०
७ श्रीउपाशकदशांगसूत्राय नमः	१०-१०-१०-२०
८ श्रीअतगददशांगसूत्राय नमः	१९-१९-१९-२०
९ श्रीअनुत्तरीववाहसूत्राय नमः	२३-२३-२३-२०
१० श्रीपन्नावागरणसूत्राय नमः	१०-१०-१०-२०
११ श्रीविपाकसूत्राय नमः	२०-२०-२०-२०

वार उपाग

१२ श्रीउववाहसूत्राय नमः	२३-२३-२३-२०
१३ श्रीरायपसेणीसूत्राय नमः	४२-४२-४२-२०
१४ श्रीजीवाभिगमसूत्राय नमः	१०-१०-१०-२०
१५ श्रीपन्नवणासूत्राय नमः	३६-३६-३६-२०
१६ श्रीजबूदिवपन्नतीसूत्राय नमः	५०-५०-५०-२०
१७ श्रीचदपन्नतीसूत्राय नमः	५०-५०-५०-२०
१८ श्रीसूरपन्नती	५७-५७-५७-२०
१९ श्रीकप्पिया	१०-१०-१०-२०
२० श्रीकप्पवडिसिया	१०-१०-१०-२०
२१ श्रीपुप्फिया	१०-१०-१०-२०

(१२२)

२२ श्रीपुष्कचूलिया	॥	१०-१०-१०-२०
२३ घट्टिश-	॥	१०-१०-१०-२०
६ छे छेद सूत्र		
२४ श्रीव्यवहार सूत्राय नमः		२०-२०-२०-२०
२५ श्रीवृत्कल्प	॥	३-३-३-२०
२६ श्रीदशाश्रुतस्कध	॥	१९-१९-१९-२०
२७ श्रीनिशीथ	॥	१६-१६-१६-२०
२८ श्रीमहानिशीथ	॥	४२-४२-४२-२०
२९ श्रीजीतकल्प	॥	३५-३५-३५-२०

१० पयन्ना

३० श्रीचउस्रणपयन्नासूत्रायनमः		१०-१०-१०-२०
३१ श्रीसधारापयन्ना	॥	१०-१०-१०-२०
३२ श्रीतदुलपयन्ना	॥	१०-१०-१०-२०
३३ श्रीचद्राविज्ज्ञा	॥	१०-१०-१०-२०
३४ श्रीगणिविज्ज्ञा	॥	१०-१०-१०-२०
३५ श्रीदेर्विदधुओ	॥	१०-१०-१०-२०
३६ श्रीवीरधुओसूत्राय नमः		१०-१०-१०-२०
३७ श्रीगच्छाचार	॥	१०-१०-१०-२०
३८ श्रीजोतिसकरडक	॥	१०-१०-१०-२०
३९ श्रीमहापचकराण	॥	१०-१०-१०-२०

४० श्रीआवश्यकसूत्राय नमः	३२-३२-३२-२०
४१ श्रीउत्तराध्ययन	३६-३६-३६-२
४२ श्रीओघनिर्युक्ति	१०-१०-१०-२०
४३ श्रीदशवैकालिक	१४-१४-१४ २०

॥ वे छुटक सूत्र ॥

४४ श्रीअनुयोगद्वारसूत्राय नमः	६२-६२-६२-२०
४५ श्रीनदी =	५१-५१-५१-२०

११ गणधर तप

आ तप दरेक एक एक गणधरनी एक एक उपवास अथवा लागट आवील निवी अथवा एका सणो करवाथी पुरो थाय छे तेमा जे गणधर नो उपवास होय ते दिवसे ते गणधरनो जाप २० माला नो करवो, अने साथीया विगेरे इग्यार इग्यार सम जवा बीजी किया विधि सरखी करवी,

गणधरनो जाप

१. श्रीइन्द्रभूति	गणधराय नमः
२ श्रीअग्निभूति	" " " "
३ श्रीवायुभूति	" " " "
४ श्रीव्यक्तभूति	" " " "
५ श्रीसुधर्मा	" " " "

करना । पीछे एकादशीया ६० उपवास करके ऊपर एक अष्टम करना । सप मिलाके ६६ उपवास होते हैं । ६३ पारणे होत हैं ।

दूसरी रीति से पहिले दिन उपवास दूसरे दिन एकासणा, तीसरे दिन ठाम चौविहार एक दाणा का आबील करना । चौथे दिन एकलठाणु (चौविहार एकासणु) करवु । पाचमें दिवसे ठाम चौविहार एक दत्ती (एक चखते भाणामा पडलुज खायुते) नु एकसणो करवो । छठे दिवसे लुखी नीची, सातम दिन आबील, आठमें दिन अठ कवलतु एकसणो करवो । इस प्रकार आठ दिनमें यह तप पुरा होता है । साथिआ बगेरा जितने जिस कर्म की प्रकृतिए हैं उतन ही करना । माला २० गिनना ।

उजमणा में मूल आठ कर्म, उत्तर प्रकृति, १५८ होने से रूपा का एक वृक्ष कराना वह भी आठ शाखा व १५८ पानड़ा सहित कराना । उसके मूल में कर्मरूप वृक्ष को छेदन हेतु सोना का कुहाडा तैयार कराना जिस दिन जो कर्म का तप चल उस दिन वोही गुणना आदि करना ।

गुणणो— १ श्रीअनंत ज्ञान गुणधारकायनमः५—५—५—२०

२ श्रीअनंत दर्शन	७—७—७—२०
३ श्रीअव्या वाद्य	२—२—२—२०
४ श्रीक्षायिक सम्यत्तच	२८—२८—२८—२०
५ श्रीअक्षय स्थिति	४—४—४—२०
६ श्रीअमूर्ति	१०३—१०३—१०३—२०
७ श्रीअगुरु लघु	२—२—२—२०
८ श्रीअनंत वीर्य	७—७—७—२०

चदन बालानो अष्टम तप विधि

कोई भी दिवस यह अष्टम तप किया जाता है पारणे के दिन उड़द के धाकले मुनिराज को बहरा कर उसी का स्वयं भी पारणा करे। पारणे आयथील का पचकखाण करे। ठाम चौविहार करे। इस तप के पारणे पर रूपा की सुपडी में ने खुणे उड़द के धाकडे भरके बोहरावे रूपानाणा से गुरु की पूजा करे। बहराते बखत पगमें तथा हाथमे सुतर की अधवा रेशम की आटी डालना। इस तप में (श्री माहवीरनाथाय नमः) इस पद की २० माला व साधिया बगेरा १२-बारा।

-- ॥ अथ पचकल्याणकं तपविधि ॥

आ तप न्यमा परो-थाय छे, अने

आंटील नीची अथवा एकासणा थी आ तप कराय छे, एक एक कल्याणकनो एक एक उपवास करबो, जे तिथिये एक, ये, अण, चार के पांच कल्याणक होग तो, ते तिथिये प्रतिवर्ष एक एक उपवास करीने तप पुरो करषो जे कल्याणकनो उपवास चालतो होय तेनो गुणणो २० माला साथीया काठसग विगेरे चार चार जाणवा, बीजी क्रिया नित्यक्रिया माफक

पंचकल्याणकनु गुणणो

तिथि कार्तिक (गुजराती आसो) वदि कल्याणक

५ श्रीसंभवनाथ सर्वज्ञाय नम	केवल
१२ श्रीपद्मप्रभ अर्हते नम.	जन्म
१२ श्रीनेमिनाथपरमेष्ठिने नम	धवन
१३ श्रीपद्मप्रभनाथाय नमः	दीक्षा
०)) श्रीमहावीर पारगताय नमः	मोक्ष

कार्तिक सुदि

३ श्रीसुविधिनाथ सर्वज्ञाय नम.	केवल
१२ श्रीअरनाथ सर्वज्ञाय नमः	केवल
मागशीर (गु० कार्तिक) वदि	
५ श्रीसुविधिअर्हते नमः	जन्म
६ श्रीसुविधिनाथाय नमः	दीक्षा

११ श्रीमहार्वाचर नाथाय नमः.	दीक्षा
११ श्रीपद्मप्रभ पारगताय नमः	मोक्ष
मागशीर सुदि	
१० श्रीअरनाथ अर्हते नमः	जन्म
१० श्रीअरनाथ पारगताय नमः.	मोक्ष
११ श्रीअरनाथनाथाय नमः	दीक्षा
११ श्रीमल्लिनाथ अर्हते नमः	जन्म
११ श्रीमल्लिनाथ नाथाय नमः	दीक्षा
११ श्रीमल्लिनाथ सर्वज्ञाय नमः	केवल
११ श्रीनमिनाथ सर्वज्ञाय नमः	केवल
१४ श्रीमभवनाथ अर्हते नमः.	जन्म
१५ श्रीमभवनाथ नाथाय नमः	दीक्षा
पोष (गु० मगशीर) षदि	
१० श्रीपार्श्वनाथअर्हते नम	जन्म
११ श्रीपार्श्वनाथनाथाय नम	दीक्षा
१२ श्रीचद्रप्रभ अर्हते नम	जन्म
१३ श्रीचद्रप्रभनाथाय नमः	दीक्षा
१४ श्रीशीतलनाथ सर्वज्ञाय नम	केवल
पोष सुदि	
६ श्रीविमलनाथ सर्वज्ञाय नमः	
९ श्रीशातिनाथ	

११ श्रीअजितनाथ	॥	॥
१४ श्रीअग्निनाथ	॥	॥
१५ श्रीअनाथ	॥	॥

माघ (गु० पोष) चदि

६ श्रीपद्मप्रभ परमेश्वरिणे नमः	ज्यवन
१० श्रीशिवनाथ अर्हते नमः	जन्म
१२ श्रीशीतलनाथ नाथाय नमः	दीक्षा
१३ श्रीशुभदेव पारगताय नमः	मोक्ष
१४) श्रीश्रवणनाथ सर्वज्ञाय नमः	केवल

माघ सुदि

२ श्रीअभिनन्दन अर्हते नमः	जन्म
९ श्रीवासुपूज्य सर्वज्ञाय नमः	केवल
१ श्रीविमलनाथ अर्हते नमः	जन्म
३ श्रीधर्मनाथ अर्हते नमः	जन्म
४ श्रीविमलनाथ नाथाय नमः	दीक्षा
८ श्रीअजितनाथ अर्हते नमः	जन्म
९ श्रीअजितनाथ नाथाय नमः	दीक्षा
१० श्रीअभिनन्दन नाथाय नमः	दीक्षा
१३ श्रीधर्मनाथ नाथाय नमः	दीक्षा

फागण (माघ) चदि

६ श्रीसुपार्श्वनाथ सर्वज्ञाय नमः	केवल
----------------------------------	------

७ श्रीसुपार्श्वनाथ पारगताय नमः	मोक्ष
८ श्रीचन्द्रप्रभ सर्वज्ञाय नमः	केवल
९ श्रीसुरिधिनाथ परमेष्ठिने नमः	व्ययन
११ श्रीरूपदेव सर्वज्ञाय नमः	केवल
१२ श्रीश्रेयांसनाथ अर्हते नमः	जन्म
१२ श्रीमुनिसुव्रत सर्वज्ञाय नमः	केवल
१३ श्रीश्रेयांसनाथ नाथाय नमः	दीक्षा
१४ श्रीप.सुपूज्य अर्हते नमः	जन्म
१०) श्रीवासुपूज्य नाथाय नमः	दीक्षा

फाल्गुन सुवि

२ श्रीअनाथ परमेष्ठिने नमः	व्ययन
४ श्रीमहिनाथ परमेष्ठिने नमः	व्ययन
८ श्रीतमयनाथ परमेष्ठिने नमः	व्ययन
१२ श्रीमहिनाथ पारगताय नमः	मोक्ष
१२ श्रीमुनिसुव्रत नाथाय नमः	दीक्षा

चैत्र (शु० फागण) पदी

४ श्रीपार्श्वनाथ परमेष्ठिने नमः	व्ययन
४ श्रीपार्श्वनाथ सर्वज्ञाय नमः	केवल
६ श्रीचन्द्रप्रभ परमेष्ठिने नमः	व्ययन
८ श्रीरूपभद्रेश अर्हते नमः	जन्म
८ श्रीरूपभद्रेश नाथाय नमः	दीक्षा

चैत्र सुदि

३ श्रीकृष्णनाथ सर्वज्ञाय नम	केवल
५ श्रीअजितनाथ पारगताय नमः	मोक्ष
५ श्रीसम्भवनाथ पारगताय नम	मोक्ष
७ श्रीअनतनाथ पारगताय नम	मोक्ष
० श्रीसुमतिनाथ पारगताय नमः	मोक्ष
११ श्रीसुमतिनाथ सर्वज्ञाय नम	केवल
१३ श्रीमहावीर अर्हते नम	जन्म
१५ श्रीपद्मप्रभ सर्वज्ञाय नम	केवल

वैशाख (शु० चैत्र) षदि

१ श्रीकृष्णनाथ पारगताय नमः	मोक्ष
२ श्रीशीतलनाथ पारगताय नमः	मोक्ष
५ श्रीकृष्णनाथ नाथाय नमः	दीक्षा
६ श्रीशीतलनाथ परमेष्ठिने नमः	व्यसन
१० श्रीनमिनाथ पारगताय नम	मोक्ष
१३ श्रीअनतनाथ नाथाय नमः	दीक्षा
१४ श्रीअनतनाथ अर्हते नम	जन्म
१४ श्रीअनतनाथ सर्वज्ञाय नम.	केवल
१४ श्रीकृष्णनाथ अर्हते नम	जन्म

वैशाख-सुदि

४ श्रीअभिनदन परमेष्ठिने नमः	व्यसन
-----------------------------	-------

७ श्रीघर्मनाथ परमेष्ठिने नमः	व्यसन
८ श्रीअभिनदन पारगताय नमः	मोक्ष
८ श्रीसुमतिनाथ अर्हते नमः	जन्म
९ श्रीसुमतिनाथ नाथाय नमः	दीक्षा
१० श्रीमहावीर सर्वज्ञाय नमः	केवल
१२ श्रीविमलनाथ परमेष्ठिने नमः	व्यसन
१३ श्रीअजितनाथ परमेष्ठिने नमः	व्यसन
जेठ (गु० वैशाख) षदि	
६ श्रीअर्पासनाथ परमेष्ठिने नमः	व्यसन
८ श्रीमुनिसुव्रत अर्हते नमः	जन्म
९ श्रीमुनिसुव्रत पारगताय नमः	मोक्ष
१३ श्रीशांतिनाथ अर्हते नमः	जन्म
१३ श्रीशांतिनाथ पारगताय नमः	मोक्ष
१४ श्रीशांतिनाथ नाथाय नमः	दीक्षा
जेठ सुदि	
६ श्रीघर्मनाथ पारगताय नमः	मोक्ष
९ श्रीवासुपुज्य परमेष्ठिने नमः	व्यसन
१२ श्रीसुपार्श्वनाथ अर्हते नमः	जन्म
१३ श्रीसुपार्श्व नाथाय नमः	दीक्षा
आषाढ (गु० जेठ) षदि	
४ श्रीनृपभदेव परमेष्ठिने नमः	व्यसन

७ श्रीरिमलनाथ पारगताय नमः	मोक्ष
० श्रीनमिनाथ नाथाय नम	दीक्षा
अपाह सुदि	
६ श्रीमहावीर परमेष्ठिने नम	च्यवन
८ श्रीनेमिनाथ पारगताय नम	मोक्ष
१४ श्रीवासुपूज्य पारगताय नम	मोक्ष
आवण (गु० अणह) चदि	१
३ श्रीश्रेयासनाथ पारगताय नमः	मोक्ष
७ श्रीजनतनाथ परमेष्ठिने नम	च्यवन
८ श्रीनमिनाथ अर्हते नमः	जन्म
९ श्रीकुथुनाथ परमेष्ठिने नम	च्यवन
आवण सुदि	
२ श्रीसुमतिनाथ परमेष्ठिने नमः	च्यवन
७ श्रीनेमिनाथ अर्हते नमः	दीक्षा
६ श्रीनेमिनाथ नाथाय नम	जन्म
८ श्रीपार्श्वनाथ पारगताय नमः	मोक्ष
१२ श्रीसुवासुप्रत परमेष्ठिन नमः	च्यवन
नादरवा (गु० आवण) चदि	६
७ श्रीशानिनाथ परमेष्ठिने नम	च्यवन
७ श्रीचद्रम पारगताय नम	मोक्ष
८ श्रीसुपार्श्वनाथ परमेष्ठिने नमः	च्यवन

भाद्रवा सुदि

१, १४

१ श्रीसुविधिनाथ पारगताय नमः मोक्ष

आसो (शु भाद्रवा) वदि

१३ श्रीमहावीर परमाष्टने नमः गर्भापहार

०)) श्रीनेमिनाथ सप्तजाय नमः केवल

आसो सुदि

१५ श्रीनमिनाथ परनेष्टिने नमः ज्यवन

॥ अथ गोतम पात्र तप विधि ॥

इस तप में हरेक पूर्णिमा को उपवास किया जाना है। श्री गोतमस्वामी की पूजा करनी। इस प्रकार १५ पूर्णिमा तक यन्त्र करना चाहिये। तप पूर्ण होने पर रूपा का पात्र बनवा उममें खीर भर झोली सहित गोतम स्वामी तथा महावीर स्वामी के सन्मुख पात्र रखे और माधु मुनिराज के पात्र में खीर बोहराये। पीछे खीर का पारणा स्त्रय भी करें। स्नात्रादि पूजन कराव। उपवास-त्रे दिन (श्री गोतमस्वामी नमः) इस तप की २० माला साथीया आदि सतासीस सतासीस ममर्त्त

पञ्चरगी तप

पाच जणा पाचपाच उपवासमाला,

चारचार उपवासमाला, पांच जणा घणघण उपवास
माला, पांच जणा षडे उपवासवाला, पांच जणा
एक एक उपवासवाला, यथा मीलीने २५ जणा होवा
जोइए, बधारे होय तो हरकत नहीं, अने छेले दिवसे
सधा जणानो पारणो आववो जोइये ।

नवर्गी तप

आ तपस्यामां ८१ जणा होवा जोइये केमके
नव जणा नव नव उपवासवाला उतरता उतरता
अनुक्रमे छेला नव एक एक उपवासवाला ममजवा,
पारणो एक दिवसे यथानो आववो जोइये ।

आर्षील वर्द्धमान तप

आ तपमां एक आर्षील करी उपवास पछी बे
आर्षील करी उपवास पछी घण आर्षील करी उप-
वास यावत् अनुक्रमे १०० सो आर्षील करी उपवास
करवो आ तप लागट करे तो १४ वर्ष घण मास २०
दिवसे पुरो धाय छे, आ तप शरू करतां प्रथम पांच
ओली लागट करवी, आ तपमा इमेशां तपने दिवसे
(नमो अरिहताण) आ पदनी २० माला अने
साथिया विगेरे बार बार समजवा ।

अथ नदीश्वर तप विधि.

१. आ तपः श्रीनदीश्वरद्वीपमा ५२ शाश्वता चत्प
 आश्री ५२ उपवास करवाधी पुरो धाय छे, ते धावन
 उपवासो अमावास्याने दिवसे करवाना छे,
 आ तप दीवान्नीनी अमावास्याये शरु करवानो छे,
 जे दिवसे उपवास होय ते दिवसे (श्रीनदीश्वर
 शाश्वत जिन चैत्याय नम) आ पद्वेनी २० माला
 गणवी, साथीया विगेरे धार धार समजवा ।

दर्शन तप विधि

आ तप एक अठम तप करवाधी अथवा एका
 तरीया ३ उपवास करवाधी धाय छे ।

ज्ञान तपविधि

आ तप एक अठम अथवा एकातरीया त्रय
 उपवासधी पुरो धाय छे ।

चारित्र्य तपविधि

आ तप एक अठम अथवा एकातरीया त्रय
 उपवासधी पुरो धाय छे ।

आ अणे तपनो, गुणणो
 प्रमाणे करधी ।

ધર્મચક્ર તપ.

પ્રથમ છઠ્ઠ કરીને પારણો કરવો પછે પચાસરીયા
૬૦ ઉપવાસ કરવા, અરિહત પદ્મ ગુણુ અંદિ
કરવુ ।

યોગશુદ્ધિ તપ

મનોયોગ આશ્રી પ્રથમ દિવસે-ત્રીજી ષીજે
દિવસે આશીલ શ્રીજ ત્રિવસે ઉપવાસ કરવો ણ્વી
રીતે ઘચન યોગની અને કાપયોગની ઓલિ કરવી
આ તપ શ્રણે ઓલોણ પુરો ધાય છે, ગુણુ ૨૦ મારા
સાધીયા તમા ૦ કાડસ્મંગ ૩ શ્રણ શુણ કરવા પ્રથમ
ઓલીમા મનોયોગ તપમે નમ ષીજી ઓલીમા પંચો-
પાગ તપસ નમ ષીજી ઓલીમા કાપયોગ તપસે નમઃ

યવમધ્ય વજ્રમધ્ય ચાદ્રાયણ તપ

આ તપના ષે ભેદ છે, સુદિ એકમે એક કવલ,
ષીજે ષે કવલ, ણક એક એક કવલની શુદ્ધિ કરવાથી
પુનમને દિવસે ૧૫ કવલ લેવા, ઘદિ એકમે ૧૫ કવલ,
પછે એક એક કવલ ઓછો કરવાથી લમાવાસ્યાધે
એક કવલ લેવો, એક માસમા આ તપ પુરો ધાય છે,
આ તપને યવમધ્ય ચદ્રાયણ કહે છે, ઘદિ એકમે એક

कवल, धीजे थे कवल, एक एक एकनी वृद्धि करवाधी
अमावस्याये १५ कवल लेना सुदि एकमे १५ कवल
मछे, एक एक कवल ओछो करवाधी पुनमन दिवसे
एक कवल संवो, आ तप पण एक मासमा पुरां धाय
छे आ तपने वज्रमध्य चाद्रायण कहे छे ।

तीर्थकर वर्धमान तप

यह तप एकासणा नीवी आयबील अथवा
उपवास से होता है। इसमें प्रधान श्रीशक्तपभदेवस्वामी
का एकासणा दूसरे अजितनाथ के २ एकामणे । एक
एक एकामणा की वृद्धि करते चौबीसवें महावीर
स्वामी के २४ एकामणा करना । पीछे महावीरस्वामी
का एक एकामणा । पार्श्वनाथजी का दो एकामणा ।
इस प्रकार एक एक एकामणा की वृद्धि करते श्री
शक्तपभदेवस्वामी के २४ एकामेणा करें । इस प्रकार
एक २ तीर्थकर के २५ एकामेणे होते हैं । उपवास
आदि से यह तप करना हो तो ऊपर बताई विधि
के मोफक २५ २५ उपवास करें । एकानरीया अथवा
छुटे उपवास भी किये जा सकत ह । जो तीर्थकर
का तप चल्ता हो उनका ही जाप करना याकी
अरिहत पंथ की तरह समझें ।

परम सूपण तप

इस तपमें ३२ लागट आंवील करें। अथवा एकान्तरीया एकासणावाला ३२ आंवील करना। गुणना आदि अरिहत पद की तरह।

तीर्थकर दीक्षा तप

यह तप जिन जिन तीर्थकरों ने दीक्षा लेते समय जो तप किया था, वह तप एक ही साथ अथवा एकान्तरीया उपवास में पूरा करने का है। श्रीसुमति नाथ ने एकामणा करके दीक्षा ली थी वास्ते एकासणा करना। श्रीवासुपूज्य स्वामी ने उपवास करके दीक्षा ली थी इसलिये उपवास और श्रीमल्लिनाथ और श्रीपार्श्वनाथ ने अष्टम करके दीक्षा ली थी वास्ते अष्टम अथवा एकान्तरीया तीन उपवास बाकी ३० तीर्थकरों ने छठ करके दीक्षा ली थी इसलिये छठ अथवा दो उपवास करें। गुणने में जो तीर्थकर की सपस्या, चलती हो उन तीर्थकर के नाम के आगे नाथाय नम जैसे श्रीशुभदेव नाथाय नम बाकी अरिहत पद की तरह समझें।

तीर्थकर ज्ञान तप

यह तप जिन जिन तीर्थकरों के जिस जिस

तपस्या से केवलज्ञान प्राप्त हुआ है वह तप एक साथ
 अथवा एकांतरीया उपवास करने से पूरा होता है।
 श्री ऋषभदेव, महिनाथ, नमिनाथ, पार्श्वनाथ को
 केवलज्ञान छट्ठ तप से प्राप्त हुआ है हमसे अष्टम
 अथवा एकांतरीया उपवास करें। वासुपूज्य स्वामी
 को केवलज्ञान एक उपवास से प्राप्त हुआ था इससे
 एक उपवास करें। बाकी १९ तीर्थरों को केवल-
 ज्ञान छट्ठ तपसे हुआ है हमसे १९ छट्ठ अथवा एकांत-
 रीया उपवास करें। जिन २ तीर्थरों का तप चलता
 हो उन तीर्थरों का शुणना करना जैसे श्रीऋषभदेव
 सर्वज्ञाय नमः इत्यादि साथिया आदि अतिरिक्त पद
 की तरह समझे।

तीर्थकर निर्वाण तप.

इस तपमें जो २ तीर्थर जिस २ तपश्चर्या से
 मोक्ष गये हैं वो २ तप एक साथ अथवा एकांतरीया
 उपवास करने से पूरा होता है। श्रीऋषभदेव छ
 उपवास से मोक्ष गये हैं। श्री महावीर स्वामी
 करके मोक्ष गये हैं और बाकी २२ तीर्थरों
 महीना अर्थात् ३०
 एक ही साथ अथवा एकांतरीया छुटा

मे यह तप पूरा होता है । साथीया आदि अरिहत पद की तरह जो तीर्थंकर का गुणना चलता हो उन तीर्थंकर के नाम के आगे पारगताय नम, जोड़ें जैसे श्री ऋषभदेव पारगताय नमः इत्यादि ।

चतुर्विध तप

इस तपमें पहिले एक छठ करके बाद में एकान्तरीया ६० उपवास करना । गुणना नमो तित्थस्स २० माला साथिया विगेरा ६० पांसठ समझें ।

तीर्थंकर ज्यवन तप

यह तप एक एक तीर्थंकर के ज्यवन कल्याणक आश्री एक एक उपवास काल से पूरा होता है । ये बोधीम उपवास एकान्तरीया अथवा छुटा कराय छे गुणने में जिस तीर्थंकर का तप चलता हो उन तीर्थंकर के आगे परमेष्ठिने नम यह जोड़ना जैसे ऋषभदेव परमेष्ठिने नमः या श्री अरिहत पद की तरह ।

तीर्थंकर जन्म तप

यह तप भी ज्यवन कल्याणक की तरह समझें । परंतु गुणना अर्हते नमः का करना जैसे किाश्री ऋषभदेव अर्हते नमः ।

संवत्सर तप

एक वर्ष में चौबीस पाग्वी संबंधी आलोचनाएँ
 के २४ उपवास अथवा चौमासी संबंधी आलोचनाएँ
 के ६ उपवास, सबच्छर संबंधी आलोचनाएँ अथवा
 उपवास, मरु मीली ३३ उपवास एकांतरीया अथवा
 दृग करवाधी अथवा तप पुरो धाय छे गुणगो सबच्छर
 पसनमः बाकी अरिहत पद जेम ।

पद्माक्षर तपओली

आ तपमां ११ ११ ओली एकांतरिया आठ
 ताठ उपवासनी थाय छे एही नव ओली करवाधी
 मा तप पुरो धाय छे यथा मिली ७२ उपवास थाय
 छे गुणगो आदि अरिहत पदनी जेम समजधो, आ
 तप सुदि नवमीधी सरु करवो ।

समवसरण तप

आ तप १६ दिवसे पुरो थाय छे, भादरथा
 (गु० आबण) चदि ४ थी सरु करीने भादरथा सुदी
 ४ सुधी कराय छे तैमां पहिले दिवसे एकामगो, बीजे
 दिवसे नीची, श्रीजे दिवसे आबिल, चौथे दिवसे
 उपवास रीते चार ओली

साधिया माला दिवसे

१ श्रीभावजिनाय नमः	१०	२०	१
२ श्रीश्रुतसमंघसरण जिनायनम	९	२०	२
३ श्रीमनःपर्यवजिनाय नम.	१२	२०	३
४ श्रीकेवलजिनाय नमः	८	२०	४

॥ दशविध यति धर्म तप .

आ तप दश एकांतरिया उपवास कर्वायी पुरो घाय छे अने सुदिमा शठ घाय छे तपने दिवसे गुणणु धिगेरे १० माला आ प्रमाणे—

- १ क्षमागुणधराय नम. २ भार्दवगुणधराय नमः
 ३ आर्जवगुणधराय नमः ४ मुक्तिगुणधराय नम.
 ५ तपोगुणधराय नम ६ समयगुणधराय नमः
 ७ सत्यगुणधराय नम ८ शौचगुणधराय नमः
 ९ अकिंचनगुणधराय नमः १० ब्रह्मचर्यगुणधराय नमः

पचपरमेष्ठी तप

पहिल दिवसे उपवास, धीजे दिवसे एकलठाणु, धीजे दिवसे आधील, चौथे दिवसे एकासणु, पांचमे दिवसे बीबी, छठे दिवसे परिमट्ट, अने सातम दिवसे बेघासणु, ए प्रमाणे सात दिवसानी, एक ओली बाप

छे एकी रीते पाँच ओली करवायी आठ तप १५ दिवस
सोमा पुरी थाय छे ।

गुणणो १. नेमोअरिहताणं २. नेमोअरिहताणं ३
नेमोअरिहताणं ४. नेमोअरिहताणं ५. नेमोअरिहताणं
सव्वसांखण ।

एक एक ओलीमां गुणणो सादिना थिये
एक नवपदओलीमां कहेल प्रमाणे एको अंग काल
दिवस सुधी करवो ।

सर्वाह सुदर तप

आतप आठ एकांतारिया उपवास करवा पायजे
आपील करवायी आठ उपवास अन मान करवाये
मिलीने १५ दिवसे पुरो थाय छे ।

आ तप सुदि एकमथो श्रम साय ३ अथे पुनमे
समाप्त थाय छे गुणणो आदि परिहृत करवाये ।
निरुक्कमिह तप

एतु तप सर्वाह सुदर तपरी जेय समजवो पया
पटलु विशेष छे वदि एकजना श्रम करवो अमाथा
स्याये पुरो थाय छे.

सौभाग्य करवाये तप
एकांतारियो १५ उपवास करवाये

श्रीम दिवसमां पुरो धाय छे चैत्र सुदी एकमनो आ
तप तारु धाय छे गुणणो अरिहत पदनी जेम

अष्टापद पावडी तप ओली

आ तप ८ एकासणा ८ नीवी ८ आंवील अबवा ८
उपवासधी धाय छे असो चैत्र सुदि ८ थी लहने पुनम
सुधी ८ आठ एकासणादि करवाधी एक ओली धाय
छे एवीरीते आठ ओली करवाधी ४ वर्षे आ तप
पुरो धाय छे गुणणो श्री अष्टापदतीर्थाय नमः मालां
२० साथिया आदि ८ आठ

अदु खदर्शि सर्वसुख सपत्ति तप

आ तप मां पहले मासे सुदि १ बीजे मासे
सुदि २ श्रीजे सुदि ३ एम बभता पनरमे मासे सुदि
१५ नु उपवास कराय छे एम १५ उपवास करवाधी
१५ सुदि पखवाडे आ तप पुरो धाय छे अरिहत-
पदनु गुणणुआदि ।

कर्मचतुर्थ तपः

आ तप प्रथम अठम पछे एकातरिया ६० उप-
वास पछे अतमा उपर एक अठम करवाधी पुरो
धाय छे आ तप आंतरा रहित करवो बघा ६६
उपवास धाय छे गुणणो आदि अरिहत पदनी जेम

कर्म चक्रवाल तप

आ तप प्रथम अठम पछे एकान्तारियां ६४ उप
वास उपर अठम तप कर बापी पूरा पाय छे बषा
७० उपवास पाय छे गुणगुआदि अरिहंन पदनी जेम

चत्तारि अठ दस दीय तप

प्रथम चार पछे आठ पछे दश पछे बे उपवास
करबापी आ तप पूरा पाय छे श्री अष्टापत्र तपियां
नम, साधिया बिगेरे २४ एकान्तारिया बुटापण उप-
वास पाय छे,

गौतम कमल तप

आ तपमां नव उपवास एकान्तारिया करवा
गुणगो भीगौतमस्थामिने नम साधिया बिगेरे २७
सतापीस ।

मिहासण तप

आ तप मां २० उपवास करवा, पांच पांच
उपवासे पारणु होयछे, आ ५ आवग सुदि १२
थी सक याय छे, भाववा सुदि २ नु पारणु याय
गुणाणु बिगेरे समब सरण तपनी पछे ममजु

बीडी रिते

तेमां चार चार

१५ उपवास
पु होयछे,

(गु० श्रावण) बुद्धि १ धी सुक भाववा सुदि ५
पारणु होय छे,

१० दश पञ्चाकखाण तप

पहले दिवसे उपवास, बीजे दिवसे एकासण,
त्रीजे दिवसे एक काणो जम्बो, चाये दिवसे नीबी,
पांचमे दिवसे एक कवल, छटे दिवसे एकल ठाणु,
सात मे दिवसे एक दत्ति, आठमे दिवसे आंबील
नवमे दिवसे एक धारा दशमे दिवसे लुखी नीबी,
गुणणु नमो सिद्धाणो सार्थिया विगेरे आठ आठ

घडीया वे घडीया तप

आ तप मां लागट ६० ठाम, चतु बिहार परि
मह बाला एकासणा होय छे, पा घडीया तप जार
(६ मीनीट मा आहार पाणी करी लेवुते) अघ
घडीया तप आठ (१२ मीनीट मा आहार पाणी
करी लेवुते) एक घडीया तप १६ (२६ मीनीट मा
आ०) वे घडीया तप ३२ (६८ मीनीट मा आहा)

पाच छठ तप

आ तप एका तरिया पाचु छठ अने, पारणु
एकासणो करवायी, १६ दिवस मां पूरो याय छे,
तेमा प्रथम छट्टु पारणु धी शाकर सहित घटना

भाद्र नुं थाय छे, बीजा, छट्टनु पारणु दुध शाकर सहित चोखानु थायछे, त्रीजा छट्टनु पारणु शंली-पाशविक ब्रहोरावी ने भरे भूपो प्यायछे, खोथा छट्टनु पारणु श्वाननी पेठे जेमवानु होय छे, पाचमा छट्टनु पारणु पाणीनु लोदो, भरीने बीजाना बे त्रण परे जवु, त्या, कोई जमवानु कहे तो जमीलेवु, न कहे तो उपवास करवां

अक्षय निधि तप

यह तप १६ दिन में पूरा होता है। भाद्रवा (गुज० श्रावण) घटी ४ से यह तप आरम्भ करें। भाद्रवा सुदी ४ (भवतनरी समाप्त करें इसमें १५ एकासणा और आगिरी दिन उपवास किया जाता है। इस तप के आरम्भ के दिन घर देरासर में अथवा उपासरे में जिन प्रतिमा स्थापित की जावे, उनके सामने ककू अथवा केसर के चारों तरफ साथये करके उनके ऊपर अक्षत (चावल) के मथिये करें। चांदी अथवा तांबे का कलस केसर का साथया करके चावल के साथिये पर रख। उस कलस को १६ दिन तक उठाना हिलाना नहीं। वैसे ही रुद का एक कलश अलग रखना। हर एक

घ्रपने २ कलश में हर रोज रूपानाणो, सोपारी चांठी के फूल और चांवल की एक मुठी डालें। श्रीफल कलश के मुख पर रखके लाल अथवा पीले बहने लच्छु द्वारा बांध कर रख शक्ति होतो पहिले और अन्तिम दिन रूपानाणा दोनों कलश में डालना कम से कम एक पैसा हर रोज कलश में डालना ही चाहिये।

भगवान की स्थापना में १।) अथवा ५।) रुपया रखना। भगवान की जीमनी तरफ १६ दिन तक अखण्ड दीपक चांवल के साथीये पर रखना। भगवान के सामने याजोट पर श्री कल्पसूत्रजी रख कर हर रोज घास क्षेप और रोकड़ नाणा से पूजा करना। पहिले और अन्तिम दिन गुरु पास ज्ञान पूजा करें खुद का व मूल कलश अगर अधुरा (खाली) होतो आखिरी दिन चांवल से पूरा भर देना चाहिये।

खमा समण देकर श्रुत देवता का एक नव कार काउस्सग करके श्रुत देवता की स्तुति करें।

पाच के दिन सुहागन स्त्रियें मस्तक पर कलश रख के बाजा गाजा सहित नगर में फिर के देहरा सर में भगवान के आगे कलशों को रखें।

साथीया खमासमणा, प्रदक्षिणा, काउस्मग्ग
माला हर रोज ज्ञान पद की तरह सब क्रिया करना
चाहिये १६ दिन तक शिपल ग्रत पालन करना,
सूमि संपारे सोना देववदन दोनों राइम, पहिले
हण चैत्य वदन करके पद्यकग्वाण पालना जीमने के
बाद चैत्य वदन करके पानी पीवे प्रतिक्रमण करें ।
सपारा पोरसी भणा के सोना । यह तप ४ ओली
करवा थी ४ वरम में पूरा होता है ।

शाश्वत मेरु पर्वत तप

आ तपमा एक एक उली पांच पांच उपवास
नी होय छे, पारणे पीपामणू करयु, पाच उली कर-
वाधी २५ उपवास साथीया खमासमणा काउस्सग्ग
पांच पांच नवकार वाली थीम पीस गुणणो ।

१. जवुद्धीप सुमेरु शाश्वत जिनाय नम
- २ घात की खड़ पूर्व मेरु०
- ३ घात की खड़ पश्चिम मेरु० ।
- ४ पुष्करार्ध पूर्व मेरु० ।
- ५ पुष्करार्ध पश्चिम मेरु० ।

केवली तप

आ तप मा २० आंगील छेलो एक उपवास

हीय छ गुणणणो आदि अरिहत पद नीयेठे ।

शाश्वत जिन तप

आं तप मां १४ अनेपुन में छट्ट करवो, यदि
९ अने १४ सुदि ९ अने १४ उपवास करवो, साथी
या आदि अरिहत पदनी पेठे धार वार, गुणणो आ

१ श्री चंद्रानन सर्वज्ञाय नमः

२ श्री वारिषेण " "

३ श्री ऋषभानन सर्वज्ञाय नमः

४ श्री चतुर्मान " "

सिद्धि तप

आ आं तप मां आंठ उपवास सुधी एक एक
उपवास बधारता जेबुं, बंधी मीलीं न ३६ उपवास
होय छे, पारण वीयासणु करबुं, सिद्ध पदनी पेठे
खमासमणीं साथीयो का उसिंग ओठे आठ जा-
णवा, अने जेजे सिद्धनीं गुणो चाल ती होय तेते
गुणनी मालां २० गुणाधी, ।

मोक्ष करमेक तप

पहले दिवसे उपवास, बाजे दिवसे औधील, श्रीजे
दिवसे नीधी, चौथे दिवसे एकासणो, पांचमे दिवसे
पुरीमह, एक एक उली, एधी पांच उली करवा थी

आ तप २५ दिवसे पूरो होय छे गुणणो आदि सिद्ध पदनी पेटे जाणवु, ।

स्वर्ग करभक तप

आ तप मां लागट १२ एकासणा, नव नीवी, पाच आंपील, १ उपवास होय छे, आ तप २७ दिवस मां पूरो होय छे, गुणणो आदि सिद्ध पदनी पेटे, ।

रत्नगोहण तप

आ तप मां उली पाच होय छे, प्रथम दिवसे एकासणो, बीजे दिवसे नीवी, त्रीजे दिवसे आंपील चौथे दिवसे उपवास, आ प्रथम उली बीजा मा अनुक्रम में नीवी १ आपील २ उपवास ३ एकासणो ४. त्रीजी मा आंपील १ उपवास २ एकासणो ३ नीवी ४, चौथी मा उपवास १, एकासणो २, नीवी ३ आपील ४, पाचमी मा एकासणो १ नीवी २ आंपील ३ उपवास ४, आ तप २० दिवसे पूरो होय छे, आसो सुदि ५ थी आरभवु, अने त्रण घरसे पूरो होय छे, गुणणो आदि पच् परमोष्टि पद नी पेटे समझवु, ।

नव कमल तप

आ तप मां एकांतरिया आठ उपवास करवा
धी एक उली होय छे ऐवी नव उली एक वरस मां
करवी, उपवास ८१ होय छे, उजमणा मां जिनना
नव अगे नव कमल चढाववा, गुणणो विगेरे अरि
हत पदनी पठे,

सूरायण तप

आ तप निरतर वदि १ धी अमायश्या सुधी १५
आधील करवाधी पूरो होय छे गुणणो विगेरे अरिहत
पद पठे, ।

९६ जिन तप.

आ तप मां एक एक तीर्थकर आश्री एक एक
उपवास करवाधी ९६ उपवास थाय छे जे तीर्थकरनो
उपवास चालतो होय तेनो गुणणो साथिया विगेरे
धार पार नही आवतो होय, तो नमो अरिअताणनी
मालां करवधी ।

अतीत चोवीसी जिन गुणणो

१. श्री केवल ज्ञानि नाथाय नम
२. श्री निर्वाणि " "
३. श्री सागर " "

	नाथाय नमः	
४.	श्री महावश	
५	श्री विमल	॥ ॥
६.	श्री सर्वानुमूति	॥ ॥
७	श्री श्रीघर	॥ ॥
८	श्रीदत्त	॥ ॥
९	श्री दामोदर	॥ ॥
१०	श्री सुतेज	॥ ॥
११	श्री स्वामि	॥ ॥
१२	श्री मुनी सुव्रत	॥ ॥
१३.	श्री सुमति	॥ ॥
१४	श्री शिवगति	॥ ॥
१५	श्री घस्नाग	॥ ॥
१६.	श्री नर्माश्वर	॥ ॥
१७	श्री अनिल	॥ ॥
१८.	श्री यशोघर	॥ ॥
१९	श्री कृणार्थ	॥ ॥
२०	श्री जिनेश्वर	॥ ॥
२१	श्री शुद्धमति	॥ ॥
२२	श्री शिवकर	॥ ॥
२३	श्री स्वदन	॥ ॥
२४.	श्री समति	॥ ॥

वर्तमान चौबीसी जिन

२५	श्री ऋषभ देव	नाथाय नमः
२६	श्री अजित	" "
२७	श्री सभव	" "
२८	श्री अभिनदन	" "
२९	श्री सुमति	" "
३०	श्री पद्म प्रभ	" "
३१	श्री सुपार्श्व	" "
३२	श्री चद्रप्रभ	" "
३३	श्री सुविधि	" "
३४	श्री शीतल	" "
३५	श्री भेषांस	" "
३६	श्री वासु पूज्य	" "
३७	श्री विमल	" "
३८	श्री अनत	" "
३९	श्री घर्म	" "
४०	श्री शांति	" "
४१	श्री कुयु	" "
४२	श्री अर	" "
४३	श्री मन्दि	" "
४४	श्री मुनी सुप्रत	" "

४५.	श्री नमी	नाथाय नमः
४६	श्री नेमी	" "
४७	श्री पार्श्व	" "
४८.	श्री महावीर	" "
अनागत चोवीसी जिन		
४९	श्री पद्मनाभ	नाथाय नमः
५०.	श्री सूरदेव	" "
५१.	श्री सुपार्श्व	" "
५२	श्री स्वयं प्रभ	" "
५३	श्री सर्वानुभूति	" "
५४	श्री देवभ्रुत	" "
५५.	श्री उदय	" "
५६	श्री पेढाल	" "
५७	श्री पोद्विल	" "
५८	श्री शत कीर्ति	" "
५९	श्री सुव्रत	" "
६०	श्री अमम	" "
६१	श्री निष्कसाय	" "
६२	श्री निष्पुलाक	" "
६३	श्री निर्मम	" "
६४	श्री चित्रगुप्त	" "

६५	श्री समाधि	नाथाय नमः
६६	श्री सवर	" "
६८	श्री यशोधर	" "
६८	श्री विजय	" "
६९	श्री माहित्र	" "
७०	श्री देव	" "
७१	श्री घनत	" "
७२	श्री भडकर	" "

वीश विहरमान जिन

७३	श्री सीधमर	स्वामिने नमः
७४	श्री युग मधर	" "
७५	श्री बाऊ	" "
७६	श्री सुबाऊ	" "
७७	श्री सुजात	" "
७८	श्री स्वय, प्रभ	" "
७९	श्री ऋषभानन	" "
८०	श्री घनत वीर्य	" "
८१	श्री सूरप्रभ	" "
८२	श्री विशाल	" "
८३	श्री वज्रधर	" "
८४	श्री धद्रानन	" "

८६	श्री कृष्ण	५	१०
८७	श्री कृष्ण	५	१०
८८	श्री कृष्ण	५	१०
८९	श्री कृष्ण	५	१०
९०	श्री कृष्ण	५	१०
९१	श्री कृष्ण	५	१०
९२	श्री कृष्ण	५	१०

१. श्री कृष्ण

९३	श्री कृष्ण	५	१०
९४	श्री कृष्ण	५	१०
९५	श्री कृष्ण	५	१०
९६	श्री कृष्ण	५	१०

१.३३ विधि

श्री कृष्ण १३३ टिकन रूपधे जे जे मधि
 धर्मो नर धर्मो होय मेहनो अपवा मधो धर्म
 मानो गुणो साधियादि अरिहत पवनो जेण ।

- १ जमुदीप महा विदेह २९ अिध ३७
 १ श्री जयदेव सर्वज्ञान भाषा १०
 २ श्री कर्ण भद्र

३	श्री लक्ष्मी पति	सर्वज्ञाय नम	
४	श्री घनत हर्ष		११ ११
५	श्री गगाधर		११ ११
६	श्री विशालधर		११ ११
७	श्री प्रियकर		११ ११
८	श्री अमरदत्त		११ ११
९	श्री कृष्णनाथ		११ ११
१०	श्री गुणगुप्त		११ ११
११	श्री पद्म नाभ		११ ११
१२	श्री जलधर		११ ११
१३	श्री युगादीश		११ ११
१४	श्री चरदत्त		११ ११
१५	श्री चन्द्रकेतु		११ ११
१६	श्री महाकाय		११ ११
१७	श्री अमरकेतु		११ ११
१८	श्री अरण्य वास		११ ११
१९	श्री हरिहर		११ ११
२०	श्री रामेंद्र		११ ११
२१	श्री शांति देव		११ ११
२२	श्री घनत कृत		११ ११
२३	श्री गजेन्द्र		११ ११

१४	श्री सागरचंद्र	सर्वज्ञाय नम
१५	श्री लक्ष्मीचंद्र	" "
१६	श्री महेश्वर	" "
१७	श्री ऋषभदेव	" "
१८	श्री सौम्यकांति	" "
१९	श्री नेमि भद्र	" "
२०	श्री ध्याजित भद्र	" "
२१	श्री महीधर	" "
२२	श्री राजेश्वर	" "

घात की खड पूर महा विदेह-३२ जिन

३३	श्री वीर भद्र	सर्वज्ञाय नम
३४	श्री वज्रसेन	" "
३५	श्री नीलकण्ठ (नलीन कीर्ति)	सर्वज्ञाय नम
३६	श्री वज्रकश (मुजकशि)	" "
३७	श्री रुक्मिक	सर्वज्ञाय नमः
३८	श्री क्षेमकर	" "
३९	श्री मृगांक	" "
४०	श्री मुक्ति मुर्ति	" "
४१	श्री विमल चंद्र	" "
४२	श्री आगमिक	" "
४३	श्री पुष्पोत्तर (सुकृतनाथ)	सर्वज्ञाय नमः

४४	श्री घसुधानाथ सर्वज्ञाय नमः	
४५	श्री महिष्ठिर (महिष्ठ) नाथ	॥
४६	श्री षडभृत्	॥ ॥
४७	श्री वनदेव	॥ ॥
४८	श्री रेखाकित	॥ ॥
४९	श्री आमृत घाहन	॥ ॥
५०	श्री पूर्ण भद्र (चद्र)	॥ ॥
५१	श्री कल्पशाक	॥ ॥
५२	श्री नलीन (नील) दत्त	॥
५३	श्री विद्यापति	॥ ॥
५४	श्री सुपार्श्वनाथ	॥ ॥
५५	श्री भानुनाथ	॥ ॥
५६	श्री प्रभजन	॥ ॥
५७	श्री वशिष्ठ	॥ ॥
५८	श्री जलप्रभ	॥ ॥
५९	श्री महाभीम	॥ ॥
६०	श्री ऋषिपाल	॥ ॥
६१	श्री कुडगदत्त	॥ ॥
६२	श्री भूतानन्द	॥ ॥
६३	श्री महावीर	॥ ॥
६४	श्री तीर्थेश्वर	॥ ॥

घात की खडे पश्चिम महा विदेह ३ = ३३

६५	श्री धर्म दत्त	सर्वज्ञाय नमः	
६६	श्री भूमि पति	"	"
६७	श्री मेरुदत्त	"	"
६८	श्री सुमति मिश्र	"	"
६९	श्री श्री पेण	"	"
७०	श्री प्रमानद	"	"
७१	श्री पद्माकर	"	"
७२	श्री महो घोष	"	"
७३	श्री चद्र प्रम	"	"
७४	श्री भूमिपाल	"	"
७५	श्री सुमति पेण	"	"
७६	श्री अच्युत	"	"
७७	श्री तीर्थ भूति	"	"
७८	श्री ललिताग	"	"
७९	श्री अमरचद्र	"	"
८०	श्री ममाधिनाथ	"	"
८१	श्री मुनिर्षद्र	"	"
८२	श्री मर्षद्र	"	"
८३	श्री दशार्क	"	"
८४	श्री जगदीश्वर	"	"

८५	श्री देवेन्द्र	सर्वज्ञाय नमः
८६	श्री गुणनाथ	" "
८७	श्री उद्योत	" "
८८	श्री नारायण	" "
८९	श्री कापिल	" "
९०	श्री प्रभंकर	" "
९१	श्री जिन दीक्षित	" "
९२	श्री मकलनाथ	" "
९३	श्री शिलारनाथ	" "
९४	श्री वज्रघर	" "
९५	श्री सहस्रार (मे)	" "
९६	श्री अशोकद्रुत	" "
	५ पुष्करार्थे पूर्व महा विदेह ३२ जिन	
९७	श्री मेघ वाहन	सर्वज्ञाय नमः
९८	श्री जति रक्षक	" "
९९	श्री महापुरुष	" "
१००	श्री पाप हर	" "
१०१	श्री मृगांक	" "
१०२	श्री नरसिंह	" "
१०३	श्री जगत्पूज्य	" "
१०४	श्री सुमतिनाथ	" "

१०५	श्री महा महेन्द्र सर्वज्ञाय नमः	
१०६	श्री कमर मूर्ति	१-
१०७	श्री विशाल (कुमार) चन्द्र	३१
१०८	श्री धारि (वीर) पेय	-
१०९	श्री रमणनाथ	११
११०	श्री स्वयम्भू	११
१११	श्री अचल	१५
११२	श्री मकर केतु	११
११३	श्री सिद्धार्थ	११
११४	श्री मफलनाथ	११
११५	श्री विजयदेव	११
११६	श्री नरसिंह	११
११७	श्री सीतानन्द	११
११८	श्री वृद्धारक	११
११९	श्री चद्रा तप	११
१२०	श्री चित्र (चद्र) गुप्त	११
१२१	श्री हृदय	११
१२२	श्री महा यज्ञ	११
१२३	श्री उष्मांक	११
१२४	श्री प्रणुज	११
१२५	श्री	

१२६ श्री पुष्पकेतु सर्वज्ञाय नमः

१२७ श्री कामदेव " "

१२८ श्री समरकेतु " "

पुष्करार्थे पश्चिम विदेह ३२ जिन

१२९ श्री प्रसन्नचन्द्र सर्वज्ञाय नमः

१३० श्री महासेन " "

१३१ श्री वज्रनाभ " "

१३२ श्री सुवर्ण " "

१३३ श्री कुरु वृद्ध " "

१४४ श्री वज्रवीर्य " "

१३५ श्री विमलचन्द्र " "

१३६ श्री यशाधर " "

१३७ श्री महाबल " "

१३८ श्री वज्रसेन " "

१३९ श्री भीमनाथ " "

१४० श्री विमल बोध " "

१४१ श्री मेरु प्रभ " "

१४२ श्री भद्र गुप्त " "

१४३ श्री सुहृद् " "

१४४ श्री सुवत्स " "

१४५ श्री हरिचन्द्र " "

१४६	श्री प्रीतीधर	सर्वज्ञाय नमः
१४७	श्री अतिश्रेय	" "
१४८	श्री कनक केतु	" "
१४९	श्री आजित धीर	" "
१५०	श्री फल्गु मिश्र	" "
१५१	श्री ब्रह्म भूति	" "
१५२	श्री हितकर	" "
१५३	श्री वरुणदत्त	" "
१५४	श्री यशः कीर्ति	" "
१५५	श्री नागेन्द्र	" "
१५६	श्री महीधर	" "
१५७	श्री कृतवर्म	" "
१५८	श्री महेंद्र	" "
१५९	श्री वर्धमान	" "
१६०	श्री सुरेंद्रदत्त	" "

- जवूद्धीप भरतक्षेत्रे १ जिन
- १६१ श्री अजित नाथ सर्वज्ञाय नमः
जवूद्धीप पुरवत क्षेत्रे १ जिन
- १६२ श्री चद्रनाथ सर्वज्ञाय नमः
धात, की खड पूर्व भरते १ जिन
- १६३ श्री सिद्धांतनाथ सर्वज्ञाय नमः

- घात की खड पश्चिम भरते १ जिन
 १६४ श्री कर्पट नाथ सर्वज्ञाय नमः
 घात की खड पूर्व परवते १ जिन
 १६५ श्री जयनाथ सर्वज्ञाय नमः
 घात की खड पश्चिम परवते १ जिन
 १६६ श्री पुष्पदन्त नाथ सर्वज्ञाय नमः
 पुष्करार्धे पूर्व भरते १ जिन
 १६७ श्री प्रभास सर्वज्ञाय नमः
 पुष्करार्धे पश्चिम भरते १ जिन
 १६८ श्री प्रभाकर सर्वज्ञाय नमः
 पुष्करार्धे पूर्व परवते १ जिन
 १६९ श्री आदिनाथ सर्वज्ञाय नमः
 पुष्करार्धे पश्चिम परवते
 १७० श्री धलमद्र सर्वज्ञाय नमः

देवल इंडा तपः

आ तपसां येषणापांच, एकसणा ७ नीवी तथ
 आंथील पांच, एक उपवास होय छे २७ दिवसमां
 आ तप पूरो थाय छे शुणणी नमो अरिहताण सा-
 थियादि धार धार ।

अष्टकर्मोत्तर प्रकृति तपःशास्त्रम्
 आठ कर्मनी उत्तर प्रकृति १५८ होवाधी आ
 तप १५८ उपवास करवाधी पुरो धाये छे तेमा ज्ञानो
 धरणी कर्मना पांच, दर्शनावरणी कर्मना नइ हेदनी
 कर्मना धे मोहनी कर्मना २८ आयुःकर्मना ४ नाम
 कर्मना १०३ गोत्र कर्मना २ अंतराय कर्मना पांच
 उपवास करवा, पण ते एकांतरिया करवा, नमो-
 सिद्धाणनो गुणणो करवो, साधिया विगो सिद्ध-
 पदनी जेम.

पाच पञ्चस्वाण

प्रथमे दिवसे उपवास बीजे दिवसे वेपासणो
 दोजे दिवसे एकासणो चोये दिवसे तीजे पांचमे
 दिवसे आंबाल आ एक ओली पाए छे ऐवी पांच
 ओली करवाधी पचीस दिवसोमा आ तप पुरो धाय
 छे नमोसिद्धाण गुणणो साधिया विगो आठ आठ.

पञ्चमहाव्रत तपः

आ तपमां एकांतरिया पांच उपवास करवा
 नमो होणसब्बसाहुणनो गुणणो साधिया
 मताधीम तपस्या पुरो धाय विद शक्ति
 उजमणो करवा

आप्तोष्टादशदोष शून्य जिनपश्चार्त्नसुदेवो मम ।
 त्यक्तारभ परिग्रहः सुधिहितो धार्चयमः सद्गुरु ॥
 घम, केवलिभाषितो वरदयः कल्याणहेतु पुनरर्ह-
 त्मिद्वसु सुसाधुधर्मशरण भूयात्रिशुद्ध्या भव ॥१॥

अर्थ — यथार्थ यक्ता अद्वार १८ दोषरहित
 जिनेश्वर एवा अरिहत मारा सुदेव छे, आरभं परि-
 ग्रह रहित सूत्रने अनुसार क्रिया करना एवा साधु
 मारा सुगुरु छे, श्रेष्ठ दयावालो कल्याणनो करनारो
 एवो केवलि भाषित मारे सुधर्म छे, ज्या सुधी आ-
 समारमां रहु, त्यां सुधी मारे शुद्ध मन वचन काया
 धी अरिहत मिद्वे साधु अने केवलि भाषित धर्मनु-
 शरणु थाओ ॥१॥

भूतानागतवर्त्तमानसमये यद्दुःप्रयुक्तैर्मनो-
 वाक्काये कृतकारितानुमतिभिर्देवादितत्वत्रये ॥
 सद्ये प्राणिपुत्राप्तवाच्यनुचित हिंसादि पापास्पद ।
 मोहाधेन यथा कृत तदधुनागर्हामि निदाम्यहम् ॥२॥

अर्थ — अतीत भविष्य अने वर्त्तमान कालमां
 अशुद्ध मन वचन अने कायाधी पोते करवो बीजा
 पापेधी करावधो करता होय तेनी अनुमोदना कर-
 तत्त्व ने विषे चतुर्विध सद्ये विषे

प्राणियोने विषे आप्त वचनने विषे मोहधी अंष
 यं मे जे अनुचित करुं होइ, हिंसादि १८ पापस्थान
 कीषा [सेव्या-] हांय तेने हु इमणा सुकृतासि गहु
 हुं, आत्मशास्त्रे निदु छु, ॥ २ ॥

अर्हत्सिद्ध गणद्रिपाठकमुनी आर्द्राऽपति आश्रक-
 पत्त्वादिकभावतद्गतगुणान् मार्गानुमारीन् गुणान्
 श्री अर्हद्वचनानुसारि सुकृतानुष्ठान सदृशं-
 ज्ञानादीननुमोदयामि सुहितैर्योगैः प्रशसास्यहम् ॥॥

अर्थः—अरिहतोना अरिहतपणाना, सिद्धांता
 सिद्धपणाना, आचार्योना आचार्यपणाना, उपाशा-
 यपणाना साधुओना साधुपणाना, आश्रकाना
 आश्रकपणाना, अचिरति आश्रकाना समधिद
 णाना, भावोने तथा उपरोक्त अरिपादिना
 गुणोने, तथा मार्गानुमारी गुणोने तथा श्री अरि-
 हतेना वचन अनुमार सुकृतानुष्ठान (क्रिया)
 ने, सम्यग्दर्शन ज्ञान आरिपादिना अर्हत्सिद्ध
 दना करहु अने, प्रशसा करहु अने, अर्हत्सिद्ध
 ससारेऽप्रमया स्वकर्मवशात् प्रशसास्यहम् ॥॥
 क्षाम्यते क्षमिताः
 वर नास्ति य
 यद्दुश्चित्त

अर्थ:—आ मसारने विषे पोतपोताना कर्मने विषे घश (आधीन) थणला ४ गतिमा भमता सर्व जीवोने हू खमानु छु ते, पण स्वम्या छता मारा उपर क्षमा करो, काडनी माथ तारा वेर भाव नथी, सर्व जीवोने विषे सुखन देया घाली मारी मिघ्रता छे बे मन थी कुष्ट चिंतवेलु, घचन थी भापेलु, अने कायाथी करेलु, ते दुष्कृत (पाप) मिध्या थाओ (४)

तथायास्पानि मे कदा दिनमह यत्पालयिष्येऽमलं ।
चारित्र जिन शासन गतमुनर्माणं चरिष्याम्यहम् ॥
मुक्तो जन्मजरादिदुःखःनिवहात्सवेगनिर्वेदताप्तोक्ता-
स्तिकपदयालुनाप्रशमता घर्ता भविष्याम्यहम् ।५।

अर्थ—ते दिवस मारो क्यारे आवशे के जे दिवसे निमल चारित्र अने जिन आज्ञा ने पालीम, पूर्वमुनिओना मार्गमां चालीश, जन्म जरा मृत्यु आदि दुःखना समुदायथी मुक्त थइम, सवेग (संसारिक सुखने कु खरूप मानयु ते) निर्वेदता (संसार ने केदरूप मानयु ते) आप्त [जिनेश्वर] कहेल घचन उपर अद्रारूप ते अस्तिकता दयालुना प्रशमता आदि गुणोने धारण करनारो थइश (५)

सकल तीर्थ नमस्कार

ईश्वरार्थेषु ये केषि , सूतानागत साप्रत ।
 बहंतो भगवतस्नान , सर्वान्प्रदे जिनेश्वरान् ॥ १ ॥
 पत्र महाविदेहेषु , विचरतो जिनश्वरा ।
 मीमांसादय सति , ये तान्प्रदे निरतरम् ॥ २ ॥
 सिद्धा सिद्धिस्थिता ये च ये च सिद्ध्यन्ति साप्रत ।
 मेत्सपति ये च तान् सर्वान् , सिद्धान्वदे निरतरम् ॥ ३ ॥
 सार्द्धद्वीप द्वेषात् स्या , ये साधयति साधव ।
 ज्ञानादिभिः शिवाध्वान् , वदेहस्तान्मुद्राऽऽपिलान् ॥ ४ ॥
 मर्गे मर्त्ये च पाताले , यानि चैत्यानि चार्हता ।
 तानि सर्वाणि वदेऽह , शाश्वताऽऽशाश्वतानि च ॥ ५ ॥
 श्रीशुभ्रजय मम्मैत , तारगाष्टापदारुंदान ।
 उज्जयतारि तिर्यानि , वदे सर्वाणि भागतः ॥ ६ ॥
 जिन कन्पाण कस्याने , यानि तिर्यानि साप्रत ।
 सत्यान्यपि तीर्थानि , तानि वद निरतरम् ॥ ७ ॥



